बच्चों का मधुर मासिक

चकमक

www.kissekahani.com

आभार : डा. देशदीपक

विनामूल्य

इतना अच्छा कि,
इस का यह मूल्य भी हो सकता है !

परन्तु फिर भी इस की असली कीमत रु. ५० से कम है।

लीजिये, एक फ़र्स्ट क्लास और अति उपयोगी कैमरा प्रस्तुत है। यह पहिले ही दिन से आपको सफल फ़ोटोग्राफ़र बना देगा। आप को केवल इच्छित दृश्य की ओर इस का मुख कर के टिच कर देना है – न किसी हिसाब किताब की ज़रूरत और न ही कोई खिटपिट। और '१२०' साइज़ की रोलफ़िल्म भर कर ६×६ सेंटिमीटर जितनी बड़ी १२ फ़ोटो खेंच सकते हैं। आप को केवल रु. ४६.५० (स्थानीय कर अतिरिक्त) देने होंगे। संतोषजनक उपयोगिता के लिए आगफ़ा क्लिक III खरीदिये। सभी अच्छी फ़ोटो की दुकानों पर मिलता है।

भारत में निर्माता: दि न्यू इंडस्ट्रीज लिमिटेड, बड़ौदा

एकमेव वितरक:

आगफ़ा-गेवर्ट इण्डिया लिमिटेड

बम्बई · नई दिल्ली · कलकत्ता · मद्रास

Agfa®

क्लिक III

कम ख़र्च में
१२-फ़ोटो का
विश्वविख्यात कैमरा

CMAI-85 HIN

मुखपृष्ठका चित्र—

होलीकी टोली : चंद्रकांता १

मजेदार कहानियां—

आलू-कचौरी : हरिश्चंद्र सिंह १०
एक छटांक कम : वीणा वल्लभ १३
चतुर कुतुर और पंजासिंह : शांति मेहरोत्रा २०
भंगड़ी चाचा : सरस्वतीकुमार 'दीपक' २२
महा??? सम्मेलन : दीप ३०
महंगा बैल : हमीदुल्ला खां ४९
नारदजीपर पिचकारी : मनोहर वर्मा ५०
बोलने वाला बुत : रेखा मिश्र ६२
दो शहसवार : प्रकाश ६४

चटपटी कविताएं—

होली है, भई, हर हर गंगे : मंगलराम मिश्र ५
टोपी और जूता : सीताराम गुप्त १२
होलीकी ठिठोली : यादराम 'रसेन्द्र' ३४
एक बालककी अभिलाषा : बेढब बनारसी ३५
"यह नाकेवाला हलवाई : कल्याणकुमार जैन 'शशि' ४३
लो चंगोंपर थाप पड़ी. . . : तारादत्त 'निर्विरोध' ४४
कुंदनकी कुंडलियां : कुंदन ५३
रंग और ढंग : रामअकबाल मिश्र ५४
सब 'पराग'पर लपके : उषा गुप्त ७६
कौन मनकमल : रवीन्द्र शलभ' ७६
चित्त गिरे चौखाने : पंकज गोस्वामी ७७
"मूंछोंको झुका लो : वीरेंद्र काश्यप ७७

मंच एकांकी—

हिरण्यकश्यप मर्डर केस : श्रीकृष्ण १४

मनोहर कार्टून-कथाएं—

छोटू और लंबू : शेहाव २६
हप्पूका हड़दंग : पांडे ३६

अन्य रोचक सामग्री—

पिचकारीके पद (चित्रमय) : ८
होली खेलनेके बाद (फोटो-कथा) : अजीतसिंह १८
ठोस कार्टून : सत्यस्वरूप दत्त २५
होली छाप (कार्टून) : सुरेश सावंत ३३
संपादक दादाके नाम... (पत्र) : टी. एन. मिश्र ३८
ब्रजकी होली (रंगीन चित्र) : सुशीला रजनी पटेल ४०
चुनाव भी लड़ेंगे (पत्र) : मनमोहन सरल ४६
मनोरंजक प्रश्नोत्तर : शरत् ६५
पूजाका मौसम (कार्टून) : सुरेश सावंत ७५

स्थायी स्तंभ—

कुछ अटपटे कुछ चटपटे : संपादक ६
छोटी छोटी बातें : सिम्स १७
कहो कैसी रही : टण्डन २८
जोनेकी कला—६ : अलकारानी जैन ५६
बच्चोंकी नई पुस्तकें : लक्ष्मीचंद्र गुप्त ६१
खिलौनोंका डिब्बा : अरुणकुमार ६६
रंग भरी प्रतियोगिता नं. ५९ : 'पराग' कला विभाग ७१

www.kissekahani.com

पराग

पिचकारी विशेषांक

फोटो : नरेश कुंडी

मार्च १९६७
१०९ वां अंक

वार्षिक शुल्क:
स्थानीय रु. ६·००
डाक से रु. ६·२५

● छाया : चंद्रकांता

होली है, भई, हर हर गंगे

आन जुटी होली की टोली,
आपस में कर रही ठिठोली,
सभी सूरतें बनीं निराली—
नीली, लाल, गुलाबी, काली!

सीधे भी लग रहे लफंगे!
होली है, भई, हर हर गंगे!

कोई मचा रहा है हुल्लड़,
कोई फोड़ रहा है कुल्हड़,
कोई लगता महा चुकंदर,
कोई लगता शहरी बंदर;

काम सभी इनके बेढंगे!
होली है, भई, हर हर गंगे!

मुन्नी खड़ी हुई ज्यों गुड़िया,
पर यह है आफत की पुड़िया;
सोच रही—कब मौका पाऊं,
डालूं रंग और भग जाऊं;

कर दूं सबको रंग-बिरंगे!
होली है, भई, हर हर गंगे!

—मंगलराम मिश्र

फुटकर अटपटे चटपटे

मनीकुमार सहाय, हजारीबाग :

परिश्रमका फल मीठा होता है, परंतु परिश्रम करनेसे तो पसीना आता है, जो नमकीन होता है!

तो नमकीन बेचो, मिठाई खरीदो!

श्यामलाल गौड़, बम्बई–६८ :

जीतनेपर भी आदमीके गलेमें 'हार' क्यों डाला जाता है?

व्यव-हारके नाते!

दिनेशकुमार पुखार, भिलाईनगर :

ऐसा कौनसा काम है जो बिना किए हो जाता है?

फेल होना!

रामजी मंडल, गार्डेन (हावड़ा):

बातकी मार और लातकी मारमें क्या अंतर है?

यह बात तो, भई, जो 'बत-लाता' हो उसीसे पूछो!

मुनेन्द्रकुमार जैन, दुर्ग :

आदमी बंदरसे आदमी हुआ, अब आदमीसे क्या बन रहा है?

रॉबट!

मनमोहन सिंह, बहराइच :

जब मैं अधिक बोलता हूं, तो मम्मी कहती हैं—'बहुत बक-बक करता है'; जब चुप रहता हूं, तो पिताजी कहते हैं—'गूंगा हो गया है', और जब न अधिक बोलता हूं न अधिक चुप रहता हूं, तो दोस्त कहते हैं—'भावुक हो गया है'। बताइए मैं क्या करूं?

अब हरेकके सामने उल्टा आचरण करके देखो!

प्रदीपलाल, कानपुर :

नेहरूजी बच्चोंके मुखसे 'नेहरू चाचा' सुनकर खुश होते थे; इसी नाते अगर सब बच्चे इन्दिरा गांधीको 'दीदी, दीदी' पुकारने लगें, तो वह खुश होंगी या नहीं?

खुश होनेके अलावा तुम लोगोंके हल्लेसे बचनेका उनके पास उपाय ही क्या है!

पवनकुमार अग्रवाल, बस्ती :

हमारी मांकी भाषा पंजाबी, पिताकी भाषा मारवाड़ी, तो पंजाबकी तरह इसका विभाजन किस प्रकार होगा?

तुम्हारे अलावा एक और 'चंडीगढ़' बनाकर!

राजरत्नसिंह वर्मा, मुजफ्फरनगर :

वह कौनसी जगह है जहां दीपकको रखनेपर सब देख सकते हैं, परंतु एक नहीं देख सकता?

तुम्हारा सिर!

सतीशप्रसाद, भागलपुर :

मेरे छोटे भाईका जन्म-दिवस २९ फरवरी है, इसलिए उसका जन्म-दिवस मनानेमें बड़ी कठिनाई होती है—आप ही बताएं मैं क्या करूं?

उसका जन्म-दिन शक संवतके अनुसार मनाना शुरू कर दो!

पप्पू, कटनी :

मैं पूले तीन छालका हो गया हूं, फिल भी मैं तुतलाता हूं। छब कोई मुदको तिलाते हैं। कोई उपाय बताइए।

उनते कओ, "तिलाओ, थूब तिलाओ, अम तिलते ई नई!"

रमेशरंजन त्रिपाठी, कसरावद (खरगोन) :

वह कौनसा काम है जिसे करते मनुष्य कभी नहीं थकता?

प्रश्न पूछना!

गणेशकुमार हिंगड़, उदयपुर :

आपके हंसने और मेरे हंसनेमें क्या अंतर है?

जगह जगहका!

पवनकुमार सरावगी, सीतामढ़ी :

अगर कोई मनुष्य मूर्ख होता है, तो हम उसे गधेके नामसे संबोधित करते हैं, परंतु अगर कोई गधा ही मूर्ख हो, तो हम उसे किस नामसे संबोधित करेंगे?

सवाल तो यह है कि जब कोई गधा अकलमंद हो, तो उसे क्या कह कर संबोधित करेंगे!

एस. विश्वनाथ, वाराणसी–१ :

भगवान कृष्णका रंग नीला था, लेकिन लोगने 'हरे कृष्ण' कहते हैं—ऐसा क्यों?

नीले रंगके साथ उनका पीताम्बर मिल जानेके कारण!

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं उनके नामके पहले * का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा मत भेजो। इस स्तंभमें पहेलियोंके उत्तर नहीं दिए जाएंगे। पता याद कर लो : संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१

रामशिरोमणि गुप्ता, सीधी :

कहा जाता है कि बच्चा मनुष्यका बाप है, लेकिन मैंने अपने पिताजीको 'बेटा' कहा, तो उन्होंने मेरी मरम्मत कर दी, आखिर क्यों?

जिससे तुम्हें सही व्यक्ति और सही अवसर देखकर ही कटु सत्य कहनेकी आदत पड़े!

राजीवकुमार, दल्ली राजहरा :

रोटी दिखानेसे कुत्तेकी पूंछ क्यों हिलती है?

क्योंकि उसके पास क्रिकेटका बल्ला नहीं होता!

नरेन्द्रकुमार शर्मा, कोटा :

कुछ लोग कहते हैं कि कपड़े रखे-रखे सिकुड़ जाते हैं, और कुछ कहते हैं कि कपड़े पहनते-पहनते सिकुड़ जाते हैं, आपकी क्या राय है?

हमारी रायमें तो कपड़ पहननेवालेके बढ़ते हुए कदसे डरकर सिकुड़ जाते हैं!

राममोहन गोयल, शिकोहाबाद :

आकाश बिना खंभोंके कैसे ठहरा है?

तुम्हारे सिरपर!

के. जी. चंद्रशेखर, जमशेदपुर–९ :

जब मोर्चेपर कोई लड़ता है, तो उसे जवान कहते हैं; यदि कोई सड़कपर लड़े, तो?

बालक!

कुमारी मालती, चांदला :

आमको फलोंका राजा क्यों कहते हैं?

क्योंकि फलोंमें अभी प्रजातंत्रकी स्थापना नहीं हुई!

अजयप्रतापसिंह, देवरिया :

यदि गधे कानून बनाने लगें, तो क्या होगा?

हर चौराहेपर संगीतकी महफिलें जमा करेंगी!

विश्वास हरी तानवड़े, बम्बई–३४ :

सफेद झूठ किसे कहते हैं?

जिसमें जरा भी सच्चाईका 'मैल' न हो!

हरिनाथ कपूर, बरेली :

ऐसी कौनसी चीज है जिसपर सूरज और गौर चांदकी नजर नहीं पड़ती?

कविकी कल्पना! — जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि!

अखिलचन्द्र शर्मा, मिर्जापुर :

जब विज्ञान सभी चीजें 'आटोमैटिक' कर देगा, तो मनुष्य क्या करेगा?

तब तक वह स्वयं ही स्वयंचालित नहीं रह पाएगा!

विजय सक्सेना, भोपाल :

अपने लिए चंनकी बंसी कहांसे खरीदूं?

बिना परिश्रमके बेसुरा राग अलापने वालोंको यह कहीं नहीं मिलती!

बलराज लालवानी, कांकेर :

मनुष्य चौबीस घंटोंमें ज्यादासे ज्यादा कितनी बार सांस ले सकता है?

जल्दीसे जल्दी सांस लेकर देखो कितना समय एक सांसमें लगा, बस, उससे चौबीस घंटोंको भाग दे दो!

विनोदवीर सिंह, फैजाबाद :

अक्सर पिताजी कहते हैं कि इतना बड़ा हो गया, दो पैसे भर अकल नहीं आई। वह दो पैसे भर अकल कौनसी है?

अफसोस तो यही है कि यह समझनेके लिए भी इतनी ही अकलकी जरूरत है!

ओमप्रकाश माहेश्वरी, कानपुर :

गप्प हांकने और बैल हांकनेमें क्या अंतर है?

वही जो किसी राजनीतिक पार्टीके घोषणा-पत्र और चुनाव-चिन्हमें होता है!

परवीन बानो, रांची :

कसम क्या कोई खानेकी चीज है कि लोग कहते हैं, 'कसम खाओ'?

नहीं, बल्कि हम तो यही कहते हैं कि कसम खानेकी चीज नहीं, इसलिए मत खाओ!

*** अशोक सेखरन, कक्षा नवम्-अ, नटवर बहु-उद्देशीय उच्चतर माध्यमिक शाला, रायगढ़ (म. प्र.) :**

इंसानको कोल्हू क्यों कहा जाता है?

कभी 'बैल' की आंखोंपर पट्टी चढ़ी देखकर!

*** राजेन्द्र राय, द्वारा सेवतीबाई, रिटायर्ड टीचर, कुम्हारपारा, जगदलपुर, जिला बस्तर (म. प्र.) :**

अक्सर लोग किस्मतको क्यों कोसते हैं?

क्योंकि अक्सर इसमें जो कुछ लिखा आता है वह इम्तहानके पर्चेकी तरह 'आउट आफ कोर्स' होता है!

चित्रमय पिचकारी के पर्व

↑ सूरदास यह कारी कमली,
चढ़्यो न दूजो रंग!
—सूरदास
(फोटो : एस. पी. सोनी)

↑ यह गीत पहाड़ों
पर चढ़ जाता है,
यह गीत बढ़ाए से
बढ़ जाता है!
—भवानीप्रसाद मिश्र
(फोटो : सूरज एन. शर्मा)

←
किसी का हमने छीना नहीं,
प्रकृति का रहा पालना यहाँ,
हमारी जन्मभूमि थी यही,
कहीं से हम आए थे नहीं!
—स्व. जयशंकर प्रसाद
(फोटो : सूरज एन. शर्मा)

↑ प्रबल तर्क थे दोनों के
हम क्या करते?
—भारतभूषण अग्रवाल

(फोटो : डी. डी. मल्होत्रा)

←
सखि, वे मुझसे कहकर जाते!
—स्व. मैथिलीशरण गुप्त
(फोटो : कैलाश सिन्हा)

→
उखड़े उखड़े आज दिख रहे
हैं तुमको जो, यार, हम,
यह न समझ लेना जीवन का
दांव गए हैं हार हम ।
—बच्चन
(फोटो : चंद्रकांत खाटा)

पीठ पर घर बोझ अपनी राह नापूं,
या किसी कलिकुंज में रम गीत गाऊं?
—भगवतीचरण वर्मा

(फोटो : सूरज एन. शर्मा)

↓

कहानी

आलू-कचौरी

होलीका दिन था। सब लोग एक-दूसरेपर रंग डाल रहे थे। चारों ओर हंसी-खुशीके कहकहे उड़ रहे थे। तिलकू मुट्ठीमें अबीर छिपाए अपनी पत्नी भानुमतीसे हंसहंसकर कह रहे थे—"तुम्हें कचौरी बहुत अच्छी लगती हैं, हफ्तेमें तीन-चार बार बनाती हो; क्यों न तुम्हारा नाम कचौरी रख दिया जाए?" यह कहते कहते उन्होंने उसके गालोंपर अबीर मल दिया।

भानुमतीने दबे हुए स्वरमें मुसकराते हुए कहा, "आप मेरे स्वामी हैं। आपको जो नाम अच्छा लगे, रख सकते हैं। भला मुझे क्या ऐतराज हो सकता है!"

तिलकूने उसके सिरपर हाथ फेरते हुए कहा, "तो ठीक है, आजसे मैं तुम्हें कचौरी कहकर पुकारा करूंगा!"

भानुमती अपने पतिको प्रसन्न देखकर बोली, "आपको आलूकी तरकारी बहुत अच्छी लगती है, रोज बनानेका आग्रह करते हैं; फिर आपका नाम भी क्यों न आलू रख दिया जाए?" इतना कहकर उसने अपनी मुट्ठी खोली और पतिके मुंहको लाल कर दिया।

तिलकूने हंसते हुए कहा, "मुझे भी किसी प्रकारकी आपत्ति नहीं है। तुम मुझे इस नए नामसे पुकार सकती हो।"

बस पति-पत्नी एक-दूसरेको नए नामोंसे पुकारने लगे। दूसरे लोग उन्हें इस प्रकार एक-दूसरेको पुकारते हुए सुनकर हंसते हंसते लोट-पोट हो जाते। यही नहीं, पति-पत्नीने आपसमें सलाह करके अपने बैलोंका नाम भी 'अतिथि' रख दिया।

आलू बहुत खुश था। वह फूला न समाता था। झट बाल्टी-में रंग भरकर और पिचकारी लेकर फगुआ गाता हुआ गांवके पूरबवाले मुहल्लेकी ओर चल पड़ा। कचौरी घरमें तरह तरहके पकवान, मिठाइयां और स्वादिष्ट भोजन बनाने लगी।

आलू बड़ी मस्तीसे जा रहा था। बीच रास्तेमें उसके मामा मिल गए। वह भांगके नशेमें चूर थे। उन्होंने अपने भांजेको खड़े खड़े उठा लिया और उसका रंग छीनकर उसीपर डाल दिया।

आलूने धीरजसे काम लिया। झट मामाके पैर छुए, फिर बड़े प्रेमसे बोला, "आप घरपर चलें। कचौरी है, आपका

www.kissokahani.com

आतिथ्य-सत्कार करेगी।"

मामा अपनी राहपर चल पड़े। आलूने पीछेसे सहसा रंग भरकर पिचकारी मारी और उन्हें रंगसे सराबोर कर दिया। वह उसे प्रेमसे गाली देते हुए आलूके घरकी ओर बढ़ चले।

रास्ता चलते हुए वह सोच रहे थे—कचौरी घरमें है, इसका क्या मतलब हुआ? इसका मतलब हुआ, उनका मन कहता, घरपर पहुंचते ही गरमा-गरम कचौरियां खानेको मिलेंगी। किंतु दूसरे ही क्षण मन संशयसे भर उठता।

इस तरह सोचते-विचारते वह आलूके दरवाजेपर पहुंचे। कचौरी बाहर खड़ी थी। उसने

—हरिश्चन्द्र सिंह

मामाके चरण छूकर झट चारपाईपर बिस्तर लगा दिया। वह आरामसे बिस्तरपर लेट गए। दोनोंने एक दूसरेकी राजी-खुशी पूछी। फिर कचौरी मामाके लिए शरबत लाने चली गई।

मामाने हाथ-मुंह धोकर शरबत पी लिया। कचौरीने चिलम भर दी। चिलम पीते पीते उनकी आंखें झपने लगीं। वह चिलम एक तरफ रखकर सो गए। कचौरी घरके कामकाजमें लग गई।

थोड़ी देर बाद भोजन तैयार हो गया। उसने मामाको जगाकर स्नान करनेके लिए कहा।

मामाने खूब तेल-साबुन लगाकर स्नान किया। तब कचौरीने आकर कहा, "खाना तैयार है। आलू अभी बाहरसे नहीं आए हैं। उनका इंतजार करेंगे या खाने बैठेंगे?"

मामाने सोचा—'केवल कचौरी कैसे खाऊंगा? इस तरह तो पेट भी नहीं भर सकता। आलू आ जाएं, उसकी मसालेदार तरकारी बन जाए, तो भोजन करना ठीक होगा।'

ऐसा निश्चय कर उन्होंने हंसते हुए कहा, "अभी अभी तो शरबत पिया है। भूख बिलकुल नहीं है। आलू आ जाएं, तो भोजन करूं। इतने में एक नींद और ले लेता हूं। तब तक मुझे थोड़ी भूख भी लग आएगी।"

कचौरीने समझा, मामा उसके पतिके आनेपर ही भोजन करनेको कहते हैं। उसने बात मान ली और समयपर खा-पीकर मजेसे लंबी तानकर सो गई।

उधर मामा बिस्तरपर लेटे लेटे सोच रहे थे कि आज त्योहारके दिन बहूने घरमें आलूकी तरकारी क्यों नहीं बनाई? क्या घरमें आलू नहीं हैं या तेल-मसाला नहीं है? क्या यह आलूकी बढ़िया तरकारी बनाना नहीं जानती?

शायद नहीं जानती। हां, पिछली बार ही तो मैंने कहा था कि तरकारीमें कुछ स्वाद नहीं मिल रहा है। क्या इसी लिए हलवाईके यहांसे बहुत अच्छी आलूकी तरकारी बनवाकर मंगवा रही है? इस तरह वह बहुत देर तक सोचते रहे। अंतमें चादर ओढ़कर सोने लगे। पर नींद कैसे आती? पेट तो भूखके मारे कुड़-कुड़ बोल रहा था। वह करवट बदलते रहे और आलूओंका इंतजार करते रहे।

मामाको आलूओंकी प्रतीक्षा करते करते शाम हो गई। वह कभी दरवाजेकी ओर आशा-भरी दृष्टिसे ताकते और कभी सामने। कचौरी भी फिर उन्हें बुलानेके लिए न आई और न कोई संदेश ही भेजा। इन्होंने अब समझ लिया कि दालमें जरूर काला है।

सूरज डूब रहा था। पर अब भी आलूका कहीं पता नहीं था। दरवाजेके अंदरसे ही कचौरी झांककर चली जाती थी। किंतु वह एक बार भी न जाने क्यों बाहर न आई

टोपी और जूता

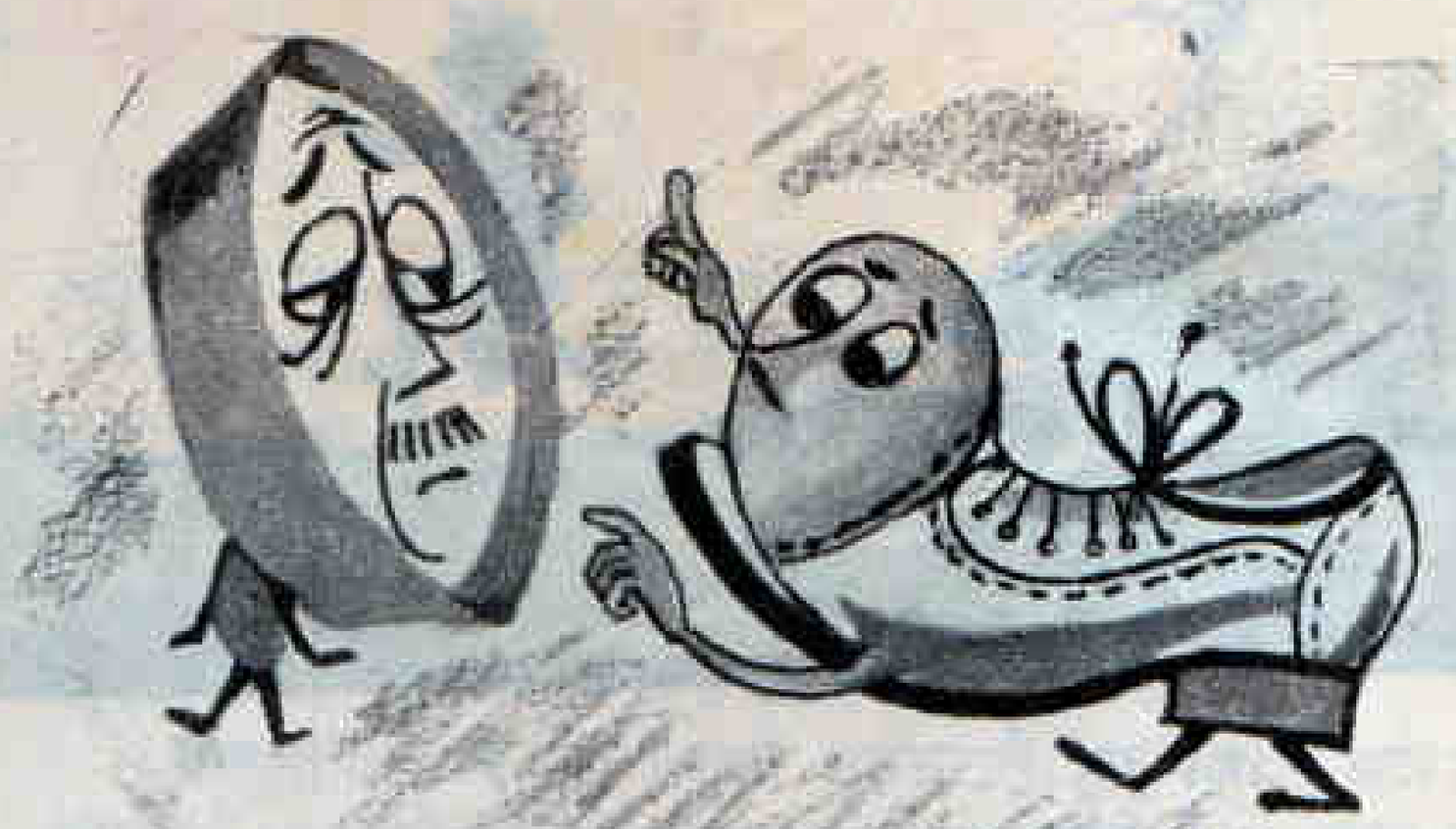

www.kissekahani.com

जूते की दुर्दशा देखकर टोपी बोली हंसकर,
"चैन न लेने देता जूते को किस्मत का चक्कर!

पथरीली सड़कें हों चाहे पगडंडिया कंटीली,
कीचड़-कचरा, मिट्टी-पानी, गलियां गंदी-गीली,

सब पर चलता है बेचारा घिसता, ठोकर खाता
यह अनाथ है कभी आदमी तरस न इसपर खाता,

और इधर मैं ऊंची सिर पर बैठी मुसकाती हूं,
घर-बाहर हर ओर सभी से मैं आदर पाती हूं।

पगड़ी मेरी बहन, ठाट उसके भी बड़े निराले,
चलता है आदमी शान से सिर पर उसे संभाले!"

इस प्रकार टोपी के मन में गर्व उभर कुछ आया,
तभी किसी ने पीछे से थप्पड़ भरपूर जमाया!

टोपी गिरी धूलमें उस पर जूता चढ़ा हुआ था,
ऋण वसूल करने को आगे ठाकुर खड़ा हुआ था।

बोला, "बहुत दिनों से देता आया है तू झांसा,
आज बीच बाजार दिखाऊंगा मैं तुझे तमाशा!"

नंगे सिर तब हाथ जोड़कर बोला टोपीवाला,
"पाई पाई दूंगा, निकला हुआ अभी दीवाला!"

और उधर टोपी की आंखों में भी पानी आया,
गर्व न करना ऊंचेपन का जूते ने समझाया।

—सीताराम गुप्त—

आखिर अंधेरा होनेपर आलू अपने 'अतिथि' (बैलों) के साथ वापस आया। आते ही कचौरी-को बुलाकर कहा, "अतिथिको जंजीरसे बांध दो। मैं नहाकर आता हूं।"

आलूकी बातें सुनते ही मामा भौंचक्के होकर ताकने लगे, उनका हंसी मुंह एकदम लटक गया। वह अपनेको कोसते हुए मनमें कहने लगे—'आज त्योहारके दिन भांजेके घर आकर बड़ी भारी गल्ती की। मेरा जैसा पागल और अभागा आदमी दुनियामें कोई न होगा। इतनी रात चली गई, अभी तक इन्होंने मुझे भोजन तक नहीं कराया। बस एक बार शरबत पिला दिया, फिर पानीके लिए भी नहीं पूछा। ओह! . . . और अब मुझे लोहेकी जंजीरसे बांधने जा रहे हैं। इतना अत्याचार! राम-राम! सचमुचमें यह कलियुग है। यहांसे किसी भी प्रकारसे निकल भागना चाहिए अन्यथा जानकी खैर नहीं।'

आलू नहानेके लिए कुएं पर गया था और कचौरी जंजीर लाने भीतर गई थी। मामाने भागनेका यह अच्छा मौका देखा। झट हाथमें अपना डंडा लेकर अंधेरेमें ऐसे भागे, जैसे गधे-के सिरसे सींग!

जब आलू-कचौरी वापस आए, तो उन्हें अपने अतिथि मामा दिखाई न दिए। उन्होंने बहुत तलाश की, पर वह मिलते कहांसे? वह तो भूतकी तरह अपने घर भागे जा रहे थे। ●

लघु हास्य कथा

एक छटांक कम

— वीणा वल्लभ

राजापुर कोई बड़ा नगर नहीं है कि यहां मकानोंकी तंगी हो। फिर भी दूध-दहीका पेशा करने वाले गुजरोंका नगरके बाहर एक अलग ही मोहल्ला है, जिसका नाम गुजरियाबास है। यहां ये अपना पशु-पालन सुविधा-पूर्वक कर सकते हैं।

गुजरियाबासमें रामी नामकी एक विधवा गुजरी भी रहती थी। उसके पास एक भैंस और दो गायें थीं। दूध-दही और घी बेचकर वह अपना और अपने बच्चेका पेट पाल रही थी। परंतु वह बड़ी ईमानदार थी। कभी उसने दूधमें पानी नहीं मिलाया था और न उसकी छाछ ही पतली होती थी। उसका घी भी सौ टका शुद्ध होता था। कभी भी उसने किसीको न दूध कम मापा और न घी ही कम तौला, चाहे खरीददार बड़ा हो या बच्चा। सब उसकी ईमानदारीकी प्रशंसा करते थे। परंतु दूसरे दूध-दही बेचने वाले उसकी आमदनी और ईमानदारीसे जलते थे।

रामी सवेरे मुंह-अंधेरे ही अपने ग्राहकोंको दूध दे आती थी, फिर छाछ बेचने निकल जाती। वापसीमें वह घरकी अन्य जरूरी चीजोंकी खरीद भी कर लेती। सौदा वह लाला दमड़ीमल-की दूकानसे ही लेती थी। गुजरियाबासके लग-भग सभी निवासी लालाके ही ग्राहक थे, क्योंकि यह दूकान ही उस मोहल्लेके अधिक नजदीक थी। इस दूकानकी बदौलत ही लाला बड़े सेठ हो गए थे। लोगोंमें इनके धनकी चर्चा थी। परंतु लाला थे बड़े कंजूस, खाने-पहननेमें भी बड़ी कड़की बरतते थे। एक दिन बेचारी ललाइनके मनमें घी खानेकी आई। पत्नीके बार बार तंग करनेपर बड़ी मुश्किलसे लालाने रामीको एक सेर घीका आर्डर दिया। रामी लालाकी बड़ी इज्जत करती थी, सो उसने तुरंत लालाको घी लाकर दिया।

अभी रामी घी देकर घर पहुंची ही थी कि घी लिये लाला उसके घर आ धमके और जोर जोरसे चिल्लाने लगे। रामीके घरके आगे एक पूरी भीड़ इकट्ठी हो गई। लाला जोर जोरसे चीखकर कह रहे थे—"रामीने मेरे साथ बेईमानी की है। पैसे पूरे लिये हैं, पर घी कम तौला है।" भीड़मेंसे एकने बीच-बचाव करते हुए पूछा, "लाला घी है कितना कम?"

"पूरा एक छटांक कम है, जी," लाला तुरंत बोले। "मैं पक्का बनिया हूं। हर एक चीज-का हिसाब रखता हूं।"

बेचारी रामी घबरा गई। बोली, "लाला, घी कम नहीं हो सकता। मैंने स्वयं तौला है।"

रामीका एक विरोधी अवसर देखकर बोला, "इसका क्या सबूत कि तूने पूरा ही

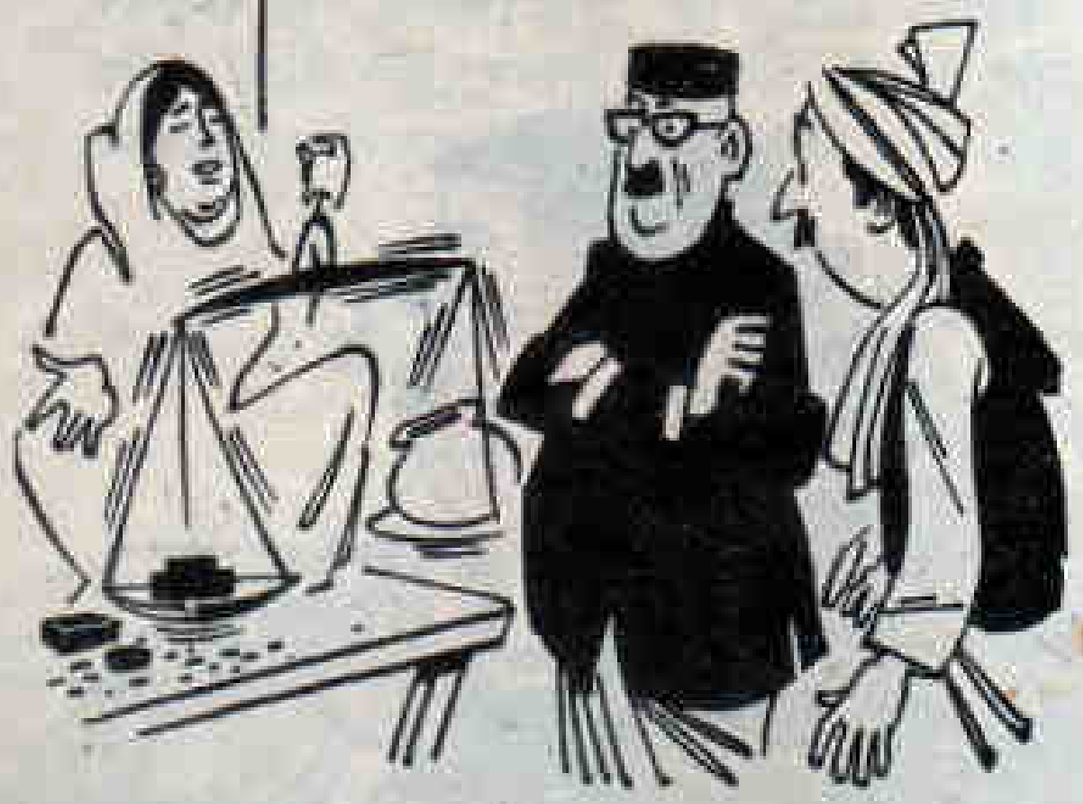

तौला है?"

लालाके उधारखाऊ हिमायती कब चुप रहने वाले थे। एक बोला, "ला, तेरा सेर देखते हैं।"

"मेरा सेर तो पड़ोसिन मांगकर कल ही ले गई थी," रामी बोली।

लालाने बड़े ठाटसे हुंकार भरी और फिर भीड़में चारों ओर देखा। झगड़ेको निबटानेके लिए एक सज्जन कहींसे सेरका एक बाट ले आए और रामीसे बोले, "ले अब तौलकर बता।"

"मैंने पहले ही कहा है कि सेर पास नहीं था, इसलिए मैंने लालासे लाये हुए सेर भर गुड़के बराबर ही तौला है।"

सबसे पहले गुड़ तौला गया, तो वह एक छटाक कम था। एक दम हवा बदली! लाला-को घी छोड़कर भागना पड़ा। ●

www.kissekahani.com

हास्य एकांकी

विषयकश्यप

www.kissekahani.com

(बच्चोंकी अदालत। सामने दीवारपर बीचोंबीच एक तराजू बनी है जो न्यायकी प्रतीक है। मंचके पिछले भागको कुछ ऊंचा बनानेके लिए एक तख्त बिछा है। तख्तके ऊपर एक बड़ी-सी मेज और कुर्सी रखी है। मेजपर कुछ फाइलें, कलम-दवात और लकड़ीकी हथौड़ी रखी है।

मंचकी दोनों ओर लकड़ियां खड़ी करके दो कटघरे बनाए गए हैं। तख्तके सामने दर्शकोंके बैठनेके लिए दो-तीन बेंचें पड़ी हैं।

परदा उठने पर तेरह-चौदह वर्षका एक लड़का जजकी कुर्सी पर बैठा दिखाई पड़ता है। बायीं ओर-वाले कटघरेके नजदीक काला चोगा पहने बारह-तेरह वर्षका एक लड़का खड़ा है। यह सरकारी वकील है। सभी बेंचें दर्शक-बच्चोंसे खचाखच भरी हैं। दरवाजेपर एक लड़का पेटी कसे अर्दली बना खड़ा है।

तभी पुलिसके दो सिपाही भगवान विष्णुको, जो इस समय नरसिंह-रूपमें हैं, पकड़े हुए लाते हैं। उनके दोनों हाथोंमें हथकड़ियां पड़ी हैं। उनके कोर्टमें प्रवेश करते ही पहले तो 'शेर आ गया, शेर आ गया' का शोर मचने लगता है, लेकिन दूसरे ही क्षण, 'अरे, यह तो आद-मियोंकी तरह चलता है, यह कैसा कैदी! सारा शरीर तो इसका आदमियों जैसा है पर मुंह बिलकुल शेर जैसा!'—आदि आवाजें सुनाई पड़ती हैं।

—श्रीकृष्ण

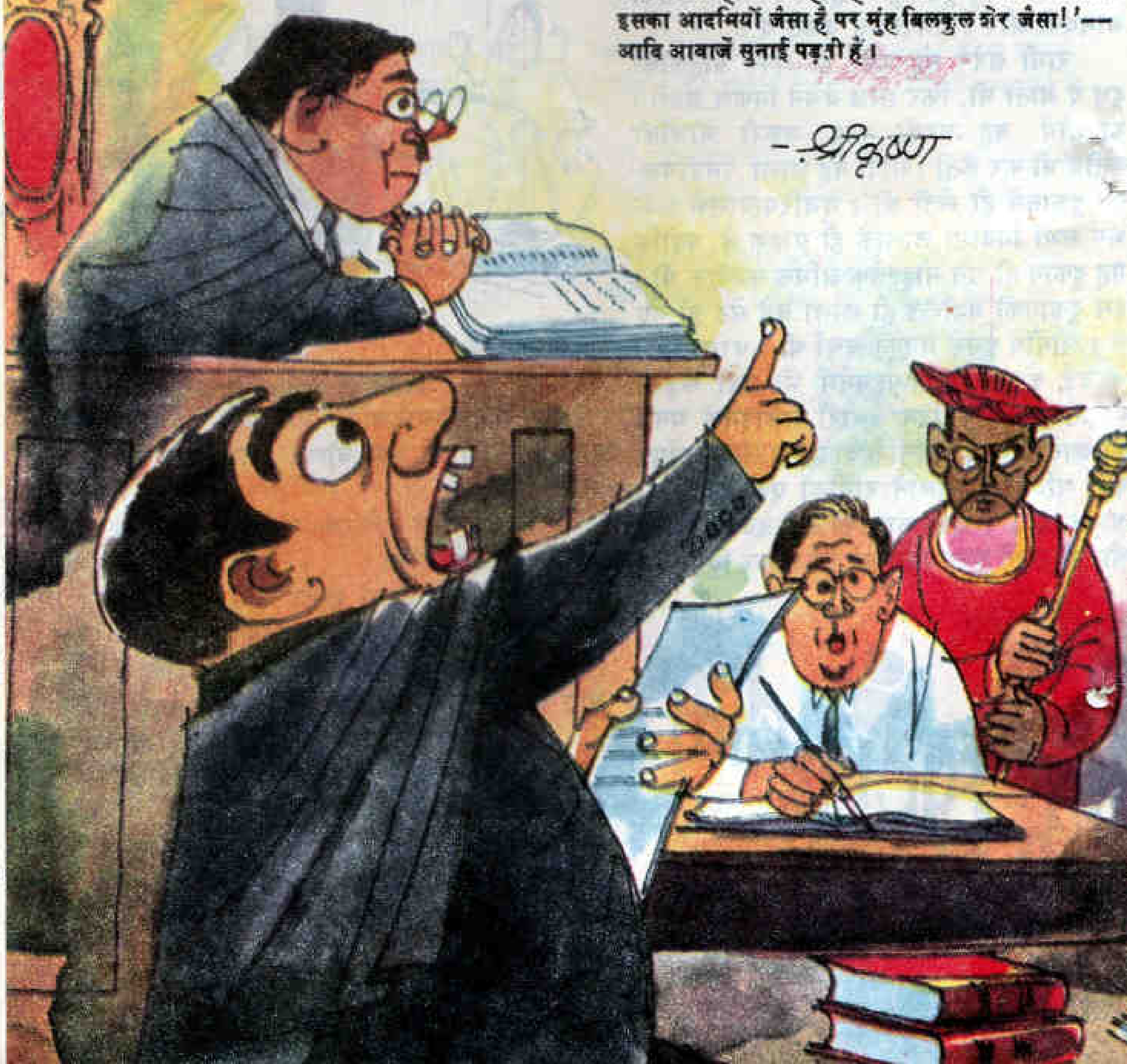

मर्डर केस

सिपाही विष्णुजीको ले जाकर मुलजिमके कटघरेमें खड़ा कर देते हैं।)

जज (मेजपर हथौड़ी मारकर) : आर्डर! आर्डर!

(सब चुप हो जाते हैं।)

सरकारी वकील (जजसे) : माई लार्ड, यही है वह खतरनाक कातिल जिसने किंग हिरण्यकश्यपका मर्डर किया है।

जज (आश्चर्यके साथ) : यह आधा शेर, आधा आदमी!

सरकारी वकील : हुजूर, आप बहुरूपियेके धोखेमें न आएं। कछुएके ऊपरी खोलकी तरह यह इसका असली रूप नहीं है। यह तो इसने कानूनके शिकंजेसे बचनेके लिए शेरका मुखौटा पहना हुआ है।

जज : हम समझे नहीं।

सरकारी वकील : हुजूर, अगर कोई आदमी मर्डर करे, तो उसे आप एकदम फांसीपर लटका देंगे। लेकिन अगर कोई जानवर जैसे शेर, भेड़िया, चीता या बैल किसी आदमीको मार डाले, तो क्या आप उसपर भी कत्लका केस चलाएंगे?

जज : जानवरोंपर भी कहीं मुकद्दमा चलता है?

सरकारी वकील : बस तो, हुजूर, शेरकी खाल और मुखौटा पहनकर मार्डर करनेमें मुलजिमकी यही चाल थी। इसने सोचा था कि इसे असली शेर समझकर कोई इसके नजदीक नहीं आएगा और यह चुपचाप खिसक लेगा। लेकिन, माई लार्ड, हमारी पुलिसकी चौकन्नी और तेज आंखोंसे इसकी चाल छिपी न रह सकी और इससे पहले

लेखक-परिचय

नाम : श्रीकृष्ण; जन्म : १५ अक्तूबर १९३४; शिक्षा : बी. एस-सी.।

प्रथम रचना 'नजर' कहानी, फरवरी १९५२ में 'सरिता' में प्रकाशित। हिन्दीकी प्राय: सभी स्तरीय पत्र-पत्रिकाओंमें रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं। कई रचनाएं गुजराती, मराठी, कन्नड़, उर्दू आदिमें अनूदित। आकाशवाणीसे अनेक नाटक तथा कहानियां प्रसारित। अब तक ३३ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें 'तरकशके तीर', 'हीरे-मोती', 'दुनिया रंग-बिरंगी', 'खेल-खेलमें विज्ञान' आदि उल्लेखनीय हैं। 'हीरे-मोती' भारत सरकारके ५०० रु. के पुरस्कारसे सम्मानित। कई पुस्तकें अभी प्रकाशनाधीन हैं।

पता : भारतीय ज्ञानपीठ, ३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली—६।

कि यह चम्पत हो जाए, उसने इसे मौकेपर जा पकड़ा।

जज : हुं. . .(**विष्णुजीसे**) तुम्हारा वकील कहां है?

नारद (प्रवेश करते हुए) : नारायण, नारायण! माई लार्ड, मैं उपस्थित हूं।

(नारदजी वकीलोंकी तरह काला कोट और सफेद पतलून पहने हैं। सिर घोटमघोट है जिसपर कुतुब मीनारकी तरह खड़ी मोटी चुटिया दूरसे ही नजर आ रही है।)

नारद (धीमे स्वरमें विष्णु भगवानसे) : प्रभु, आप कहां आ फंसे! यहां तो रात-दिन सचको झूठ और झूठको सच बनाया जाता है।

जज (नारदसे) : आप ही हैं मुलजिमके वकील?

नारद : जी हां, मैं ही हूं इनका तीनों लोकोंका रजिस्टर्ड वकील!

सरकारी वकील : मैंने पहले कभी जनाबको देखा नहीं?

नारद : मेरे केस ज्यादातर हाई कोर्ट व सुप्रीम कोर्ट, मेरा मतलब है ऊपरकी अदालतोंमें होते हैं, लोअर कोर्टमें यह पहला ही चांस है।

सरकारी वकील : आपकी तारीफ?

नारद : बैरिस्टर नारद।

सरकारी वकील : नारद! (**व्यंगसे**) पर, महाशय, आप अपनी वीणा कहां भूल आए?

नारद : रेलवेके क्लॉक-रूममें जमा कर आया हूं। कमबख्त बहुत ही भारी है; फिर अब उसका फैशन भी नहीं रहा। सोचता हूं अब तो उसे जामा मस्जिदपर बेचकर 'सुपर-बाजार' से इलेक्ट्रिक गिटार या क्या कहते हैं उसे. . . वही जो मुंहसे बजाया जाता है?

जज : माउथ ऑर्गन?

नारद : हां हां, माउथ ऑर्गन खरीद लूं! (**विष्णु भगवानसे**) क्यों, प्रभु, आपकी रायमें क्या ठीक रहेगा—इलेक्ट्रिक गिटार या माउथ आर्गन?

विष्णु (तनिक धीमे स्वरमें) : पहले फांसीके फंदेसे मेरी गरदन तो छुड़ाओ।

जज (विष्णुजीसे) : आर्डर! आर्डर! यह खुसर-पुसर क्या हो रही है? जल्दीसे अपना नाम बोलो।

विष्णु : नाम? हुजूर, एक नाम हो, तो बताऊं! विष्णु, कृष्ण, राम, हरि, लक्ष्मीपति, नारायण—जिस नामसे भी कोई भक्त याद करता है, वही मेरा नाम है।

नारद : यह नृत्यके आचार्य हैं, इसी लिए लोग इन्हें नटवर भी कहते हैं।

जज : क्या? नटवरलाल! वही मशहूर ठग, जिसपर मद्रासमें कई मुकदमे चल रहे हैं?

नारद : नहीं, माई लार्ड, नहीं! यह भक्तोंके नटवर हैं, वह कुल-कलंकी नटवरलाल है।

जज : ओह! लाल है—तब जरूर वह इसका पुत्र होगा!

सरकारी वकील : माई लार्ड, मुलजिमके अनेक नामोंका होना ही यह जाहिर करता है कि यह अव्वल दरजेका 'फोर ट्वण्टी' है। जाली नाम रख रखकर भोले-भाले लोगोंकी आंखोंमें धूल झोंकना और उनको उल्लू बनाना ही इसका पेशा है। हुजूर, मैं दफा ३०२ के साथ साथ इस पर भारतीय दण्ड संहिताकी धारा ४२० का भी आरोप लगाता हूं।

नारद : नारायण, नारायण! साक्षात् भगवानपर फोर-ट्वण्टीका आरोप!

जज (विष्णुसे) : कहां रहते हो?

विष्णु : सारी दुनिया ही मेरा घर है।

सरकारी वकील : अदालत नोट करे, हर शरीफ आदमीका एक-न-एक घर होता है, लेकिन इन जनाबका अपना कोई घर ही नहीं है। माई लार्ड, यह भी मुलजिमकी आवारगीका एक सबूत है।

जज : आर्डर! आर्डर! (**विष्णुसे**) पेशा?

विष्णु : गरीबों, दुखियों, सताए हुओंकी मदद. . . . पापियोंका नाश. . . भक्तोंका उद्धार. . .

सरकारी वकील : यह काम तो सभी डाकू और कातिल करनेका दावा करते हैं। खैर, इससे पहले और कितने कत्ल किए हैं?

नारद : माई लार्ड, मुझे इस प्रश्नपर सख्त आपत्ति है।

सरकारी वकील : माई लार्ड, मैं अदालतको बताना चाहता हूं कि यह इसका पहला खून नहीं है और इससे पहले भी यह कई मर्डर कर चुका है। हुजूर, यह पेशेवर कातिल है।

जज : यह आप कैसे कह सकते हैं?

सरकारी वकील : माई लार्ड, पुलिससे प्राप्त इसकी यह हिस्ट्री-शीट इसका सबूत है। मथुराकी पुलिसकी रिपोर्टके अनुसार यह हजरत वहां भी 'कृष्ण' के जाली नामसे 'कंस' का मर्डर करके भागे हुए हैं और पुलिस अरसेसे इनकी तलाशमें है।

नारद : माई लार्ड, मैं मानता हूं कि मेरे मुवक्किलने कंसका वध किया, लेकिन सवाल उठता है कि उसने एसा क्यों किया? हुजूर, उसे मजबूर किया गया इसके लिए।

जज : किसने किया मजबूर?

नारद : हुजूर, उसी गुण्डोंके सरदार कंसने। उसने मेरे मुवक्किलके डैडी-मम्मीको ही अपने यहां कैद नहीं किया, उसके नन्हे-मुन्ने सात भाई-बहनोंको भी बड़ी बेरहमीसे गला घोटकर और पत्थरपर पटक पटककर मार डाला। मेरे मुवक्किलके पीछे भी उसने पूतना, बकासुर, अघासुर, शकटासुर, वत्सासुर, प्रलम्बासुर, धेनुकासुर आदि अपने कई 'गुण्डे' लगाए। इतना ही नहीं, मेरे मुवक्किलको धोखेसे अपने घर बुलवाकर उसपर हमला किया। आखिर उनकी जानकी हिफाजतके लिए इसे उस नीचका वध करना ही पड़ा।

सरकारी वकील : माई लार्ड, विश्वप्रसिद्ध प्राइवेट डिटेक्टिव मि. तुलसीदासकी विस्तृत रिपोर्ट 'रामायण' के अनुसार 'राम' के जाली नामसे यह वहां भी 'रावण' का मर्डर कर चुका है। माई लार्ड, सीलोन हमारा पड़ोसी ही नहीं, सदियों पुराना मित्र देश है। इसके इस कुकृत्यसे हमारे अंतरराष्ट्रीय शांति प्रयत्नोंको बहुत धक्का पहुंचा है। हुजूर, इसकी इस देशद्रोहपूर्ण हरकतसे साबित हो गया है कि मार काट, तोड़-फोड़ और खून-खराबीकी नीतिमें विश्वास रखने वाले विस्तारवादी चीनसे इसका जरूर ही कोई संबंध है।

नारद : माई लार्ड, वह दुष्ट 'रावण' मेरे मुवक्किलकी धर्मपत्नीको उठाकर ले गया था। मैं अपने (**सरकारी वकीलकी ओर इशारा करके**) सम्माननीय मित्रसे पूछना चाहूंगा कि अगर कोई उनकी वाइफको उड़ाकर ले जाए, तो क्या उनका खून नहीं खौल उठेगा?

सरकारी वकील : तो इसके लिए पुलिसमें रिपोर्ट करनी थी। पुलिस अपने-आप उससे निपटती रहती। कानून कसूरवारको अपने-आप सजा देता। कानूनको अपने हाथमें लेकर सजा देने वाला यह कौन था? हुजूर, मैं इसपर कानूनकी मर्यादा भंग करनेका भी आरोप लगाता हूं।

नारद (कानोंपर हाथ रखकर) : कैसा घोर कलजुग आ गया है! नारायण, नारायण!

सरकारी वकील : माई लार्ड, इजाजत हो, तो अब मैं कुछ गवाह पेश करूं, जो आजके मुकदमेपर रोशनी डालनेके साथ साथ, मुलजिमकी करतूतोंका भी पर्दाफाश करेंगे।

जज : इजाजत है।

सरकारी वकील : हुजूर, मेरी सबसे पहली गवाह है मिस खप्परभरनी।

(कृपया पृष्ठ ७३ देखिए)

छोटी छोटी बातें—

—सिन्स

"होलीका दिन है; चुन्नू-मन्नू आज रंग डाले बगैर नहीं मानेंगे। क्या किया जाए?"

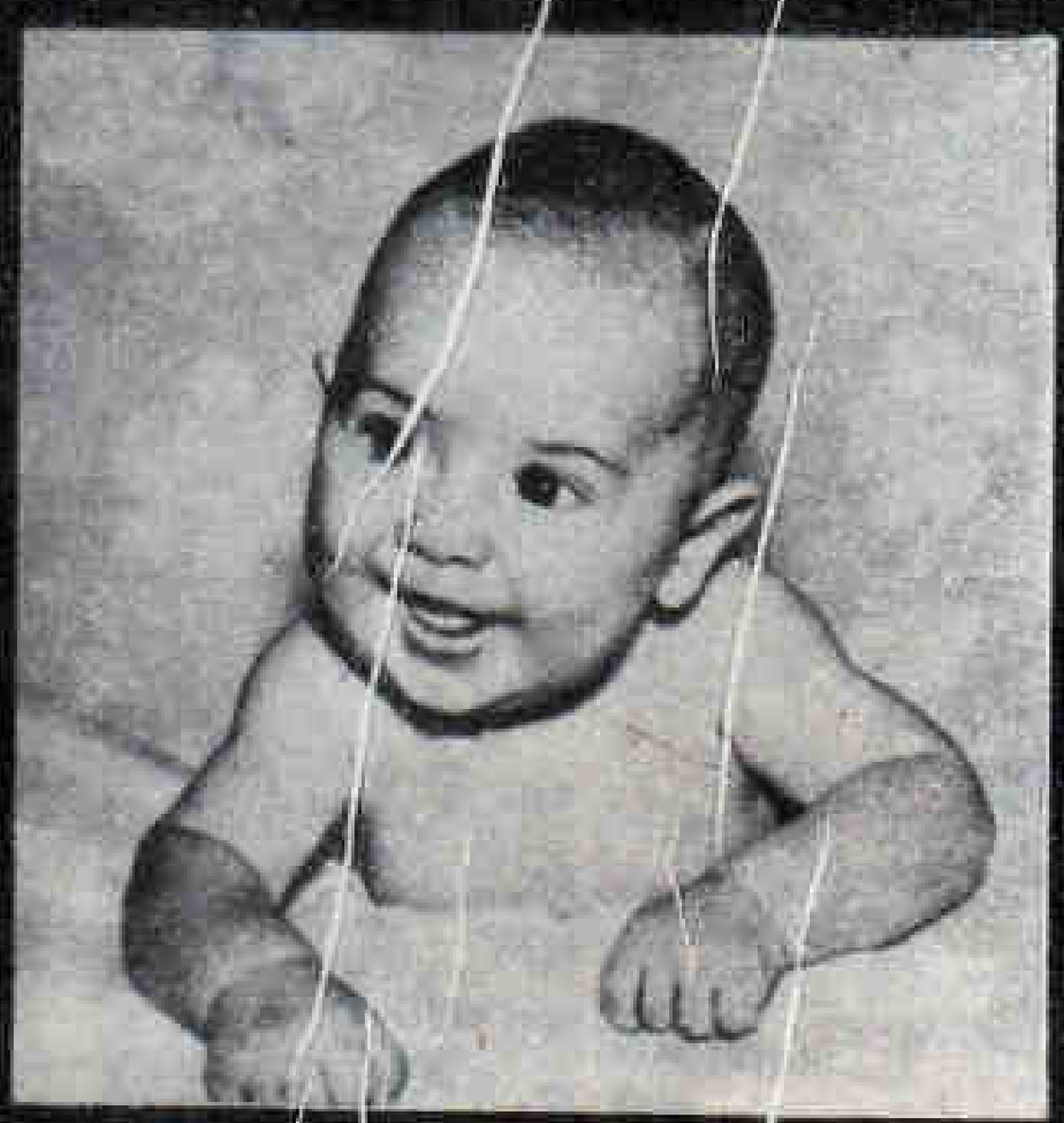

"अरे, तो इसमें फिक्रकी क्या बात है! अपन बिस्तर ही नहीं छोड़ेंगे; मम्मी खुद उनसे निबटेंगी!"

होली खेलने...

"फिल भी होली तो होली ही है, साबुन तो धोलना ही पलेगा!"

"जी हां, छाला लंग कपलों पल ही पला—ही ही ही ही!"

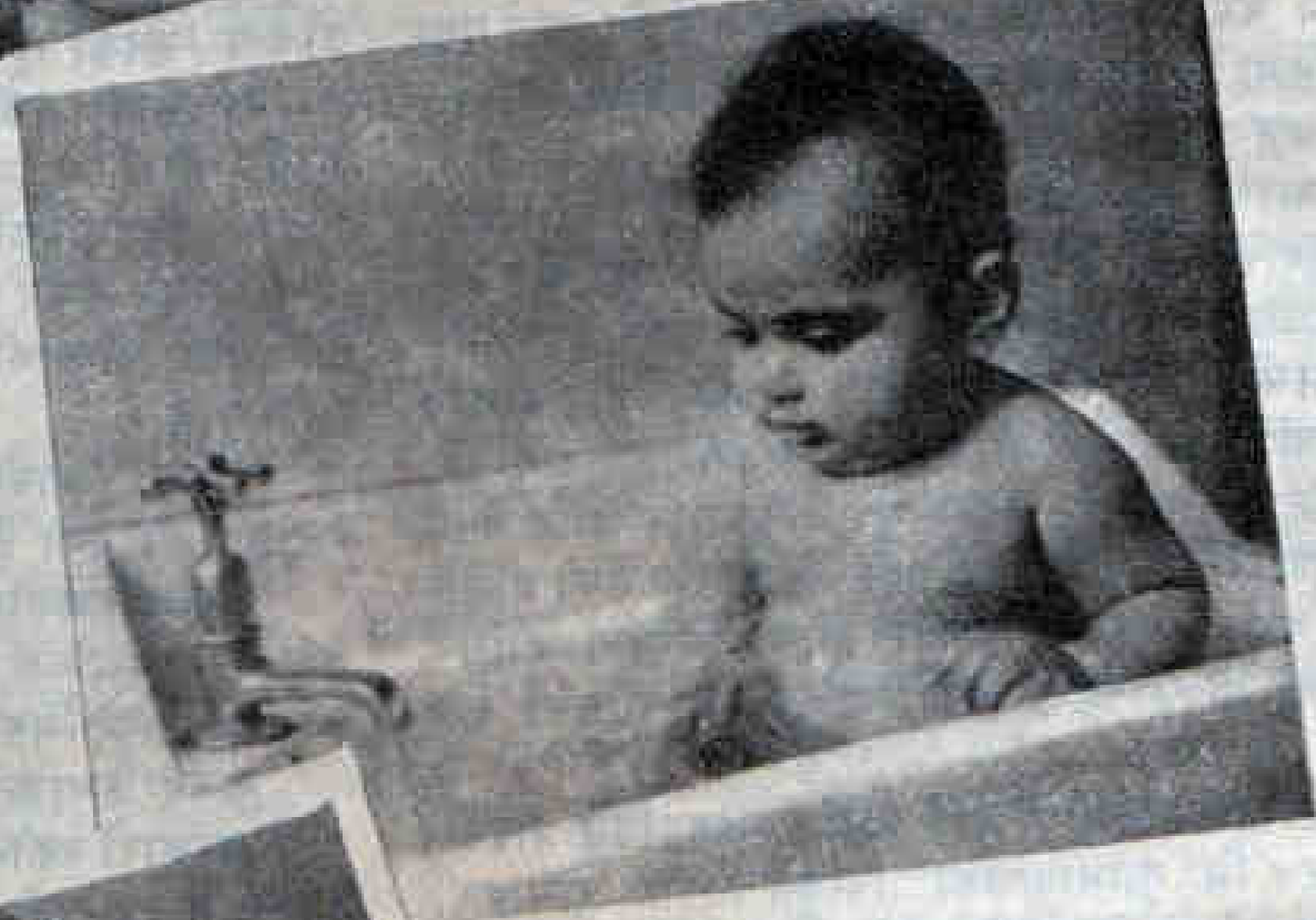

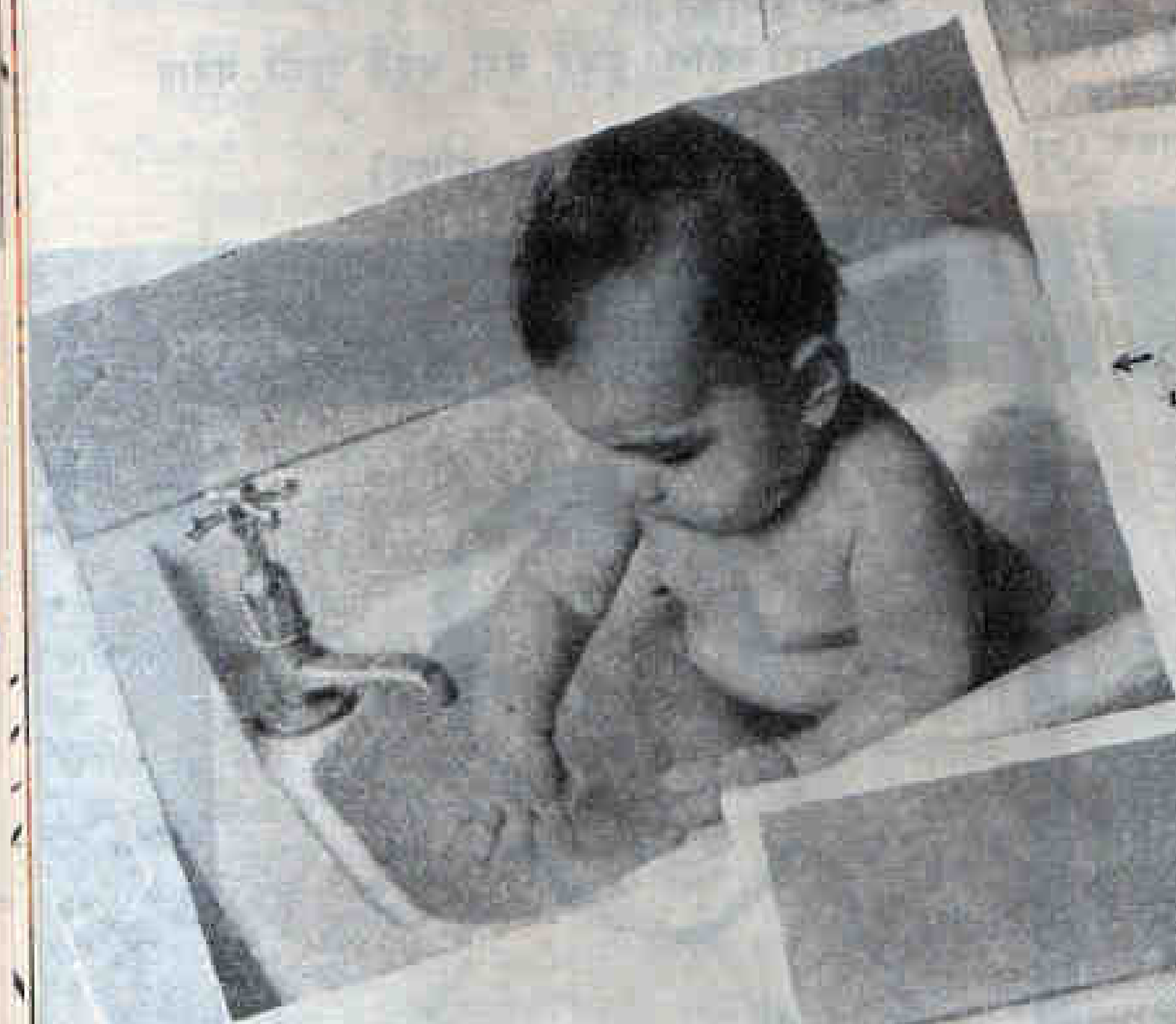

"फिल लाग उथाए बिना छपाई कैसे होगी?"

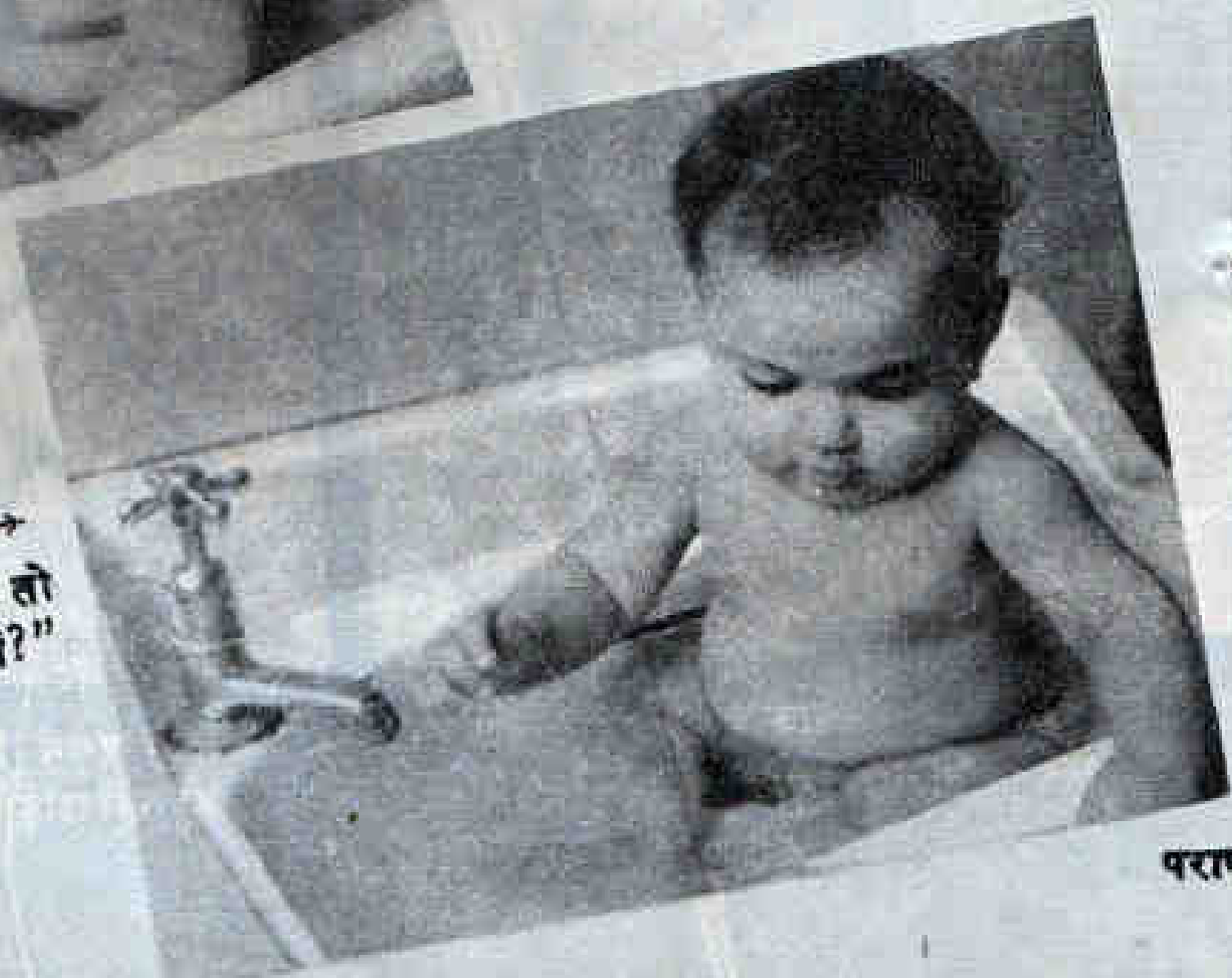

"पानी जावा भल जाए, तो लाग कहां छे आएंगे?"

...के बाद

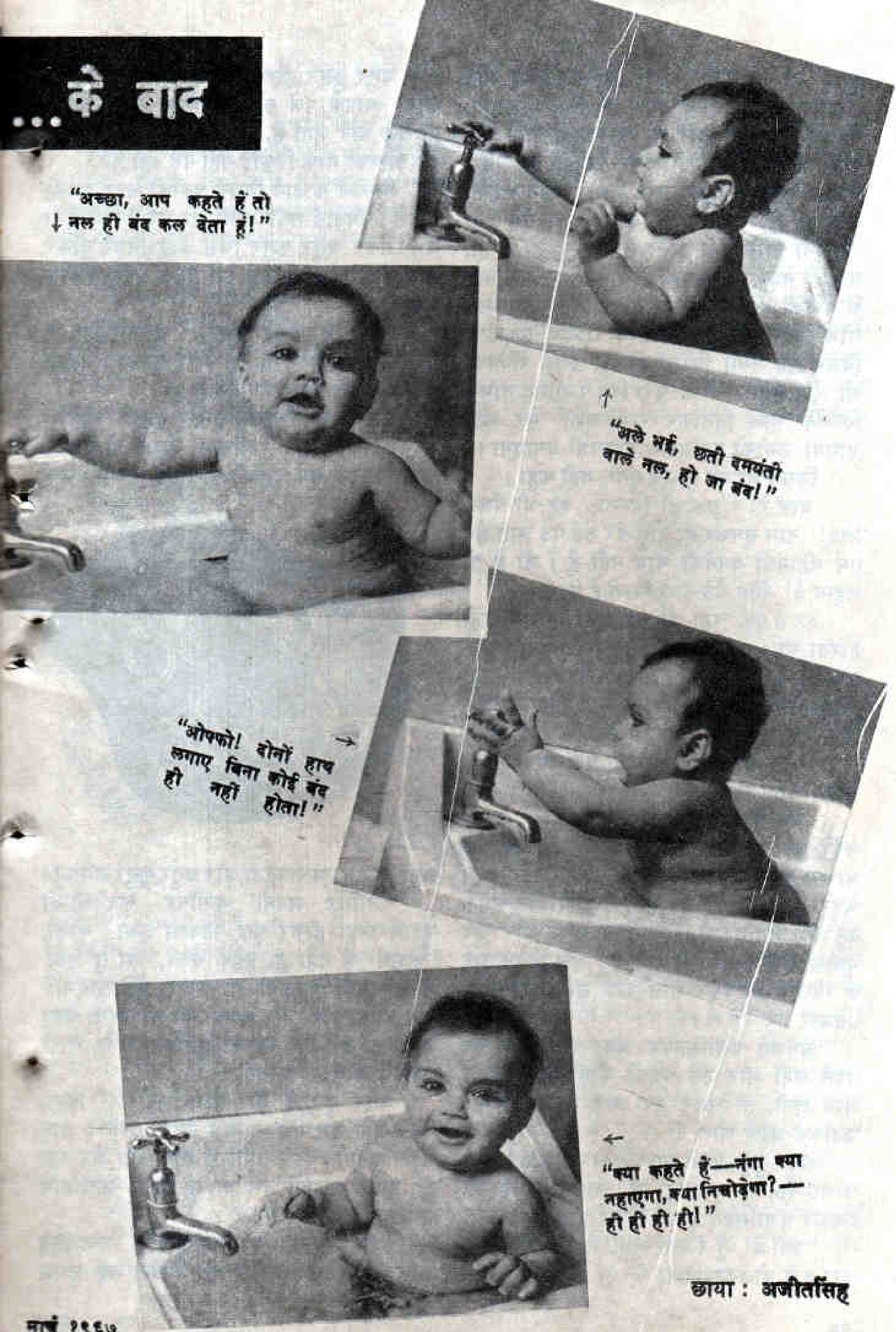

"अच्छा, आप कहते हैं तो नल ही बंद कर देता हूं!"

"अरे भई, छोटी रमयंती वाले नल, हो जा बंद!"

"ओफ्फो! दोनों हाथ लगाए बिना कोई बंद ही नहीं होता!"

"क्या कहते हैं—नंगा क्या नहाएगा, क्या निचोड़ेगा?—ही ही ही ही!"

छाया : अजीतसिंह

एक था मूसराज—बहुत ही समझदार और बहादुर। वह अपने दरबारमें सिर्फ बुद्धिमान, मेहनती और ईमानदार चूहोंको रखता था। एक बार उसके महामंत्रीको चील उठाकर ले गई। बेचारा मूसराज बहुत दुखी हुआ। उसने सोचा, जैसे भी हो, महामंत्रीकी जगह किसी ऐसे चूहे-को लेना चाहिए जो हर तरहसे योग्य तो हो ही, साथ ही बहादुर इतना हो कि अपनेसे दूनी शक्ति-के बैरीको भी हरा देनेका साहस रखे। यही सब सोच-विचारकर उसने अपने राज्यके एक एक बिलमें यह डुग्गी पिटवा दी कि उसके राज्यका जो वीर चूहा होलीका पूरा दिन पंजासिंह नामके बिल्लेके साथ बिताकर राजी-खुशी घर लौट आएगा, उसीको वह अपना महामंत्री बनाएगा।

जिसने भी यह ऐलान सुना, यही कहा :

'बाप रे! एक तो बिल्ला, वह भी पंजा-सिंह! नाम सुनकर ही हाथ-पैर ठंडे पड़ जाते हैं। हमें महामंत्री बननेका चाव नहीं है। जी है तो जहान है! कौन बैठे-ठाले बिल्लेके मुंहमें जाए!'

मगर एक चूहा था जो कभी हिम्मत नहीं हारता था। वह था चतुर कुतुर। चतुर कुतुरने सोचा—कुछ भी हो जाए, वह पंजासिंहसे टक्कर लेके रहेगा। और वह ठीक होलीके दिन, महाराजको सूचना भिजवाकर, एक नन्हा-सा टेप-रिकार्डर हाथमें लटकाए चल दिया पंजा-सिंहसे लोहा लेने।

पंजासिंहका घर बस्तीके बाहर था। सवेरे-सवेरे जब चतुर कुतुर वहां पहुंचा, तो वह एक आराम-कुर्सीमें दुबका खर्राटे भर रहा था। चतुर कुतुरके लिए मन ही मन दुखी होते उसके बहुतसे सगे-संबंधी, मित्र, दरबारी और खुद मूस-सम्राट सुरंगोंमें से होते हुए पंजासिंहके घर के बिलोंमें पहुंचकर सांस रोके उसके जागनेका इंतजार कर रहे थे।

अधजगे पंजासिंहपर जब सूरजकी किरण पड़ने लगीं और उसे चूहेकी भीनी भीनी खुशबू आने लगी, तो उसने एक बार जोरसे सूंघकर फटाकसे आंखें खोल दीं।

चतुर कुतुर इत्मीनानके साथ एक मोढ़ेपर पूंछ फैलाए बैठा मुसकरा रहा था। उसकी यह हिम्मत देखकर पंजासिंहने हैरान होकर पूछा :

"क्यों बे! तू जिंदा चूहा है या रबड़का? जरा कुछ बोलकर दिखा।"

चतुर कुतुर हंसकर बोला, "आपकी निगाह और आपके पंजे तो भगवानकी कृपासे बहुत ही तेज माने जाते हैं, श्रीमान्। क्या सेवक फिर भी आपको साफ दिखाई नहीं पड़ रहा है?"

बिल्लेने न जाने कितने चूहोंको अपने सामने रोते-गिड़गिड़ाते तथा भयसे थर-थर कांपते देखा था, लेकिन चतुर कुतुर जिस तरह निडर होकर बातें कर रहा था, यह उसे बहुत अपमानजनक लगा।

उसने घुड़ककर कहा, "हंसता क्या है, बदतमीज, जानता नहीं तू मेरा सुबहका नाश्ता है? और आज होलीका दिन है . . ."

चतुर कुतुरने हैरान होकर पूछा, "कौन? मैं? आपका नाश्ता? श्रीमान, होशमें तो हैं न?"

बिलोंमें छुपे चूहोंकी सांस रुकने लगी। उन्हें

हास्य कथा

चतुर कुतुर और पंजासिंह

www.kissekahani.com

लगा कि बस एक झपट्टा, और चतुर कुतुर समाप्त।

पंजासिंह अपनी कुर्सीपर कूदनेकी-सी मुद्रामें खड़ा होकर पूंछ पटकता हुआ बोला, "होशमें मैं नहीं हूं, चूहेके बच्चे, या तू खुद? मैं तुझे नहीं खाऊंगा, तो क्या तू मुझे खाएगा? मुझे ऊंघता पाकर बढ़ बढ़कर चीं-चीं करता चला जा रहा है। एक रहपटा घुमाकर दूंगा, सारी अक्ल ठिकाने आ जाएगी।"

चतुर कुतुरने भी त्योरी चढ़ाकर कहा, "बड़े आए तुम मुझपर हाथ उठाने वाले! वाह जी! इतनी देरसे तमीजके साथ बात कर रहा हूं, इसीसे अकड़ते चले जा रहे हो। जरा हाथ लगाकर देखो तो!"

"क्यों, तू मेरा क्या कर लेगा?" पंजासिंह आंख निकालकर गर .ा तो, लेकिन वह समझ

नहीं पा रहा था कि आखिर यह चूहा इतना उछल किसके बलपर रहा है।

"जानते हो मुझे यहां किसने भेजा है?"

"हां हां, बता न किसने भेजा है?" बिल्लेने गुर्राकर जवाब दिया और ललचाया-सा आगे खिसकने लगा। उसकी आंखोंमें चमक थी और लग रहा था कि बस, अब उससे रुका नहीं जा रहा है।

"शेरेका नाम सुना है कभी?"

पंजासिंह पीछे हटकर पहलेकी तरह कुर्सीमें दुबक गया और बनावटी लापरवाहीके साथ बोला, "हां, सुना है। वह इस शहरका सबसे खूंखार कुत्ता है। कभी कभी इधर भी निकल

शांति मेहरोत्रा

तुम आरामसे गद्दीपर बैठ जाओ, खाली बेंत चुभ रहा होगा। चूहोंका शरीर बड़ा कोमल होता है. . . और हां, तुम वह शेरेकी क्या बात कर रहे थे?"

"बात-बात क्या जी, वह मेरा जिगरी दोस्त है। कल शामको तुम्हारी चर्चा चली,तो बोला—वह बिल्ला बहुत भला है, तुम उससे दोस्ती कर लो; होलीका मौका है अदावतीकी बात भूल जानेका। मैंने लाख कहा कि—भाई, मुझे इतनी फुरसत कहां धरी है! लेकिन वह सुनता कब है! जो उसने कह दिया, सो करना ही होगा।

आता है। मगर उससे तुझे क्या लेना-देना है? तू अपनी कह। मुझे तेज भूख लग रही है और अब इस बकवासके लिए मेरे पास ज्यादा समय नहीं है।"

"तो फिर खा ही डालो, छुट्टी हो। तुम्हारे साथ बातें करनेकी मेरी भी बिल्कुल इच्छा नहीं है। मैंने शेरेसे पहले ही कहा था . . .।"

शेरेका नाम सुनकर पहले ही पंजासिंहकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई थी। उसने मीठे स्वरमें खुशामद की :

"अरे भाई मेरे, तुम तो, यार, हंसी हंसीमें बुरा मान जाते हो। नाश्ता तो मैं सुबह ही कर चुका, तभी तो चैनसे पड़ा पड़ा ऊंघ रहा था। और फिर इतना नहीं, मेरी देखभालके लिए हर समय आसपास मंडराता रहता है। तुम्हीं बताओ भला मैं कोई बच्चा हूं! लेकिन क्या मजाल जो वह मुझे आंखोंसे ओझल होने दे। आओ न, तुम्हें दिखाऊं। उस सामने वाली झाड़ीके पीछे होगा।" कहते कहते चूहेने कुर्सीके नीचे टेप-रिकार्डरको चुपकेसे चला दिया। कुत्तेके भौंकनेकी जोरदार आवाजसे घर थर्रा गया। पंजासिंहका चेहरा और भी सफेद लगने लगा। वह कूदकर रसोईमें छिप गया।

चतुर कुतुरने चिल्लाकर कहा, "थोड़ी देरमें आता हूं, शेरा भाई। चाहता तो था कि गपशप

(शेष पृष्ठ ७८ पर)

हास्य कहानी

भंगेड़ी चाचा

www.kissekahani.com

उसका नाम था भगवानदास, लेकिन सब उसे भंगेड़ीदास कहा करते थे। लगातार भंग पीनेकी आदतने भगवानदासको भंगेड़ीदास बना दिया था। बहुत दिन तक भगवानदास इस नामसे चिढ़ता रहा, लेकिन बादमें उसे इसी नामसे पुकारे जानेमें सुख मिलने लगा। वह सोचता—मैं भंग भवानीका दास हूं, तभी तो सब मुझे इस नामसे पुकारते हैं। सूरज डूबता और भंगेड़ीदासकी नुमायश लगनी शुरू हो जाती। इस कटोरीमें बादाम भीग रहे हैं, उस रकाबीमें भंगकी धुली हुई और साफ की हुई पत्तियां रखी हुई हैं। ये रहीं काली मिर्चें, और वे हैं खरबूजेकी गिरी। इधर दूधका लोटा रखा है और उधर शक्करका डिब्बा। भंगेड़ीदासका आसन सामनेके चबूतरेपर इतने नियमसे बिछता था कि अड़ोस-पड़ोसकी औरतें देखते ही समझ जाती थीं कि दिन मूंदनेका समय हो गया और छह बज रहे हैं। सामनेकी हवेलीके बाबू बुलाकीदासके नौकरने तो कई बार बंद घड़ीके कांटेको भंगेड़ीदासका आसन बिछा देखकर छहपर कर दिया था। भंगेड़ीदास अपने कुंडी और सोटेको बहुत संभालकर रखते थे। जयपुरसे खास तौरपर बड़े जतनसे सफेद पत्थरकी कुंडी मंगाई थी। लगातार रगड़ खाते-खाते यह कुंडी संगमरमरकी तरह चमकने लगी थी। उनके सोटेके भी क्या कहने! छोटे छोटे घुंघरू मुकुटकी तरह जड़े हुए थे। भंगेड़ीदास जब भंग घोटते, तो ऐसा लगता जैसे भंग भवानी उनके सोटेके घुंघरूओंकी झंकारपर थिरकती आती हैं और कुंडीके सरोवरमें डुबकी लगाकर घुल-मिल जाती हैं।

●

सदाके समान आज भी भंगेड़ीदास अपनी नुमायश लगा चुके थे। भंगकी पत्तियां और काली मिर्चें कुंडीमें डाली जा चुकी थीं और पानीका

छींटा लग चुका था। भंगेड़ीदासने कूंडीकी तलीको सोटेसे रगड़ा और घुंघरूओंकी झंकार गूंज उठी। इसी गूंजके साथ लहराने लगी उनकी यह तुक-बंदी—

"जो न पिए भंग का लोटा,
भई, उसका करम है खोटा!
कहे भंगेड़ीदास, ओ संतो,
उसके जमाओ सोटा!"

तुक अभी पूरी नहीं हुई थी कि तालियोंकी गड़गड़ाहट सुनकर भंगेड़ीदास ऐसे चौंके, जैसे कोई सपनेमें छप्पन करोड़की चौथाई पाता पाता कोई खटका सुनकर जाग उठे! देखा तो सामने पप्पू, गप्पू, डब्बू, मुन्ना, चुन्ना, लल्लू, मल्लकी वानर सेना रेलगाड़ी बनी खड़ी है। बच्चोंकी यह रेल छुक-छुक करती हुई आगे बढ़ी और भंगेड़ीदासको घेरकर बैठ गई। भंग घोटते समय बच्चोंकी टोलीको देखकर

— सरस्वतीकुमार 'दीपक'

भंगेड़ीदासकी बांछें खिल जाती थीं। इसके अनेक कारण थे एक तो भंग घोटनेमें उनका मन लगा रहता था। दूसरे उनको कुछ मंगाना होता, तो ये बंदर बहादुर तड़ाक-फड़ाक लाकर हाजिर कर देते। बच्चे भी बड़े प्यारसे उन्हें भंगेड़ी चाचा कहा करते थे। चाचा कभी उनको चाकलेट खिलाते थे, कभी पहाड़ीवाले बड़े हनुमान-जीका प्रसाद। यह उनका बड़प्पन था कि कभी उन्होंने किसी बच्चेको चुल्लूमें उल्लू बनानेकी बात सोचकर भंग नहीं चखाई। हां, यह वानर सेना जरूर चाचाको तंग करती रहती थी।

अपने कामसे लौटते समय आज चाचाकी रास्तेमें अच्छन पहलवानके अखाड़ेपर भी छन गई थी। लेकिन उनका नियम कैसे टूटता! कुंडी-में सोटेका घोटा लगाते समय उनको नींदके झोंके आ रहे थे। रात बड़ी देर तक पीपलवाले महादेव-के नीचे नौटंकी सुनते रहे थे और दिन निकलनेसे पहले ही लंबी लंबी डग भरते हुए कामपर चले गए थे। बालमंडली तो ऐसे अवसरकी ताक लगाए रहती है। भंगेड़ी चाचा नींदकी झोंकमें झूमते हुए कुंडीमें घिस्सा लगा रहे थे और मुन्ना बादामोंकी कटोरीमेंसे अपने हिस्सेके बादामोंका सफाया कर रहा था। भंगेड़ीने सोता-नींदीमें जब बादामकी कटोरीमें हाथ डाला, तो वहां सफाया था। भंगेड़ीने जमुहाई लेकर, चुटकी बजाकर और आंखें फाड़कर बादामकी कटोरी-की ओर देखा, तो मुन्नाका नन्हा-मुन्ना हाथ बादा-मोंका छिलका उतार रहा था। चाचा निहाल हो गए। मुन्नाने कहा, "भंगेड़ी चाचा, आज बादाम बहुत कम हैं, लगता है रात चूहे चट कर गए!"

"मुझे मालूम है, बेटा, मेरे बादामोंकी कटोरी पर किस किस चूहेका दांत है!" भंगेड़ी चाचाने कुंडीमें खरबूजेकी गिरी और गुलाबकी पंखुड़ियां डालकर पानीका छींटा देते हुए कहा।

इधर मुन्ना और भंगेड़ी चाचा बातोंकी भंग घोट रहे थे, उधर डब्बू दूधमें शक्कर घोलकर साथियोंका गला तर कर रहा था। चाचाकी भंग-में पूरा घोटा लग चुका था, बस अब दूध और शक्कर डालनेकी देर थी। जान बूझकर डब्बू झप-टता हुआ चाचाके पास आया और 'ऊंऊं' करके रोने लगा। चाचा घबराए। "क्या बात है, बेटा डब्बू?"— कहकर धीरज बंधाया, तो वह और जोरसे रोने लगा। झपटकर आनेमें उसने दूधका बर्तन लुढ़का दिया था।

"ऊं ऊं-ऊं, चाचा, बिल्ली दूधके बर्तनपर कूद पड़ी और सारा दूध बिखर गया। आज आपको सूखा गोला चढ़ाना पड़ेगा," कहकर डब्बू फिर रोने लगा।

कुंडीमें घोटा लगाते हुए भंगेड़ी चाचाने उसे अंटीमेंसे निकालकर एक रुपया दिया और दूध लानेको कहा। डब्बू तो दूध लेने चला गया लेकिन सारीकी सारी बालमंडली चुप थी। चाचाका माथा ठनका कि जरूर कुछ दालमें काला है।

'अरे बेटा चुन्ना, शक्कर तो ला'—का हुक्म सुनकर पूरी वानर सेनाको सांप सूंघ गया। मुन्नाने आगे बढ़कर कहा, "भंगेड़ी चाचा, बादामका चूहोंने सफाया किया था, शक्करको चींटे चाट गए!"

"और दूध—?" चाचाने चौंककर पूछा।

"उसे तो बिल्ली लुढ़का गई थी, डब्बू लेकर आता ही होगा। लेकिन, चाचा, आप बिना दूध और शक्करका गोला भी तो चढ़ा लेते हैं, आज वही सही!"

दांत भींचते हुए भंगेड़ी चाचाने चाहा तो था

और यह लो 'ठोस कार्टून'

(पहले कुछ चीजें ही ठोस हुआ करती थीं, फिर ठोस बातों और ठोस वादोंका युग आया, फिर यही ठोस कविताके रूपमें उभरा (अभी ठोस कहानी लिखनेकी ओर किसीका ध्यान नहीं गया है!); और अब श्री सत्यस्वरूप दत्तने 'पराग', 'धर्मयुग', 'माधुरी', 'फेमिना', 'टाइम्स आफ इंडिया' आदिकी कतरनोंको 'ठोस कार्टून' का रूप दिया है—है न मजेदार! —संपादक)

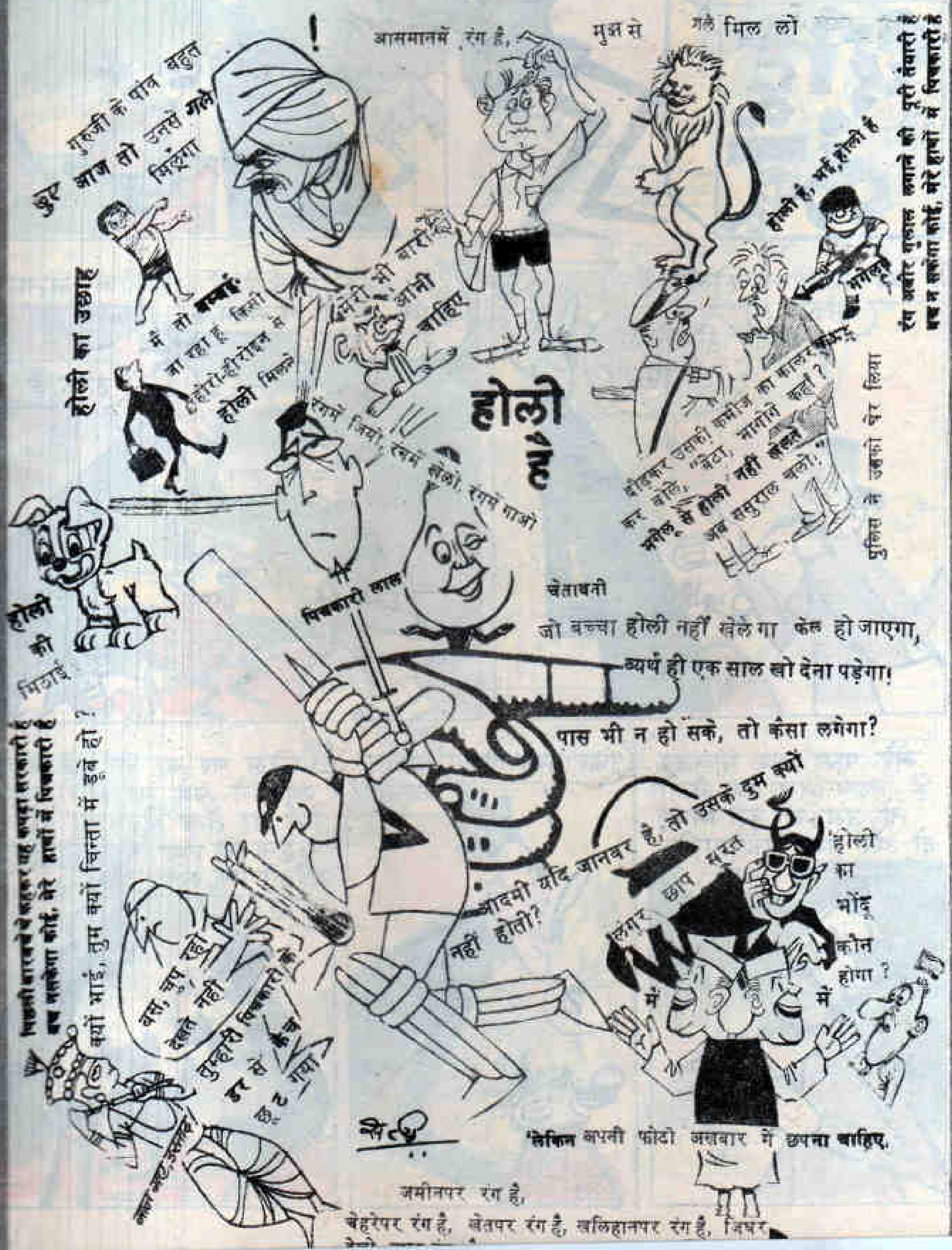

www.kissekahani.com

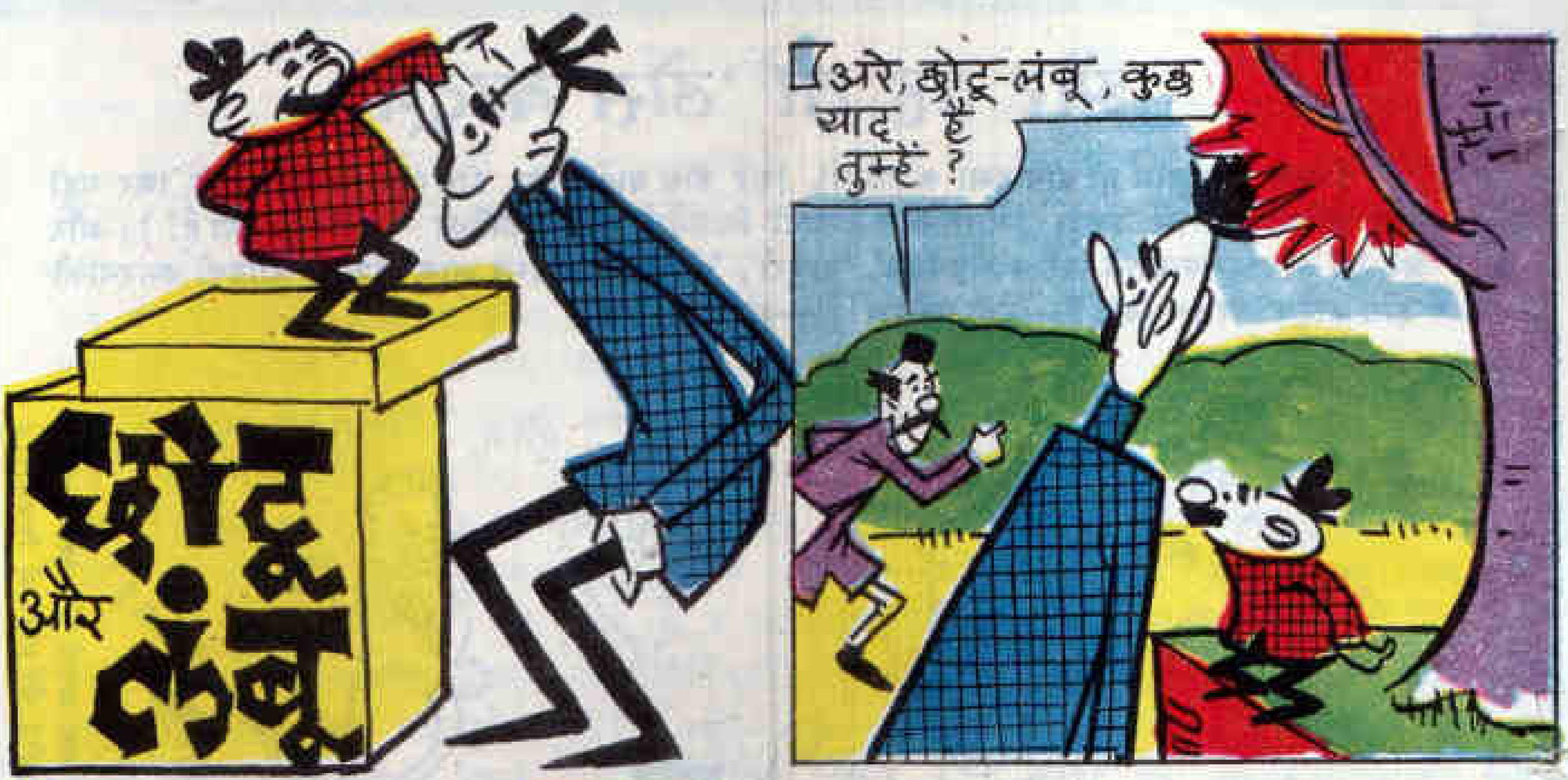

तेल लगाते ही सब को आराम हो जाएगा और इस 'काम' से जो लाभ होगा, हम बांट लेंगे!

मंजूर है!

होली के दिन...

होली की बहार है!

छोटू-लंबू का रंग पड़ते ही भीड़ में हलचल मच गई!

हां, तो, भाइयो, खुजली का तेल एक रुपये में!

इन की तो ऐसी-तैसी, बढ़-कर छीन लो सारा तेल!

रंग भी छीन लो!

और फिर...

लो, यह रहा तेल!

और रंग...?

और यह रहा तुम्हारा रंग!

अगर तेल की जरूरत हो, तो जल्दी बोलो, सस्ते में देंगे— दस रुपये की एक शीशी!

मर गए, मर गए!

शोहाब

बम्बईकी नगरपालिकाकी ओरसे एक बच्चे-को नोटिस प्राप्त हुआ कि उसने अपने कुत्तेके लिए जो लाइसेंस लिया था उसकी अवधि समाप्त हो चुकी है।

उस बच्चेने उस नोटिसको यह लिखकर लौटा दिया कि दो महीने हुए नगरपालिकाकी बसके नीचे आ जानेसे उस कुत्तेकी जीवन-लीला भी समाप्त हो चुकी है!

•

एक किसान बालक दूसरे बालकसे : "अबकी बार तो हमारे खेतमें एक पांच फुट लंबा भुट्टा पैदा हुआ, लेकिन मैंने उसे यह सोचकर फेंक दिया कि कोई मेरी बातका विश्वास नहीं करेगा!"

•

दो सरकारी कर्मचारियोंने देखा कि नावके मालिककी जगह उसका दस वर्षीय पुत्र नावपर बैठा है। उन्होंने रोब जमाकर उसे मुफ्तमें नदीके पार जानेके लिए बाध्य किया। नाव जैसे ही मंझ-धारमें पहुंची कि बालकने नाव रोककर कहा, "मेरे किरायेके पैसे दे दो, नहीं तो मेरा बाप मारेगा!"

•

चित्र-प्रदर्शनीमें एक दर्शक अपने मित्रसे : "समझमें नहीं आता, इन लोगोंने इस चित्रको यहां रस्सीसे क्यों लटका रखा है?"

"शायद इसलिए कि उन्हें लटकानेके लिए इस चित्रका बनाने वाला नहीं मिला!"

•

एक विद्यार्थी वक्ता भाषण करके मंचसे उतरा, तो उसने अपने मित्रसे पूछा, "क्यों, भाई, कैसा रहा मेरा भाषण?"

मित्रने कहा, "मुझे तुम्हारे भाषणमें सिर्फ तीन कमियां नजर आईं—एक तो यह कि वह लिखकर पढ़ा गया, दूसरे वह पढ़ा भी गया तो भौंडे ढंगसे और तीसरे वह पढ़ने योग्य ही नहीं था!"

•

बम्बई में पैदल चलने वाले इस प्रकार चलते हैं जैसे सड़क उन्हींकी हो, और कुछ लोग मोटर इस तरह चलाते हैं, जैसे वे ही मोटरके मालिक हों!

•

पागलखानेके बड़े डाक्टरने एक पागलसे जब उसका नाम पूछा, तो उसने अपनेको सिकन्दर बताया।

"सिकन्दर? लेकिन कुछ दिन पहले तो तुम अपनेको नैपोलियन बताते थे?" बड़े डाक्टरने कहा।

"नैपोलियन? अरे वह तो मेरी बीवी है!"

•

अध्यापक : "देखा तुमने, न्यूटनने बागमें पेड़से गिरता हुआ सेब देखा और पृथ्वीकी आकर्षण-शक्तिकी खोज कर डाली।"

विद्यार्थी : "जी, अगर वह स्कूलकी क्लासके अंदर बैठा किताबोंमें दिमाग खपाता, तो यह खोज कभी न कर पाता!"

•

पिता : "बेटे, तुमने बड़ा अच्छा काम किया कि केलेके छिलके ट्रेनके डिब्बेके अंदर नहीं फेंके। पर तुमने क्या किया उनका?"

पुत्र : "पास बैठे मुसाफिरकी जेबमें चुपके-

से रख दिए सबके सब!"

●

एवरेस्टपर चढ़ाई करने वाले दो दलोंमेंसे एक दलके सदस्यने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा, "जब हम २८ हजार फुटकी ऊंचाईपर पहुंचे, उस समय इतनी ठंड थी कि जलती हुई मोमबत्तीकी लौ जम गई और हम उसे लाख कोशिश करनेपर भी बूझा न सके!"

"यह तो कुछ भी नहीं," दूसरे दलके सदस्यने कहा, "जिस स्थानपर हम पहुंचे थे वहां ठंड इतनी थी कि हमारे बोले हुए शब्द ही जम गए। नीचे कैम्पमें आकर हमने उन्हें स्टोवपर गर्म किया, तब कहीं पता चला कि हम क्या बोल रहे थे!"

●

एक मोटे साहब डींग मार रहे थे, "मैं मोटा हुआ तो क्या हुआ, मैं वे सभी काम कर सकता हूं, जो एक नन्ही चिड़िया कर सकती है।"

एक साथीने टोका, "गलत।"

मोटे साहब : "रही शर्त।"

साथी : "चिड़िया एक तश्तरीमें नहा सकती है, तुम भी ऐसा करके दिखाओ!"

●

एक कबाड़ी की दूकानपर लगा बोर्ड :

विश्व के तीन आश्चर्योंकी दूकान —

१—आपका आश्चर्य : कि आपकी हर जरूरतकी चीज यहां मौजूद है।

२—मेरा आश्चर्य : कि वह चीज कहा रखी होगी!

३—सबका आश्चर्य : कि मैं उस चीजको कैसे ढूंढ़ निकालता हूं!

●

टण्डन

जांची हुई परीक्षाकी कापियोंको विद्यार्थियोंको लौटाकर अध्यापकने कहा, "किसीको कुछ पूछना तो नहीं है?"

"जी, मुझे पूछना है," एक विद्यार्थीने खड़े होकर कहा, "आपने मेरी कापीके अंतमें जो लिखा है उसे मैं पढ़ नहीं पा रहा हूं . . ." और उसने कापी अध्यापकके सामने रख दी।

"नालायक कहीं के। इतना भी नहीं पढ़ सकते। यही तो लिखा है कि साफ साफ लिखनेकी आदत डालो!"

●

तुमने जो मधुमक्खियां पाल रखी हैं उनसे कुछ लाभ भी हुआ?"

"अवश्य, डरके मारे अब मेरे यहां मेहमानोंका आना बिलकुल कम हो गया है।"

●

पिता : "आज सवेरे तुम्हारी मौजूदगीमें चंदू होली खेलनेके बहाने छोटे छोटे बच्चोंके साथ मार-पीट कर रहा था, बुरी बुरी गालियां बक रहा था, फिर भी तुमने इसकी शिकायत मुझसे नहीं की?"

पुत्र : "जी, बात यह है कि अब मैं गांधीजीके गुरु तीन बंदरोंके तीनों उपदेशों—बुरा देखो मत, बुरा सुनो मत, बुरा कहो मत—का अक्षरशः पालन करता हूं!"

●

लड़का : "पिताजी, जब किसी क्रिकेटके खिलाड़ीकी नजर कमजोर हो जाती है, तो फिर वह क्या करता है?"

पिता : "तब उसे 'अम्पायर' बना दिया जाता है!"

●

एक दोस्त : "क्या तुम्हारे गांवमें ऐसा ऊंट भी है जो घोड़ोंसे दौड़में आगे रहे?"

दूसरा : "ऊंट तो नहीं, अलबत्ता एक ऐसा घोड़ा जरूर है जो दौड़में ऊंटसे भी पीछे रहेगा!"

●

एक दांतके डाक्टरकी दूकानपर लगा बोर्ड : एक दांत निकलवानेके दो रुपये। बत्तीसी निकलवानेपर काफी रियायत दी जाएगी!"

●

www.kissekahani.com

हास्य कहानी

नया सदस्य सम्मेलन

नौरंगीमल हलवाईने भोला और उसके साथियोंको चंदेके नामपर कुछ देना तो दूर, उल्टे बुरी तरह दुरदुरा दिया। साफ कह दिया कि उन्हें होलीका हुल्लड़ कतई पसंद नहीं। वह इससे बहुत नाखुश थे कि जिसका जी चाहे, ऊंट-की तरह गरदन उठाए चला आए कि चंदा दो, चंदा दो।

भोला इसपर अकड़ने वाला ही था लेकिन चंदू और छेदा उसका हाथ पकड़ उसे खींच लाए। भोलाको नौरंगीलाल हलवाईका बरताव बुरा लग रहा था। उसने गुस्सेके मारे अपनी रंगकी बोतल और पम्प पटक दिया।

छेदाने उसका गुस्सा शांत करनेके लिए कहा, "भोला, तुम भी किसके ऊपर नाराज हो रहे हो; यह नौरंगीलाल बहुत काइयां है, एक पैसा नहीं देगा।"

चंदूने भी समझाया, "नौरंगीमलको होली-से बहुत चिढ़ है, भोला। गोकुलने सवेरे उसपर रंग छोड़ा भी नहीं था, छोड़ने वाला ही था लेकिन इसने उसकी रंगकी बाल्टी लुढ़का दी और तमाचा दिखाकर बोला—खबरदार जो मुझपर रंग डाला।"

भोला चुपचाप बैठा सुनता रहा। उसने कोई जवाब नहीं दिया। वह कुछ सोच रहा था।

छेदाने फिर कहा, "अरे, मारो गोली, एक नहीं हजार हैं चंदा देने वाले। देखते रहो,

आसमानको छूती हुई अपनी होली जलेगी, मुहल्ले भरमें सबसे ऊंची होगी।"

भोला बोला, "चंदेकी मैं परवाह नहीं करता। लेकिन उसका व्यवहार मुझे बिलकुल पसंद नहीं आया। क्या हम उससे भीख मांगने गए थे? उसे मजा चखाना ही होगा।"

हरभजन बोला, "नहीं, भई, जरा-सी बात-का बतंगड़ बनानेसे कोई फायदा नहीं। चलो चलें, अपना काम जारी रखें।"

भोलाने दांत पीसकर कहा, "तुम लोग जाओ। मैं अब खुद ही देख लूंगा। पच्चीस रुपये टेंटसे न ढीले करवाए, तो भोला नाम नहीं!"

चंदू बोला, "मैं तुम्हारे साथ हूं, लेकिन करना क्या होगा, बताओ। मगर एक बात समझ लो, नौरंगी ऐसा तिल है जिसमेंसे तेल निकाल लेना बहुत कठिन है।"

"देखते रहो, वह सबसे ज्यादा चंदा देगा; अभी तक जो होलीसे चिढ़ता है वह आगेसे दूने जोशसे होली खेलेगा।"

"यह बात! तो हम सब तुम्हारे साथ हैं," छेदाने कहा।

भोलाने चंदूको कानमें तरकीब बताई। चंदूने कहा, "कोई बात नहीं, देख लेते हैं कि हम कितने रंगमें हैं और वह कितने धीमें है!"

—दीप

शामके वक्त लाला चम्पकलाल नौरंगीलाल-की दूकानपर पहुंचे। बातचीत हुई। चम्पकलाल-ने कहा, "भाई, बच्चे एक सम्मेलन करना चाहते हैं और उसका सभापति तुम्हें बनाना चाहते हैं।"

नौरंगीलालने बच्चोंके सम्मेलनकी बात सुनी, तो उनके कान खड़े हुए। पूछा, "कैसा सम्मेलन?"

"अब यह तो पता नहीं। बच्चे हैं, होली-का जोश है, क्यों नहीं सभापति बनना मंजूर कर लेते।"

सभापति बनना गौरवकी बात है। नौरंगी-लाल मन ही मन तो तैयार हुए, लेकिन ऊपरसे ना-नुकुर करते हुए बोले, "भई, मुझे यह रंगबाजी पसंद नहीं। कोई लंगूरकी शकल बनाता है, तो कोई भालकी। मैं सभापति नहीं बननेका।

"अरे, सम्मेलन रातके समय होगा। उस

आइए,
ऐसे पेय का
सेवन करें
जो मन को तृप्ति
प्रदान करते हैं।
गोल्ड
स्पॉट
Gold Spot

समय रंगका क्या सवाल है। और मान लो, दो छींटे पड़ भी गए, तो क्या हुआ! . . .तो बच्चों-से कह दूं, तुम मान गए?"

"अब तुम कह रहे हो, तो माने लेता हूं। लेकिन रंग नहीं पड़ना चाहिए, दूसरे गंदी हरकतें नहीं होनी चाहिएं," नौरंगीलालने कहा।

●

निश्चित समयपर नौरंगीलालजी चमचम करता चूड़ीदार पाजामा और अचकन पहने सम्मेलनमें पहुंचे, तो भोला और चंदूने उनका लपककर स्वागत किया। मंचपर पांच कुर्सियां और एक बड़ी मेज पड़ी थी। अन्य लोगोंके लिए जमीनमें दरियां बिछाई गई थीं।

नौरंगीलालजीको ले जाकर भोलाने मंच-पर बीचकी कुर्सीपर बिठाया। वह जैसे ही बैठे एक साथ जोरसे दो फचाकोंकी आवाज हुई। बहुत होशियारीसे प्लास्टिककी दो थैलियोंमें रंग भरकर उन्हें कुर्सीपर लगाया गया था। एक थली सीटपर और दूसरी कुर्सीकी पीठपर फिट थी।

नौरंगीलाल थैलियोंमें भरे रंगसे सराबोर हो चुके थे। रंग भी नीला और बगनी था। वह लपककर चलनेको हुए। सम्मेलनमें उपस्थित लोग 'हो-हो' करके हंस रहे थे। नौरंगीलालका पारा चढ़ चुका था। भोला और चंदूने उन्हें रोका। उन्होंने फुसफुसाकर कहा,—"देखिए, लालाजी, सब हंस रहे हैं, अगर आप गुस्सेमें चले गए, तो वे लोग हमेशा आपकी मजाक उड़ाते रहेंगे। आप भी हंसिए, और जोरसे हंसिए ताकि लोग इस होली तक ही याद रखें।"

बात उनकी समझमें आई। वह हंसे, जोरसे हंसे। अंदरसे गुस्सेमें भभक रहे थे और ऊपरसे हंस रहे थे।

भोलाने बाजी मार ली। इसे कहते हैं अकल-मंदी—नौरंगीलालसे होली भी खेल ली और नाराज भी नहीं होने दिया। लेकिन अभी तो शुरूआत है।

चंदूने ताली बजाई। जोकरका रूप धारे छेदा और हरभजन कंधेसे कंधा मिलाए मंचपर आए। छेदाके बाएं हाथमें और हरभजनके दाएं हाथमें एक एक लाठी थी। लाठीके ऊपरी भागमें लाल कपड़ा लिपटा हुआ था। उन दोनोंने एक-दो मिनिट जोकरीकी, फिर दोनों मंचके अलग अलग सिरोंपर जा खड़े हुए। लोगोंने देखा लाठियोंमें लिपटा कपड़ा तन गया है और उसपर रूईसे लिखा है—'महामूर्ख सम्मेलन!'

जोरोंका ठहाका लगा। नौरंगीलालको कपड़ेपर लिखा नहीं दिखाई दिया, वह तो श्रोताओंकी तरफ था। उन्होंने लोगोंको हंसते देखा, तो पूछा, "ये लोग क्यों हंस रहे हैं?"

भोला भोलेपनसे बोला, "सब मूर्ख हैं जी!"

हरभजन दूरसे ही जोरसे बोला, "मूर्खोंका सभापति कौन है?"

छेदा बोला, "महामूर्ख!"

नौरंगीलाल ताव खा गए। बोले, "क्या मतलब, मैं महामूर्ख?"

भोला और चंदू बहुत सरल भाव बनाकर बोले, "जी, सभापतिजी, हम लोग मूर्ख लोगों-का महामूर्ख सम्मेलन कर रहे हैं!"

इससे पहले कि नौरंगीलालजी कुछ कहें, भोला श्रोताओंकी तरफ रुख करके बोला, "मूर्खा-धिराजो, यह तो आप जानते ही हैं कि होलीका

होली छाप . . .

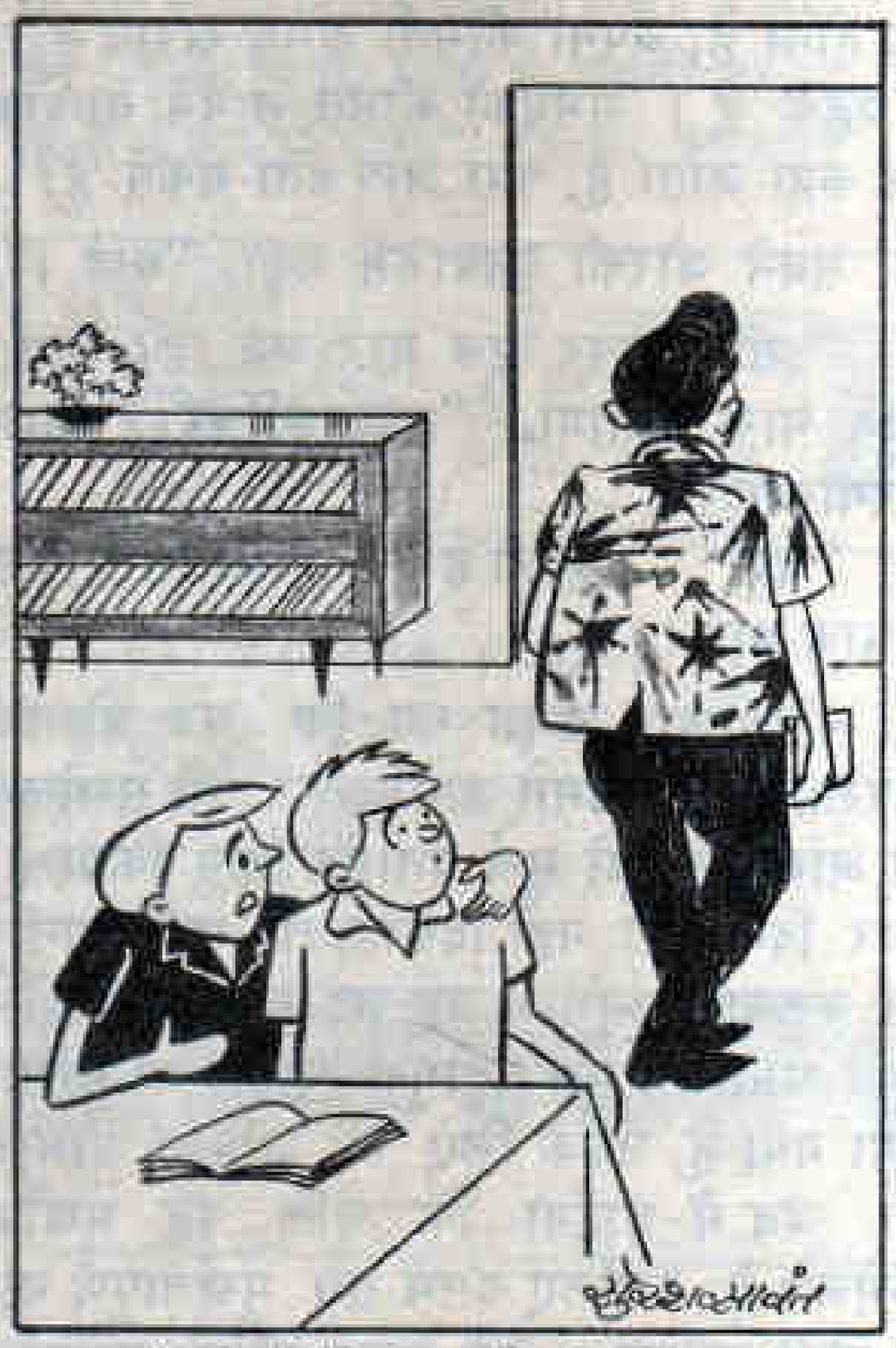

"भई, रंगोंके ये छींटे होलीके नहीं है, बुश्शर्ट ही होली छाप है!"

होली की ठिठोली

चलो, साथियो, डालो फंदा,
झटपट लो होली का चंदा;
ना दे उसके मलो गुलाल,
डालो रंग, कर दो बेहाल!

—प्यादराम 'रसेंद्र'

मौका किसी भी बातका बुरा माननेका नहीं होता। इसलिए आप अपनेको मूर्ख कहे जानेपर नाराज न हों; क्योंकि आप सब, बिना यह जाने कि यहां क्या होना है, अपना कीमती समय खराब करने आ पहुंचे हैं। समयको कीमत न देने वालोंको क्या कहा जाता है, क्या आप बता सकते हैं?

सबने जोरकी आवाजमें कहा, "मूर्ख।"

"इसी बातपर एक बार जय हो जाए," चंदूने नारा लगाया, "महामूर्खाधिराज लाला नौरंगीलालकी. . ."

"जय! . . .होली है!" सबकी मिली-जुली आवाज आई।

नौरंगीलाल समझ गए कि सब भोलाकी कारस्तानी है। उसने जानबूझकर ऐसे सम्मेलन-का आयोजन मुझे मूर्ख बनानेके लिए किया है। अगर दिलचस्पी नहीं दिखाई, तो सही मानीमें मूर्ख कहलाने लगूंगा। वह उठ खड़े हुए। बोले, "मूर्ख श्रोताओ, मुझे महामूर्ख कहकर जो सम्मान दिया गया है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। अब मैं चाहूंगा कि चूंकि यह मूर्खोंका सम्मेलन है इसलिए इसमें सब मूर्खतापूर्ण बातें ही होनी चाहिएं। जो सबसे अधिक मूर्खताका कार्यक्रम पेश करेगा, या जो दूसरोंको सबके देखते देखते मूर्ख बना सकेगा, उसे मैं अपनी दूकानकी आधा सेर मिठाई खिलाऊंगा।"

•

कार्यक्रम शुरू हुए।

चम्पकलाल सबसे पहले आए, उन्होंने पूछा, "बताओ वह कौन-कौनसी चीजें हैं, जो बिना पैरके चलती हैं, जीभ नहीं हैं फिर भी बोलती हैं?"

"गलत बात, ऐसा हो ही नहीं सकता।"

जब किसीने नहीं बताया, तब सभापतिजीके इशारेपर चम्पकलालने ही बताया: "रुपया-पैसा बिना पैरके चलता है, रेडियो बिना जीभके बोलता है!"

उसके बाद छेदा आगे आया; बोला, "मैंने एक दिन पैंट और कमीज पहने हाथी देखा, आपने देखा है क्या?"

सब लोग अचकचा गए—"गलत बात, हाथी कमीज और पैंट नहीं पहन सकता। ऐसा झूठ मूर्ख भी नहीं बोलेगा।"

छेदाने सरलतासे कहा, "मैंने कब कहा हाथी कमीज-पैंट पहने था, वह तो मैं पहने था। मेरे शब्दोंपर ध्यान दें— मैंने एक दिन पैंट और कमीज पहने हाथी देखा—यानी जब हाथी देखा तब मैं कमीज और पैंट पहने हुए था!"

सब मान गए।

अब चंदूकी बारी थी—बोला, "भाई लोगो, क्योंकि मुझे कुछ कहना है इसलिए ऐसी बात कह रहा हूं, जो बहुत आश्चर्यजनक है। वह है:

चींटा चला ससुरालको पीकर नौ मन तेल,
हाथी-घोड़ा बगलमें दाबे, सिरपर रखी रेल!
चींटी मली पहाड़पर, खींचन चले चमार,
सौ जोड़ी जूते बने, फिर भी बच गई खाल!"

चंदूकी गप्पोंका दौर सबको अच्छा लगा। फिर भोलाका नंबर आया। वह बड़ी सादगी-से बोला, "भाइयो, मेरे पास ऐसा कुछ नहीं है जिससे आप सबको या सभापतिजीको मूर्ख बनाऊं और आधा सेर मिठाईका इनाम जीतूं। हां, एक खुशीकी बात बताता हूं—सभापतिजीने यानी नौरंगीलालजीने हमें होलीके चंदेके रूपमें पच्चीस रुपये देनेका वायदा किया है। हम उनके शुक्र-गुजार हैं।"

(शेष पृष्ठ ६० पर)

एक बालक की अभिलाषा

• बेढब बनारसी

दुनिया के सब दृश्य देख हम थक जाते हैं,
वही वही बातें सब जगह नित्य पाते हैं,
हम हैं नए, नई दुनिया में नई बात हो;
हमको शिक्षक-संरक्षक सब भरमाते हैं!

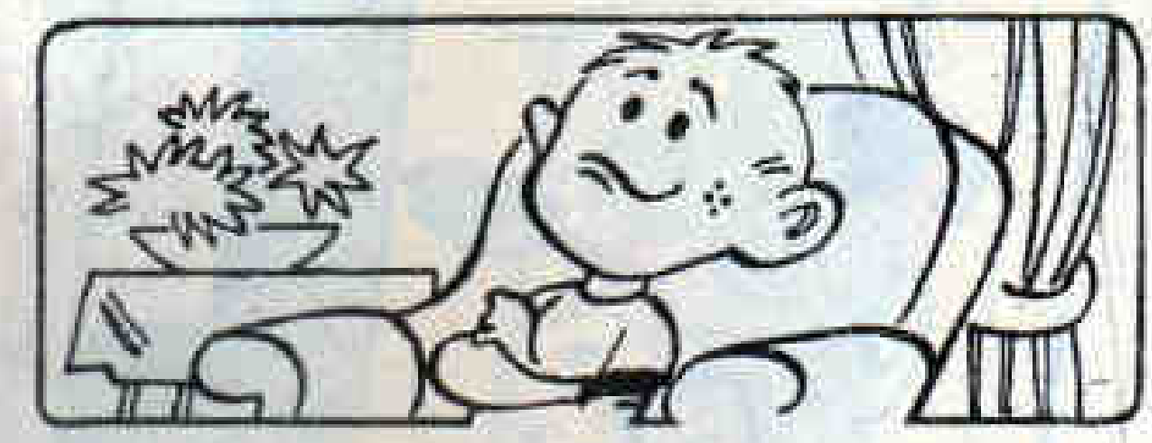

एक मलाई का होता तालाब मनोहर,
घर के पास जहां छुट्टी में रहता दिनभर,
बैठ किनारे खूब मलाई खाया करता;
बाबूजी को ला देता थोड़ी पत्ते पर!

गिरि पर आइस-क्रीम पिघलती, सोता बहता,
रसगुल्ले, तो कभी क्रीम में खाता रहता।
रसगुल्ले में कभी फेंक देता धरती पर,
लूट लूट कर खाने को मैं सबसे कहता।

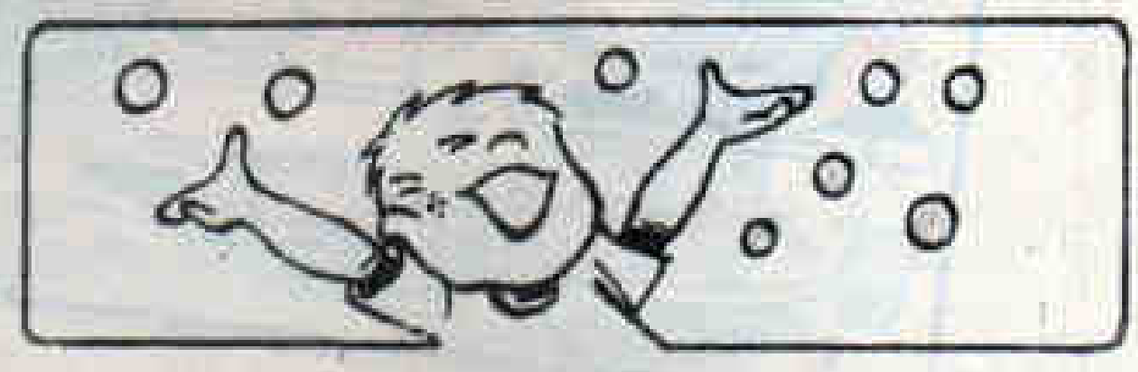

मोटरकार मुझे कोई ऐसी मिल जाती,
जो घर के भीतर तक मुझको लेकर आती!
वह पेट्रोल बिना, पानी से चलती रहती,
मित्रों के घर में मुझको वह सैर कराती!

एक रेडियो मेरे घर ऐसा आ जाता—
गुरुजी कल पूछेंगे क्या, मुझको बतलाता;
मैं कक्षा में हो जाता तब सबके ऊपर,
बाबूजी सुनते, इनाम मैं उनसे पाता।

परी कहीं से आ जाती संध्या को घर पर,
मैं सवार हो जाता झट उसके पंखों पर!
कहता उससे—मुझे चंद्रमा पर पहुंचा दो,
चांदी के टुकड़े बटोर लाऊं अपने घर!

रूस और अमरीका सब पीछे रह जाते,
राकेट अपने इधर-उधर बेकार उड़ाते,
वापस आकर इधर-उधर घूमता अकड़ कर,
बड़े बड़े कालेज मुझसे लेक्चर करवाते!

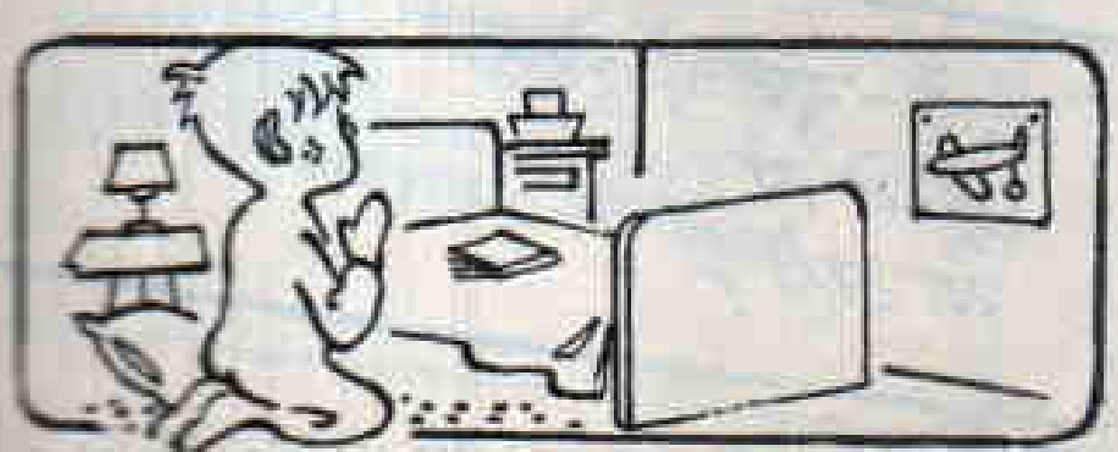

मुझे देवता मिले, मांग से पाकेट भर दे,
जो अभिलाषाएं हों मेरी पूरी कर दे,
और किसी देवता से नहीं मुझको मतलब;
हे भगवान, कभी तो मुझको तू अवसर दे!

होली के अवसर पर —

हप्पू का

"कहता है जब तक पिताजी का मुंह लाल नहीं करूंगा, खाऊंगा नहीं!"

"अच्छा, बूझो तो कौन है हप्पू?"

"बोलो — पुरानी दुश्मनी भूलते हो या नहीं?"

होली

"ठहरो, पप्पू, मैं नहा आऊं, फिर खेलेंगे होली!"

"कहा नहीं था, लाला जी हर साल इसी तरह नकली बुरी बातों की होली जलाते हैं?"

"कल तो होली की छुट्टी है। यह आज ही करना पड़ा। चलो जल्दी करो मास्टर जी पढ़ाने आते ही होंगे

होलीके अवसरपर एक रहस्योद्घाटन :

संपादक दादा के नाम

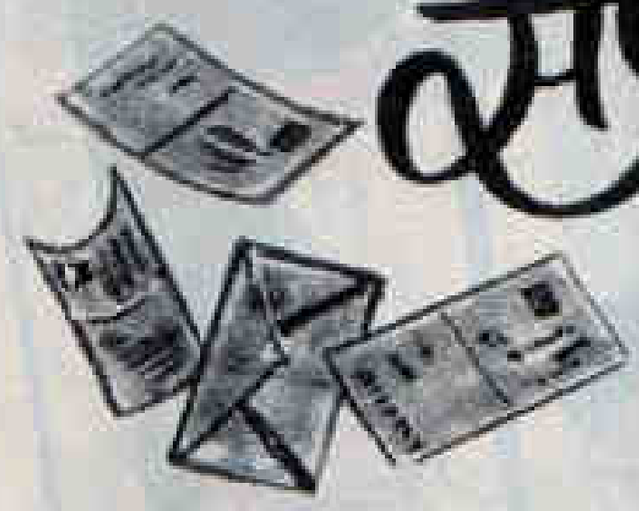

(बच्चो, संपादक दादाके नाम रोज ही डाकसे तुम्हारे ढेरों पत्र आते हैं— सभी तरहके पत्र। कुछमें शिकवा-शिकायत होती है, कुछमें संपादक दादाकी दाढ़ीके कुशल-समाचार जाननेकी उत्सुकता। यहां तक तो ठीक, लेकिन कुछ पत्र निहायत मजेदार होते हैं। उनमेंसे कुछको हम नमूनेके रूपमें छाप रहे हैं। पर ये वे पत्र नहीं हैं जो तुमने भेजे थे, बल्कि उसी शैलीपर लिखे हुए नकली पत्र हैं।

—संपादक)

पराणोंसे पयारे संपादक दादा,

हमें पराग बहोत अच्छा लगता है। पर हम सोला बरसको होके सत्रवेंमें लग लिए। हमें बहोत दुख है के हम परागके मेम्बर नहीं रहे। हमें कविताका बहोत सौंक है। बड़े मुसकिलसे एक कविता चुराके भेज रहे हैं। अगर ना छापी, तो हम 'पराग' छोड़ाके '————' पढ़ने लगेंगे।

आपका पोता,

... ...

पिरये महोदेय,

किया कारन है के आप मेरे प्रश्नोंका उत्तर नहि देते। किया कारन है? आपकी रद्दीकी टोकरी है के टोंकरा? जो प्रश्न आप छापे रहे 'पराग' में, वो ही तो हम भेजे रहे। फेर भी ना छापे। अगर अब भी अगले 'पराग' में ना छापे, तो हम गाली देना भी जानें, बस बता दिया।

आपका,

... ...

पूज्य संपादक दादा,

योंकि आप मेरे किसी पत्रपर ध्यान नहीं देते, इसलिए यह पत्र बैरंग भेज रहा हूं। जब जेब-से पैसे निकलेंगे तब तो ध्यान रहेगा ही। मैं यह पूछना चाहता हूं कि मैं कहानी-कविता-लेख लिखनेका शौकीन हूं। तो मैं इन्हें किस पतेपर भेजूं?

आपका छोटा भाई,

... ...

आदरणीय संपादक जी,

मैं इस पत्रके साथ एक कहानी, जो मैंने स्वयं अपने हाथोंसे लिखी है, भेज रहा हूं। अगर यह कहानी आपने कहीं किसी दूसरेकी लिखी हुई पढ़ी हो, तो समझना कि उसने मेरी नकल की है। मैं यह कहानी कई पत्र-पत्रिकाओंमें छपवा चुका हूं और इसकी खूब प्रशंसा हुई है। तभी मैंने सोचा कि अपने प्यारे 'पराग' में भी छपवाऊं। अगर न छापें तो वापस न लौटाएं। मेरे साथी और सह-पाठी मेरी खिल्ली उड़ाते हैं।

अच्छा तो बस —

आपका,

... ...

प्रिय संपादक जी,

मैंने सुना है कि आप उन्हीं बच्चोंकी कहानी-कविता 'पराग' में प्रसिद्ध करते हैं जो आपको रिसवत देते हैं। यह भरष्टाचार अच्छा नहीं। आपने ———— अंकमें जो —— नामकी कहानी छापी, वह कोरी बकवास थी। उससे अच्छी बकवास तो मैं ही लिख लेता हूं। आप लिखिए कहानी छपवानेका क्या लगेगा। मैं अपनी कहानीके साथ पैसे भी भेज दूंगा। उत्तर जरूर दीजिए।

आपका,

... ...

तुम्हारे नकली असली पत्र

● टी० एन० मिश्र

प्यारे संपादक बाबा,

'पराग' का यह अंक पढ़कर दिल बाग बाग हो गया। आप पराग बहुत बढ़िया छापते हैं। एक कहानी पढ़कर हंसता हूं, दूसरी पढ़कर रोता हूं। और चित्र तो इतने अच्छे कि देखता ही रहूं। आप बड़े बड़े नाम नहीं देखते, चीज देखते हैं। इसीसे प्रोत्साहन पाकर मैं अपनी कहानी भी भेज रहा हूं। अगर आपने अपनी रजामंदी भेजी और कहानी छापी, तो मैं समझूंगा कि आप बड़े कदर-दान हैं।

बहोत बहोत शुकरिया —

आपका भवदीय,

... ...

प्यारे दादा,

जिस लिफाफेमें चिट्ठी निकली है न, उसीमें गुलाल है। इसे आप अपने दोनों गालोंपर मल लें और शीशेमें शकल देखें। कैसी लगती है?

होली है, भई, होली है!

मेरी कविता कब छापोगे? मैं लिख कर भेजने ही वाला हूं।

आपका दास,

... ...

संपादक पराग,

आपने मेरी रचनाएं वापस करते हुए लिखा है कि 'इस तरहकी बेतुकी नोटोंको लगानेका कष्ट न करें, जैसा कि आप एक कवितामें लगाए हैं।' मैंने कोई 'बेतुकी' बात नहीं लिखी है, इसका प्रमाण मेरी कविताके नीचेका लेख है।

अतः आप उत्तर दीजिए कि आपने क्यों मुझे इस तरहका अनौपचारिक शब्द लिखा है? १५ जनवरी '६७ तक वांछित उत्तरकी प्रतीक्षा की जाएगी, आपके उत्तरके अभावमें यथोचित विचार किया जाएगा।

आपका,

... ...

प्यारे भाई,

मैंने 'पराग' देखा तो पता चला आप भी 'दादा' हैं। मैं भी अपने स्कूलमें बच्चोंका 'दादा' हूं। सब बच्चे हमारे अन्डरमें रहते हैं। आप अच्छे 'दादा' हैं क्योंकि आपने भी परागके जरिए बहुत सारे बच्चोंको अपने अन्डरमें कर रखा है।

मगर दोमेंसे एक ही 'दादा' रह सकते हैं। मास्टरजी ने पढ़ाया था—एक जंगलमें दो शेर नहीं रह सकते। तो दो 'दादा' कैसे रह सकते हैं? मैं हर हालतमें आपसे बड़ा 'दादा' हूं, क्योंकि मैं अपने स्कूलके बच्चोंको आपका 'पराग' पढ़नेसे रोक सकता हूं। अब बोलो आप बड़े 'दादा' कि हम? लेकिन अभी तो हम दोनों चोर-चोर मौसेरे भाई हैं। जल्दी चिट्ठी लिखकर कबूल करो कि मैं ही बड़ा 'दादा' हूं, ताकि अपने स्कूलके लड़कों-पर मैं अपना और ज्यादा रोब जमा सकूं।

अभी तो आपका,

... ...

ब्रज की होली

रंग, उमंग समाई रहै,
रसमोई रहै ब्रज की बरजोरी।
सील-सनेह सनी सरसानी,
रहै सदा राधिका-श्याम की जोरी।
बाल-गुपाल बिहार करै,
नित कुंज-कुटीर छए ब्रजखोरी।
पौरी सदा रंग धारी रहै,
चिरजीवी रहै ब्रज की रंग होरी।

कुंज निर्माण : सुशीला रानी पटेल

डैडी, आप क्या लिख रहे हैं?

चैक है ,बेटा।

चैक क्या होता है?

यह बैंक के नाम आदेश है कि अमुक व्यक्ति को रुपया दे दो। मुझे कुछ किताबें खरीदनी हैं। दुकानदार को रुपये की बजाय चैक ही भेज दूंगा। वह इसे अपनी बैंक में जमा करा देगा। उसकी बैंक इसे हमारी बैंक से भुना लेगी। चैक रुपये का काम करेगा। और यह तरीका सुरक्षित भी है। चैक का रुपया केवल उस दुकानदार को ही मिलेगा। चैक खो भी जाय, फिर भी हमारा रुपया सुरक्षित है। है न, आश्चर्य की बात।

ठीक है, डैडी। आपका खाता तो पंजाब नेशनल बैंक में ही है न।

हाँ, बेटा। वही मेरा बैंक हैं। यह देश के सबसे पुराने और सबसे बड़े बैंकों में से एक है। देश भर में इसकी ४८० से अधिक शाखाएं हैं।

पंजाब नेशनल बैंक

PR/PN/8624 Hin-3

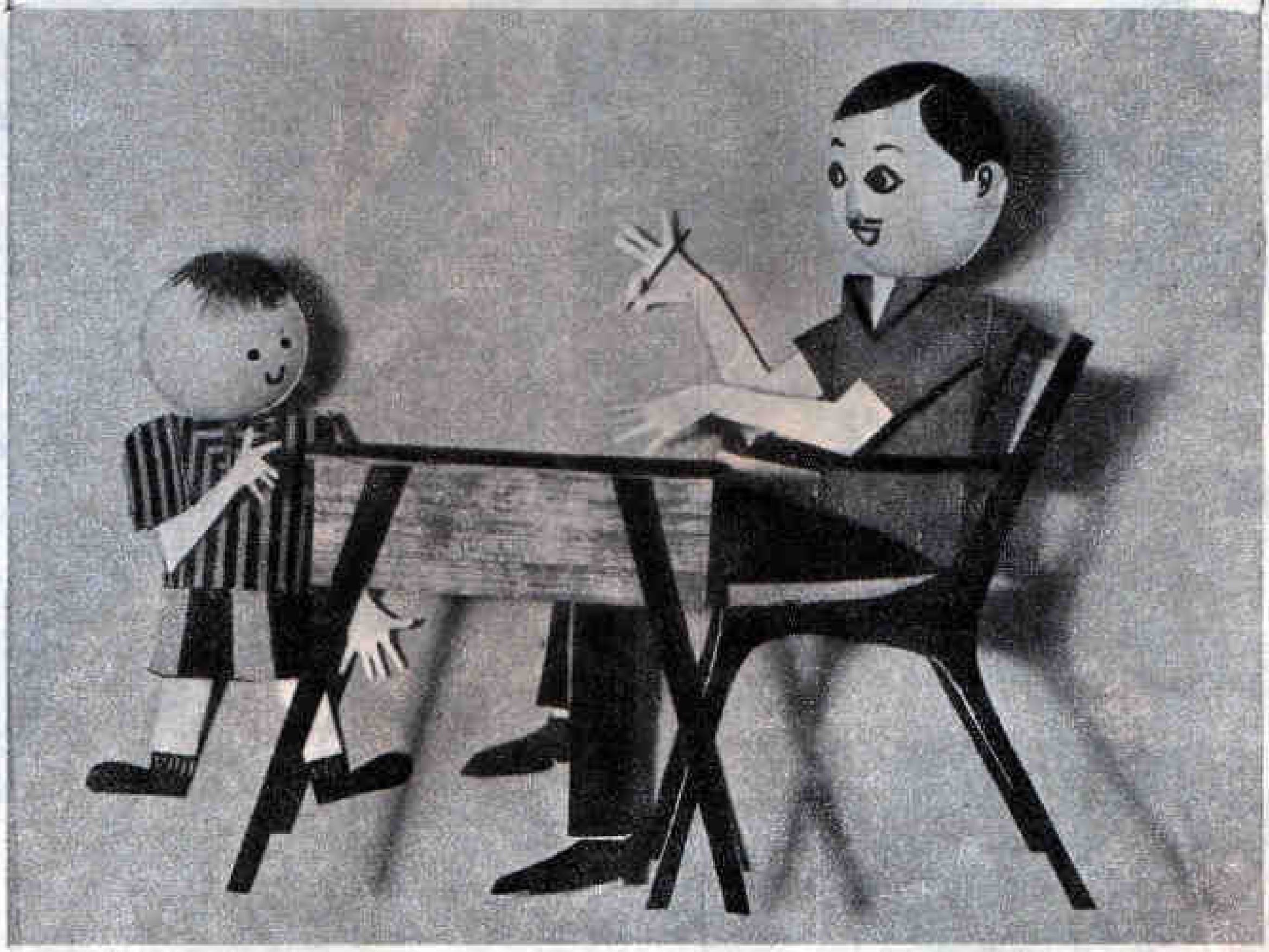

यह नाकेवाला हलवाई

इसका हलुवा मजेदार है,
खाने में आती बहार है,
दिन भर बिकता बेशुमार है,
दौलत इसने खूब कमाई!
यह नाकेवाला हलवाई!

परिचय में यह बतलाता है:
दारासिंह इसे खाता है,
दूर दूर तक यह जाता है,
भावनगर, भोपाल, भिलाई।
यह नाकेवाला हलवाई!

सरकसवाले इसको खाते,
खाकर हाथी-रीछ नचाते,
शेरों से सलाम करवाते,
वश में है थोड़ा दरियाई!
यह नाकेवाला हलवाई!

कहता—जो इसको खाएगा,
पढ़कर फेल न हो पाएगा,
सौ में सौ नंबर लाएगा,
रत्ती भर होगी न पिटाई!
यह नाकेवाला हलवाई!

यह दिन भर जेबें भरता है,
रुपया खूब जमा करता है,
खर्चा करने से डरता है,
कभी न दी चंदे में पाई!
यह नाकेवाला हलवाई!

नेता हो अथवा अभिनेता,
कीमत खूब ठोककर लेता,
लेकिन टैक्स बहुत कम देता,
रोज बड़ा लेता महंगाई!
यह नाकेवाला हलवाई!

एक बार यह अकड़ गया था,
इंस्पेक्टर से झगड़ गया था,
नकली घी में पकड़ गया था;
कुछ ले-देकर जान छुड़ाई!
यह नाकेवाला हलवाई!

—कल्याणकुमार जैन 'शशि'

होलीका चंग (छाया : ब्रह्मदेव)

ओ, चंगों पर थाप पड़ी

एक ओर पग ठुमक उठे है,
चंगों पर लो थाप पड़ी;
होली के रसियों की टोली,
गाती देखो खड़ी खड़ी;
गीत खुशी के गाएं हम!
आओ, चंग बजाएं हम!
फिर हुड़दंग मचाएं हम!

गांव-गांवड़ा, पनघट-नदिया,
बांध-नहर सब रंग गए;
बूढ़े-बालक-युवक आज सब,
हर उमंग में संग हुए;
पिचकारी भर लाएं हम!
सब पर उसे छुड़ाएं हम!
टोली एक बनाएं हम!

डांडियों की आ गई घड़ी

रंग-बिरंगा बाहर-भीतर,
गली-चौक, घरद्वार है!
नाच-गान का, हंसी-खुशी का,
यह आला त्योहार है!

आओ, रंग घुलाएं हम!
सब पर रंग गिराएं हम!
एक रंग हो जाएं हम!

देखो कल जो दूर-दूर थे,
वे सब आकर गले मिले;
झगड़ लिये थे किसी बात पर,
वे सब लगते आज भले;

बिछुड़े हृदय मिलाएं हम!
बीती बात भुलाएं हम!
डांडिया रास रचाएं हम!

—तारादत्त 'निर्विरोध'

डांडिया रास (छाया : जे. एस. पारिक)

जब हम होली खेल सकते हैं तो —

चुनाव भी लड़ेंगे

(चिट्ठी राष्ट्रपतिबाबा के नाम नन्हे-मुन्नों की)

हमारे प्यारे राष्ट्रपति बाबा,

देशके सारे नन्हे-मुन्नोंका प्रणाम ।

सेवामें निवेदन है कि हम बच्चे लोग आपके सामने अपनी एक मांग रख रहे हैं । हम यह जानते हैं कि हमारी यह मांग पूरी तरह उचित है। अगर आप हमारी इस चिट्ठीको ध्यानसे पढ़कर विचार करेंगे, तो आप भी पाएंगे कि हम कोई गलत जिद नहीं कर रहे हैं। वैसे बड़े लोगोंने हम बच्चोंको बेहद जिद्दी मशहूर कर रखा है, यहां तक कि वे खुद अपनी जिदके लिए भी 'बाल-हठ' की उपमा अक्सर देते रहते हैं।

वास्तवमें, हम बड़े लोगोंके सताए हुए हैं । यदि आप थोड़ी देरके लिए हमारी तरह बच्चा बनकर देखें, तो आप स्वयं ही अनुभव करने लगेंगे कि हमपर अक्सर ही बहुत-सी ज्यादतियां होती रही हैं । उन सभी ज्यादतियोंकी चर्चा इस समय हम नहीं करेंगे, क्योंकि हम यह समझते

हैं कि आपका समय बहुत कीमती है; आपको अनेक जरूरी काम होते हैं, देशकी अनेक समस्याओं-को सुलझाना होता है और हमारे अलावा अनेक बड़े लोगोंकी चिट्ठियोंको पढ़ना और उनपर विचार करना होता है ।

हम लोगोंके लिए कहा जाता है कि हम वक्तकी कीमत नहीं जानते और बेवक्त ही अपना रोना ले बैठते हैं । देशके बड़े लोगोंके कितने ही काम तथा आंदोलन कितने बेवक्त होते हैं, यह आप जानते ही हैं । हमारी नासमझी और हमारी 'बाल-बुद्धि' की दुहाई देने वाले इन बड़े लोगोंमें कितनी समझदारी होती है, यह हम अपने 'छोटे' मुंहसे आपको कैसे बताएं?

राष्ट्रपति बाबा, हम लोग भी चुनाव लड़ना चाहते हैं । लोक सभा, राज्य सभा और विधान सभाओंमें हम बच्चोंके प्रतिनिधि भी होने चाहिएं । बड़े लोगोंके बनाए हुए संविधानने हम बच्चोंको, जो देशकी जन-संख्याका ज्यादा बड़ा हिस्सा हैं, चुनाव लड़ने और वोट देनेके 'मूल अधिकार' से वंचित रखा हुआ है । भारतवर्षके हम सब बच्चे इसका विरोध करते हैं और आपके पास संविधानमें संशोधनकी मांग, अपनी इस चिट्ठीके जरिए करते हैं ।

आप कहेंगे कि अब तो चुनाव हो चुके हैं और हम लोगोंने अपनी मांग रखनेमें देर कर दी है । पहली बात तो यह है कि इस देरीके लिए हम बिल्कुल दोषी नहीं हैं, और दूसरी बात यह है कि हम इन चुनावोंको स्वीकार ही नहीं करते और अवैध मानते हैं ।

पिछले दो महीनोंमें हम लोगोंने जब अपने चारों तरफ शोर-शराबा देखा, लोगोंको पागलों-की तरह चीख चीखकर 'वोट दो' 'वोट दो' के नारे लगाते सुना, तब हमारा इस नई चीजकी ओर ध्यान गया ।

राष्ट्रपति बाबा, यहां एक भेदकी बात आपको और बता दें कि बड़े लोगोंने हल्ला-गुला करने और नारा लगानेके लिए ज्यादातर हमारे ही

कुछ साथियोंको लगा रखा था और जब हममें-से कुछने उनसे पूछा कि यह वोट क्या होता है, तो वे बोले थे कि यह तो हमें नहीं मालूम, हमसे नारे लगानेको कहा गया, वही हम कर रहे हैं। फिर हमने अपने पापा, डैडी, बाबूजी, पिताजी तथा बापूसे इसके बारेमें जानना चाहा। उन लोगोंने हमेशाकी तरह यही कहा—'तुम अभी बच्चे हो, यह नहीं समझोगे। यह तुम लोगोंके मतलबकी चीज नहीं है।' हम पूछते हैं कि जब यह हम लोगोंके मतलबकी चीज नहीं है, तो ये बड़े लोग हमारे साथियोंसे इसके लिए काम क्यों करवाते हैं? कुछ लोगोंने यह कहा कि अभी हमें फुरसत नहीं है, जब चुनाव निबट जाएगा, तब हम यह समझा देंगे। हमारे होशमें यह पहला ही चुनाव था क्योंकि पहले चुनावके समय हमें यह समझनेकी अक्ल ही नहीं थी। इसलिए चुनाव-के अधिकारकी मांग पहले रखनेके लिए हम दोषी नहीं हैं, फिर भी इसकी हम आपसे क्षमा मांगते हैं।

हमारी दूसरी बात है इन चुनावोंको अवैध मानने की।

इस बातको सिद्ध करनेके लिए हमें रमेशके डैडीकी एक किताब चुराकर पढ़नी पड़ी। रमेशके डैडी एक वकील हैं। हम यह अच्छी तरह जानते है कि चोरी करना बुरी बात है और इसके लिए आप हमें दण्ड भी दे सकते हैं। लेकिन हम मजबूर थे क्योंकि 'भारतका संविधान' नामकी किताब हमारे कोर्समें नहीं थी और हमारे मास्टरजी इसके बारेमें कुछ पूछनेपर हमें डांट-कर भगा देते थे कि कोर्सकी किताबें आपसे

मनमोहन सरल

पढ़ी नहीं जातीं और यह बेमतलबकी किताब पढ़ेंगे।

ये चुनाव अवैध—यानी नियमके विरुद्ध—इसलिए हैं कि ये देशके सभी नागरिकोंका प्रतिनिधित्व नहीं करते। इनमें देशके आधेसे ज्यादा नागरिकोंने भाग नहीं लिया है। संविधानके अनुच्छेद ५ के अनुसार भारतमें जन्मा प्रत्येक व्यक्ति तथा भारतमें पांच वर्षसे रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति नागरिक माना जाएगा। हम सब यहीं पैदा हुए हैं या पिछले वर्षोंसे भारतमें ही रह रहे हैं। संविधानने हरेक नागरिकको बरा-बरीका अधिकार दिया है (अनुच्छेद १४) यानी हम सब बराबर हैं—चाहे हमारी उम्र पांच साल हो, २१ साल हो या ७१ साल; छोटे हों, या पापा जैसे बड़े हों, या बाबा, आप जैसे हों—सबको एकसे ही अधिकार मिलने चाहिएं। फिर हमको बच्चा कहकर टालनेकी बात हमपर

बड़े लोगोंकी ज्यादती ही मानी जाएगी। इस-लिए २१ वर्षका होनेपर ही वोट देनेका अधिकार दिया जाना और ३०–३५ वर्षका होनेपर ही चुनाव लड़नेका अधिकारी होना, दोनों ही गलत हैं, संविधानके ही एक अनुच्छेदके विरुद्ध हैं। इस-लिए ऐसे चुनाव जो गलत नियमोंपर किए गए हों, हमारी मांग है, अवैध घोषित किए जाने चाहिएं और हम लोगोंको भी चुनावमें खड़े होने और वोट देनेका अधिकार देकर फिर से नए चुनाव कराए जाने चाहिएं।

राष्ट्रपति बाबा, एक बात और है, कानमें कहने की, लड़ने के लिए, चाहे वह चुनाव लड़ना

अब तक .....
नाश्ते के लिये ऐसा आहार उपलब्ध नहीं था

मोहन्ज़
न्यू
लाइफ
कार्न फ़्लेक्स

मोहन्ज
व्हाइट ओट्स

मोहन्ज़
प र्ल बा र्ले

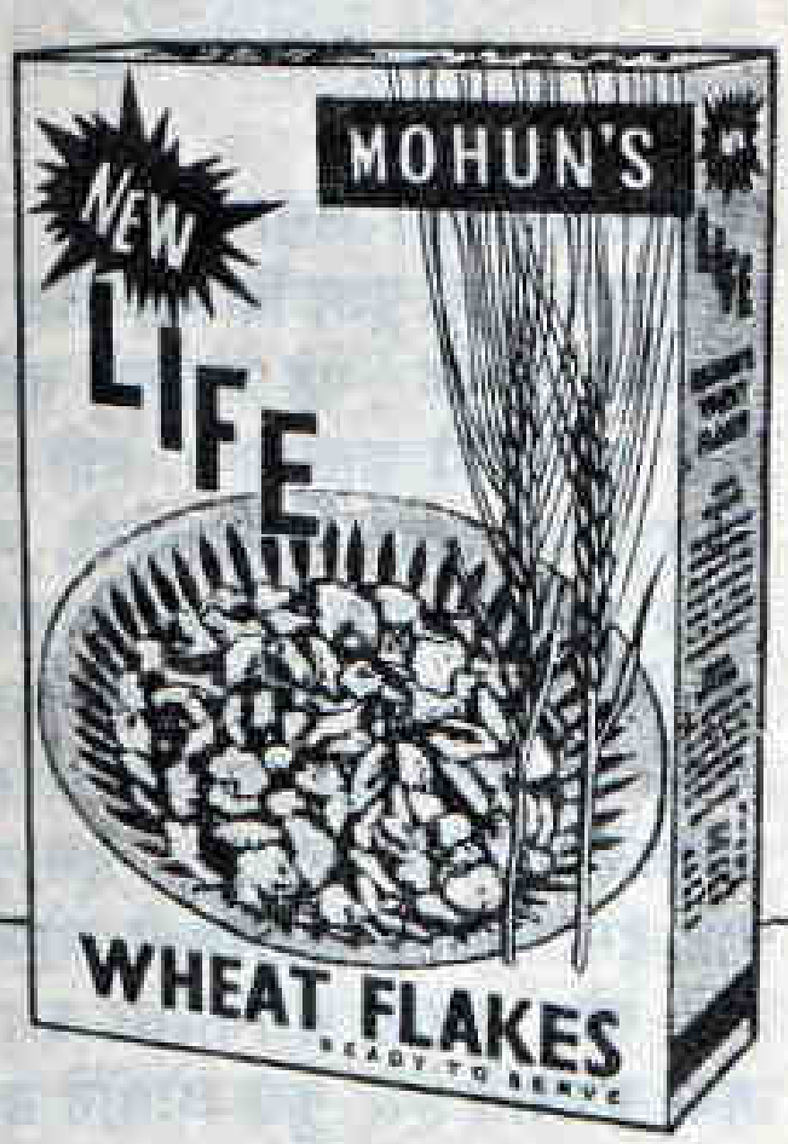

मोहन्ज़
न्यू
लाइफ
व्हीट फ़्लेक्स

११० वर्ष से अधिक का अनुभव विश्वास की गारन्टी है

मोहन मीकिन ब्रुअरीज़ लि० स्थापित १८५५

(भूतपूर्व डायर मीकिन ब्रुअरीज़ लिमिटेड)

मोहन नगर (गाज़ियाबाद) यू० पी०

सोलन ब्रुअरी — लखनऊ डिस्टिलरी — कसौली डिस्टिलरी

MMB-NP-105

ही क्यों न हो, हम बच्चोंसे अधिक उपयुक्त कोई नहीं हो सकता। इसलिए भी हमारी मांग और ज्यादा मजबूत होती है।

हम देशके समझदार और जिम्मेदार नागरिक हैं। हम अपने अधिकारकी मांग विनम्रतासे आपके सामने रखते हैं। हम चाहते तो बम्बई बंद, बंगाल बंद और भारत बंद की तर्जपर स्कूल बंद जैसा नारा लगा सकते थे। 'बाल सूबा' बनानेके लिए अनशन कर सकते थे या देशभरकी सारी टॉफी-चाकलेट फैक्टरियोंपर बाल शासन लागू किए जानेकी मांग कर सकते थे। लेकिन हम लोग ऐसी बड़कानी जिद नहीं करते।

हम जानते हैं कि बड़े लोगोंने हमारी मांगों-पर कभी ध्यान नहीं दिया है। वे लोग कभी हमारे साथ हमदर्दीसे पेश नहीं आए हैं और उन्होंने कभी हमें बराबरीका दर्जा नहीं दिया है। न जाने किस पिनकमें संविधानमें वे बराबरीकी बात लिख गए। शायद तब सोचा ही न होगा कि हम लोग इस संविधानको कभी पढ़ सकेंगे और फिर उनकी बातको इस तरह ले उड़ेंगे। लेकिन आप तो बड़ोंके भी बड़े हैं, इसलिए हम आपके सामने अपनी मांग रखनेकी सोच सके हैं।

हमें पूरी उम्मीद है कि आप हमारी मांग-पर पूरी हमदर्दीके साथ विचार करेंगे। क्योंकि कभी आप भी हम जैसे बच्चे रहे हैं और इस उम्रमें भी हमारे ज्यादा निकट हैं। किसी बड़े ने कहा है न, कि बच्चे और बूढ़े एक जैसे होते हैं।

हम आशा करते हैं कि इन चुनावोंको रद्द करके आप संविधानमें हमारा संशोधन स्वीकार करेंगे और फिर हम लोगोंको भी चुनाव तथा वोटका अधिकार देकर लोक सभा, राज्य सभा तथा विधान सभाओंमें देशके सभी नागरिकों-का सही और सच्चा प्रतिनिधित्व होनेका अवसर देंगे। हम आपको यकीन दिलाते हैं कि हम सदनों-की बैठकोंमें क्लासकी तरह शोर नहीं मचाएंगे और मास्टरजीकी तरह अध्यक्षके कार्टून दीवारों-पर नहीं बनाया करेंगे। हम लोग संसदमें सिर्फ ऐसी ही मांगें रखेंगे, जिनसे बाल हितके साथ साथ देशका हित भी हो। जैसे देशमें अन्नकी कमीके समय रोटी-चावलकी जगहपर सिर्फ मिठाई, टॉफी या मूंगफलीसे ही पेट भरनेका सुझाव।

महंगा बैल

एक बार एक आदमी अपना बैल बाजार-में बेचनेके लिए लाया। बैल दुबला-पतला और मरियल-सा था। लोगोंने कीमत पूछी। उसने बारह सौ बताई। बैलको देखते हुए यह कीमत बहुत ज्यादा थी। लोगोंने पूछा, "इस मरियल बैलके इतने ज्यादा दाम क्यों?"

बैलवालेने कहा, "इसकी एक वजह है। लेकिन वह मैं तब बताऊंगा, जब कोई इस बैलको खरीदनेके लिए रजामंद हो जाए।"

इस तरह वह बैल बाजारमें सारे दिन एक तमाशा बना रहा। शाम होनेको आई, मगर बैलका कोई खरीदार न आया। बैलवाला उस दिन बैलको वापस लिये घर लौट गया।

दूसरे दिन वह बाजारमें बैल लेकर फिर आया। पूछे जानेपर उसने बैलकी कीमत वही बारह सौ रुपये बताई। लोगों-का कुतूहल और बढ़ गया। आखिर एक किसान बैल खरीदनेपर राजी हो गया। बैलवालेने किसानसे बारह सौ रुपये वसूल करनेके बाद बताया—"दरअसल इस बैलकी सही कीमत तो सिर्फ दो सौ रुपये है। मगर यह एक हजार रुपयेके नोट खा गया है!"

—हमीदुल्ला खां

अंतमें, यदि अनजाने हमसे कोई गलती हो गई हो, तो उसके लिए आपसे हम क्षमा-याचना करते हैं। वैसे यह पत्र हमने अपने स्कूल-में पत्र लिखनेके लिए बताए गए ढंगसे ही लिखा है। यदि इसमें आप कोई गलती पाएं, तो हमारा निवेदन है कि वह हमारी न मानी जाए। एक अनुरोध है और यह कि इस पत्रके बारेमें हमारे पापा, डैडी, पिताजी, बाबूजी या बापूसे कृपया कोई शिकायत न की जाए।

होलीके अवसरपर हमारे नन्हे-मुन्ने हाथों-से आपके मुखमंडलपर ढेर-सा गुलाल! जय-हिन्द!

हम हैं आपके विनम्र:
भारतवर्षके सभी नन्हे-मुन्ने

नारदजी पर

एक दिन गणेशजीको मजाक सूझी। उन्होंने स्वर्ग लोकके बच्चोंको इकट्ठा किया और अपने भंडारेमेंसे निकालकर सबको लड्डू खिलाए। बच्चे लड्डू खाकर बड़े प्रसन्न हुए। तब गणेशजीने बच्चोंको बताया कि नारदजी भगवान इंद्रसे कहकर तुम बच्चोंके लिए एक अलग 'बाल लोक' बनानेकी कोशिश कर रहे हैं। बच्चोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछने गणेशजीसे इसका कारण पूछा, तो कुछने यह पूछा कि 'बाल लोक' कहां होगा, 'बाल लोक'में क्या होगा—आदि आदि।

गणेशजीने बताया कि 'बाल लोक' नारदजीने —वह जो बड़ी भारी हवेली है जिसे भुतहा घर कहते हैं—वहां बनानेकी सलाह दी है।

"भुतहा घरमें?" आश्चर्यसे अनेक बच्चोंने पूछा।

"हां, भुतहा घरमें," गणेशजीने जब दुबारा कहा, तो कई कमजोर बच्चोंको पसीना आ गया इस बातसे।

बच्चे बड़े चक्करमें थे कि अब क्या करें।

"लेकिन यह बताओ, गणेश दादा, हमने नारदजीका क्या बिगाड़ा है कि वह हमें स्वर्ग लोकसे अलग रखना चाहते हैं!" बच्चोंने सवाल किया।

गणेशजी बोले—"यही बात तो मैंने वहां सभा भवनमें कही थी कि स्वर्गमें अगर बच्चे नहीं रहेंगे, तो वह स्वर्ग कैसा?"

"फिर?"

"फिर क्या, नारदजी इस बातको साबित करनेपर तुले हुए हैं कि बच्चोंके कारण स्वर्गमें शांति नहीं रहती, धर्म-ध्यान, पूजा-पाठमें विघ्न पड़ता है, गंदगी रहती है . . . आदि आदि।"

"नारदजी भी खूब हैं!" एक बच्चेने कहा, "क्या कभी वह स्वयं बच्चे नहीं रहे थे?"

"जरूर रहे थे," गणेशजीने अपनी लंबी नाक हिलाते हुए कहा।

"आप तो यह बताइए कि हमें अब करना क्या चाहिए," कुछ बच्चोंने बड़े चिंतित होते हुए पूछा।

गणेशजीने पास रखे थालमेंसे एक लड्डू उठाकर अपने मुंहमें रखा और मोटे पेटपर हाथ फेरते हुए बोले, "नारदजीसे जल्दी ही बात की जाए, क्योंकि अभी तो दो-तीन दिन होलीकी छुट्टियोंके कारण 'स्वर्ग सभा' नहीं हो रही है।"

"हम आज ही मिल लेते हैं; नारदजी हैं कहां?" कई बच्चोंने पूछा।

"नारदजीसे आज मिलना ठीक नहीं है। मेरी रायमें उनसे कल मिलना ठीक रहेगा। वैसे नारदजी तुम्हें मिलेंगे भी उसी भुतहा घरमें। वहां वह 'बाल लोक' बनानेकी पूरी तैयारीमें जुटे हुए हैं।"

"गणेश दादा, क्या हम भुतहा घरमें मिलने जाएं उनसे?" बच्चोंने पूछा, क्योंकि उनके लिए यह भी एक समस्या थी।

"तुम डरते क्यों हो?" गणेश दादाने अपनी छोटी छोटी आंखोंको नचाते हुए कहा, "मैं भी तुम्हारे साथ चला चलूंगा।"

यह सुनना था कि बच्चोंने गणेश दादाकी जय-जयकारसे स्वर्ग लोक गुंजा डाला और सबके सब इधर-उधर बिखर गए। तभी गणेश दादाने भागते हुए पांच बच्चोंको इशारेसे रोका और उन्हें कानमें कुछ समझा दिया। गणेश दादाकी बात सुनकर पांचों बच्चे खुशीसे उछल पड़े।

दूसरे दिन गणेश दादा बच्चोंको उस भुतहा

पिचकारी

— मनोहर वर्मा

www.kissekahani.com

घरमें ले गए। भुतहा घर एक तरहसे खंडहर हो गया था। इधर-उधरकी दीवारें और कुछ कमरे टूटे-फूटे पड़े थे। खिड़कियों और दरवाजोंमेंसे भी ढूंढ़से ही कोई साबित मिलता।

इसे भुतहा घर क्यों कहते हैं, यह किसीको पता नहीं था। इस बारेमें स्वर्ग लोकमें तरह तरह-की कहानियां कही जाती थीं।

हां, तो काले-कलूटे भूतसे दिख रहे भुतहा घरमें गणेश दादा बच्चोंकी सेनाको लेकर जा पहुंचे। सब सांस रोके, पंजोंके बल, चुपचाप बिना कुछ बोले चल रहे थे। गणेश दादा अपनी योजना-के अनुसार एक झाड़ीकी ओटमें बैठ गए। सारे बच्चे अपने अपने कामोंमें लग गए।

थोड़ी ही देरमें ढेर सारे बच्चोंका वह झुंड न जाने किधर दुबक गया। कई खिड़कियोंके पास दुबककर बैठ गए, तो कई दरवाजोंके पास। कुछ रोशनदानोंमें लटक गए, तो दो-चार छतपर चिमनीके पास जा दुबके। इस सारे काममें कहीं कहीं सीढ़ियों और रस्सियोंका भी सहारा लेना पड़ा।

बच्चोंने झांककर देखा—नारदजीने एक कमरेमें बड़ी बड़ी मेजोंपर कई छोटी-बड़ी मशीनें लगा रखी हैं और खुद एक मेजपर झुके हुए किसी काममें डूबे हुए हैं। बच्चोंको पूरा विश्वास हो गया कि यह सब काम अलगसे 'बाल लोक' बनाने-का ही हो रहा है।

सब मन ही मन नारदजीपर दांत किट-किटाने लगे।

तभी दूर एक पटाखा छूटा और जो जहां बैठा था उसने वहींसे अपनी पिचकारियों और रबड़के पाइपोंकी धारें तेजीसे नारदजीपर चला दीं।

नारदजी हक्के-बक्के! जाएं, तो किधर? चारों दिशाओंसे जो तेज रंगोंकी बौछार उनपर पड़ रही थी, इससे बच सकना मुश्किल था।

आखिर रंगसे सराबोर नारदजी जैसे-तैसे बाहर आए, तो उनको देखते ही बच्चे हंसीके मारे लोट-पोट हो गए।

नारदजीने मुंहका रंग पोंछते हुए बड़ी दीनतासे

आपका टिकट ?
आपका टिकट पंच करने के लिए आगे बढ़ा हुआ वह जाना पहचाना हाथ, और टिकट, टिकट, टिकट की आवाज़ें। ये आवाज़ें बिना टिकट चलनेवालों को भली नहीं लगतीं। ये भले आदमी उस जगह को घेर लेते हैं जो सच पूछिए तो आपकी है। ये मुफ्त का मज़ा लेने वाले लोग रेलों और राष्ट्र की करोड़ों मेहनत का हक मार लेते हैं। इन्हें पकड़ना आसान है अगर आप सब, जो कानून के पाबन्द हैं, डिब्बों में और खास कर स्टेशन से बाहर निकलते समय अपने टिकटों और सीज़न टिकटों को दिखाने के लिए तैयार रखें।
पश्चिम रेलवे

कुंदन की कुंडलियां

दस दिन की छुट्टी मिली, सोए चादर तान,
काम मिला था स्कूल से, रहा न इसका ध्यान!
रहा न इसका ध्यान, याद तब हमको आया,
जब मम्मी ने सुबह-सवेरे हमें जगाया।
कह 'कुंदन' घंटे भर में सब काम कर लिया,
काम क्या किया, बस करनेका नाम कर लिया!

खा-पीकर फिर चल पड़े अपने घर से स्कूल,
बस्ता बांधा बगल में, गए किताबें भूल!
गए किताबें भूल, याद तब हमको आया,
पंडितजी ने पढ़ने को जब पाठ बताया।
कह 'कुंदन' कविराय, खोलकर बस्ता देखा,
उसमें डोर-पतंग और गुलदस्ता देखा!

खेले-कूदे साल भर, किया न सोच-विचार,
देख परीक्षा निकट हम, पड़े तुरत बीमार;
पड़े तुरत बीमार, मच गई भगदड़ घर में,
फेंक पुस्तकें हम जाकर सोए बिस्तर में!
कह 'कुंदन' कविराय, परीक्षा बहुत बड़ी है,
छुट्टी भर पढ़ने की आफत गले पड़ी है!

—कुंदन

कहा, "नारायण, नारायण! कम्बख्तो, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था, जो तुमने मेरे साथ यह सब किया?"

सारे बच्चे एक स्वरमें बोले, "तुम हमारे लिए स्वर्ग लोकसे अलग एक 'बाल लोक' बना रहे थे, इसलिए . . ."

"नारायण, नारायण! बिल्कुल गलत, यह कैसे हो सकता है? मैं तो कहता हूं, बच्चो, कि स्वर्गमें तुम बच्चे न होगे, तो वह स्वर्ग कैसा! तुम्हें किसीने बरगलाया है।"

अब तो सब बच्चे चुप।

"मैं तो, बच्चो, अभी पृथ्वी लोकसे लौटकर आया हूं और अपने स्वर्ग लोकके लिए 'बोलती पेटी', जिसे पृथ्वीपर 'ट्रांजिस्टर' कहते हैं, बना रहा हूं। तुमने रंग-पानी फेंककर सब गुड़-गोबर कर दिया। मुझे बताओ तो सही, तुम्हें यह कहा किसने? . . . नारायण, नारायण!"

बच्चे बड़े पछताए कि पता नहीं नारदजी कैसी 'बोलती पेटी' बना रहे थे। अब क्या करें?

तभी खंडहरपर खड़े नारदजीको झाड़ीमेंसे निकलकर भागते हुए गोल-मटोल गणेश दादा नजर आ गए। बस, फिर क्या था बच्चोंकी टोली-को पुकारते हुए नारदजी हाथमें वीणा लिये गणेश दादाके पीछे दौड़ पड़े।

आगे आगे गणेश दादा और पीछे पीछे नारदजी और बच्चे, और बीचमें सूरजकी सात रंगोंवाली किरणोंकी तरह पिचकारियोंकी धारें!

ढंग और ढंग

नल खराब होने से जल की
बंद हुई सप्लाई,
इसी लिए दो दिन तक मुन्नी
बिलकुल नहीं नहाई!

और तीसरे दिन होली की
घड़ी जिस समय आई,
घर के दरवाजे पर उसने
अपनी सीट जमाई।

लड़कों ने उस पर रंगों की
जब गागर ढुलकाई,
'हर गंगे, हर गंगे' की
उसने आवाज लगाई ।

तभी आ गए ढब्बू-चब्बू,
उस के दोनों भाई,
दोनों ने मिलकर मुन्नी की
दुर्गति खूब बनाई ।

—रामअकबाल मिश्र

● छाया : एम. एल. खुल्लर

www.kissekahani.com

जीने की कला – ६

होली की टोलियां

— अलकारानी जैन

बच्चो, होली आ रही है!

लो, जैसे तुम्हें भी बतानेकी जरूरत हो! तुम तो अब तक अपनी टोलियां भी बनानेकी योजना बना चुके होगे।

पर किसी त्योहारके मनानेका मजा तभी है, जब तुम यह जानते होओ कि उसको कितने रूपोंमें ढाला जा सकता है। तुम रंग खेलते हो—किसीके कपड़े रंगते हो, अपने रंगवाते हो। सारे मुहल्लेसे चंदा इकट्ठा करके लक्कड़ जुटाते हो। बीच चौकमें एक बड़ा अलाव बनाते हो। उसमें आग लगाकर होलिका बुआको उसमें फूंक देते हो। उसमें जौकी बालियां भूनते हो। सुबह-सवेरे वे ही बालियां लेकर अपने मित्रोंको उपहारमें लेते-देते हो और उनसे गले मिलते हो। फिर अगले दिन दुलहंडी आती है और तुम्हारी आंखें रंगके सिवा और कुछ देखना पसंद नहीं करतीं। सीध-सादे सफेद कपड़ोंवाला कोई आदमी तुम्हारी पिचकारीसे बचकर नहीं निकल पाता। या किसीको छोड़ भी देते हो?

उस दिन बड़े-छोटेका भेदभाव मिट जाता है। जो सामने आता है पिचकारीका अचूक निशाना बनता है, और अगर कहीं वह बचकर निकलनेके फिराकमें हो, तो तुम्हारी बन ही आती है। उसका चुकंदर बनाए बिना तुम कब छोड़ने वाले हो!

होली-दुलहंडीके कुछ दृश्य पर्याप्त मनोरंजक होते हैं। एक लालाजी रंगमें सराबोर चले जा रहे हैं। चुपकेसे एक बच्चा आता है और पास आकर उनके सिरपर कुछ मंत्र-सा पढ़ता है। उसी दम उनकी टोपी जादुई करिश्मेकी तरह हवामें कुलांचे भरती हुई किसी मकानके छज्जेके भीतर जा दुबकती है। फिर चारों तरफसे एक टोली बच्चोंकी निकल निकलकर उछलने-कूदने और शोर मचाने लगती है— "होली है, भई, होली है! झेल, झेल, झेल...!" अर्थात्—'यह होलीका त्योहार है, गुस्सा मत हो, लाल-पीली आंखें मत दिखाओ, हमारे इन नन्हे-मुन्ने अत्याचारोंको झेलो, सहन करो. . . सहन करो. . . !'

लालाजी उबलते हैं, बिफरते हैं, धमकाते हैं—तभी पीछेसे कोई कुत्ता भौंककर उनकी टांग पकड़ता है और वह चिहुंककर उछलते हैं। मालूम होता है सिगरेटके टिनका मुंह उनकी टांगोंसे लगाकर एक लड़केने उसके भीतर पिरोया डोरा खींच लिया है। किसी वस्तुका स्पर्श और कुत्ते जैसी भौंकनेकी आवाज—इन दोनोंने मिलकर कटखने कुत्तेका भ्रम पैदा कर दिया!

'झेलो, सहन करो!'

टोपी वापस मिलती है चवन्नी देकर। लालाजी कभी भुनभुनाते हुए, तो कभी मुसकराते हुए आगे बढ़ जाते हैं।

किसी जगह 'होलीका गधा' दिखाई पड़ता है। मुंह काला-भुजंग है, कपड़े तार तार हैं, गधा भी रंग गया है, लेकिन पीछे आने वाली टोली औंधे-सीधे गीत गानेमें तल्लीन है। नाच हो रहे हैं, जिनकी बराबरी उदयशंकर भी नहीं कर सकता। सड़क रंगकी कीचड़से भरी है। पैर किसीका फिसलता है, गिरता कोई है। जिसके जो मनमें आता है खाता है, पीता है, आंखें मटकाता है, हाथ झटकारता है और जूते फटकारता है, जिन्हें उल्टा करनेसे रंग चूने लगता है!

तो यह है हमारी होली। वसंतके आगमनका सूचक त्योहार! होलिकाके साथ बुरी इच्छाओं-आकांक्षाओंके जल जानेका त्योहार, सहन-शक्तिकी परीक्षाएं लेनेका त्योहार, क्रोध व शत्रुताको बिसार देनेका त्योहार, शत्रु-मित्र दोनोंसे गले मिलनेका त्योहार और सबको एकसे रंगोंमें रंग लेनेका त्योहार।

शायद ही कोई त्योहार हो, जिसके साथ कोई न कोई पौराणिक कथा जुड़ी हुई न हो। होलीके साथ भक्त प्रह्लादको लेकर चितामें बैठने वाली होलिका बुआकी कथा है, तो दिवालीके साथ श्रीरामके अयोध्या लौटनेकी कथा जुड़ी है। किंतु यदि इन त्योहारोंसे जनताको अपने उल्लासके प्रदर्शनका अवसर न मिलता, तो शायद ही ये त्योहार इतने टिकाऊ और लोकप्रिय हो पाते। दूसरोंके साथ मिलो, खेलो, नई नई जान-पहचान बनाओ और देखो कि तुम्हारे अपने 'मैं' से अलग कितने 'मैं' और हैं जो तुम्हारे साथ खेलते हैं, रंगरेलियां मनाते हैं और तुम्हें

उड़ती टोपी!

होलिका की होली!

नए सिरेसे पहचानते हैं।

और भी आगे बढ़ो, तो देखोगे कि हमारे इतने विशाल देशमें होलीका त्योहार सब जगह उतनी ही धूमधामसे नहीं मनता, जितना उत्तर भारतमें। महाराष्ट्रमें इस त्योहारको इतना महत्व नहीं दिया जाता, जितना गणेश चतुर्थीको। दक्षिण भारतमें पौष मासमें मकर संक्रांतिके अवसर पर 'पोंगल' का त्योहार मनाया जाता है। ये सब उल्लासमय त्योहार फसलोंके कटनेके समय मनाए जाते हैं, जब हमारे कृषि-प्रधान देशका किसान धन-धान्यसे अपने कोठे भरता है।

होली हंसी-मजाक, व्यंग्य और मधुर आहार-विहारका त्योहार है। प्राय: मिलनेके लिए आने वाले मेहमानोंका मुंह मीठा कराया जाता है। घरोंमें मिष्ठान्न और पकवान्न बनते हैं। कैसा ही गंदा रहने वाला बच्चा हो, उस दिन उसकी नहलाई-धुलाई जमकर हो जाती है।

अनेक बच्चे कीचड़, तवेकी स्याही, तेज बैंगनी रंग आदिसे दूसरेका मुंह इस तरह रंग देनेकी ताकमें रहते हैं कि उन्हें साफ करनेमें कमसे कम एक टिकिया साबुन खर्च हो। उसके बाद भी यदि रंग न छूटे, तो ताज्जुब नहीं। दूसरी ओर कुछ सभ्य और शिष्ट परिवारोंके बच्चे यह भी ध्यान रखते हैं कि जाड़ेके कारण किसीको सरदी न लग जाए, इसलिए गरम पानीमें रंग घोलते हैं। यही नहीं बहुतसे परिवारोंमें साधारण रंगोंके स्थानपर टेसूके फूलोंका रंग भी बनाया जाता है। वह सामान्य रंगोंकी तरह त्वचाको हानि नहीं पहुंचाता। ऐसे बच्चोंका ध्यान होलीका पूरा आनंद लेना रहता है, दूसरोंको परेशान करनेका नहीं। सो यह अपने अपने संस्कारोंकी बात है।

जिन बच्चोंका दिल अपने बड़ोंपर रंग डालते हुए जरा ज्यादा धड़कता है वे जादूके रंगका इस्तेमाल करते हैं। एक बर्तनमें फिनायलकी गोलियोंका सफेद पाउडर पानीमें घोला और जरा सा-अमोनिया डाला। लो जादूका गुलाबी रंग तैयार हो गया। नए-नकोर कपड़ोंपर डालो, दो चांटे खाओ, जरा देरमें रंग गायब हो जाएगा और तब दूसरा गाल भी सामने कर दो! इस बार चांटे नहीं लगेंगे—एक लकब मिलेगा— 'शैतान कहींका!'

होली छोटे-बड़े रूपमें संसारके बहुतसे देशोंमें अलग अलग ढंगोंसे खेली जाती है। आओ देखें, संसारके लोग किस किस ढंगसे होली मनाते हैं:

हमारे ही देशके उत्तरी भागमें कुमाऊंका बरफीला प्रदेश है। वहांके बच्चे चैत्र मासके प्रथम दिन यही होली फूलोंसे खेलते हैं—उनके रंगसे नहीं। कुछ समझ सकते हो, कैसी प्यारी होती होगी उनकी होली, जिसका नाम है 'फुल-सग्यान' यानी फूलों की संक्रांति।

और बरसानेकी होलीको क्या कहोगे, जहां स्त्रियां लट्ठ लेकर पुरुषोंपर पिल पड़ती हैं और घंटे भर तक पुरुष अपनी ढालोंपर उनके लट्ठोंकी चोट खाते रहते हैं, गाते रहते हैं? कहीं ढाल जरा सी चूकी, तो गए कामसे!

हमारे पड़ोसी देश बर्मामें इस त्योहारका नाम 'तेच्या' है। लंकामें होलिकाकी पूजा होती है और इसी तरह रंग खिलता है। अमरीकामें 'हैलोवीन' ३१ अक्तूबरकी रातको मनाया जाता है। केवल रंग नहीं खिलता। इटलीमें 'रेडिका' मनती है। जर्मनीकी होली तो लगभग भारतीयों जैसी ही होती है। फ्रांसमें इसे बेवकूफोंका त्योहार कहते हैं, लेकिन बेवकूफ सबको बनना पड़ता है—वरना सिरपर सींग बंधा और गधा बना। अफ्रीकामें यहांकी होलिकाकी तरह एक प्राचीन अन्यायी राजाका पुतला जलाया जाता है। चेकोस्लोवेकियामें इसे 'बेलिया कोनेन्सो' कहते हैं। इसमें सुगंधित जलका प्रयोग होता है। पोलैंडमें 'आरशिना' के त्योहारमें फूलोंसे बना रंग प्रयुक्त होता है। साइबेरियामें यह कैम्प-फायरकी तरहका त्योहार होता है और मिस्रमें रंगोंका।

होली बरसाने की—'लो, और लो!'

संसार भरमें फैला हुआ यह त्योहार मनुष्यके जीनेकी आकांक्षाका प्रतीक है। यह उसके जीनेकी एक कला है—अपने मनके आनंद-उल्लासको दूसरोंपर उंडेलो, दूसरोंके निर्दोष अत्याचारोंको झेलो, सहन करो और सब एक रंगमें रंग जाओ—केवल होलीके दिन ही नहीं, उसकी यादगार साल भर तक मनके भीतर संजोए रखो। यह जीनेकी एक अद्भुत और मनोरंजक कला है। एक बात और—क्या तुम ध्यान रखोगे कि अत्याचार उसी समय तक मजेदार होता है, जब तक वह गुदगुदाता है! जब वह चोट पहुंचाने लगता है तब होलीका मधुर अत्याचार नहीं होता, मनका कलुष बन जाता है। ●

सिरफिरों का मनोविज्ञान

कुछ प्रतिक्रियाएं

('पराग' के जनवरी अंकमें प्रकाशित अलकारानी जैनके 'जीनेकी कला–४' के अंतर्गत प्रकाशित लेख 'सिरफिरोंका मनोविज्ञान' पर हमें अपने पाठकोंके बहुतसे पत्र प्राप्त हुए जिनमेंसे कुछ पत्रोंके महत्त्वपूर्ण अंश यहां छापे जा रहे हैं।)

स्वार्थी नेता

जनवरी '६७ के 'पराग' में बहन अलकारानीका लेख 'सिरफिरोंका मनोविज्ञान' कई बार पढ़ा। हर बार पढ़नेसे हम सिरफिरों द्वारा किए गए आंदोलनों-को भविष्यमें दोहरानेका विचार धूमिल-सा पड़ता गया। लेखमें जिस मनोवैज्ञानिक ढंगसे 'सिरफिरों' को समझानेका प्रयत्न किया गया है वह अत्यंत सराहनीय है।

मैं एक विद्यार्थी हूं, इसलिए विद्यार्थियों द्वारा सम्पूर्ण भारतमें की गई शर्मनाक हरकतोंका मैं भी साझेदार हूं। यह लेख पढ़नेके पश्चात् हृदय सिहर उठता है।

पिछले दिनों इलाहाबादमें काफी सरगर्मी रही। यह मोटर, यह गाड़ी, यह दफ्तर आदि सरकारी हैं—यह सोच-कर इनका विनाश किया गया लेकिन जब 'लेख' ने पश्चा-ताप कराया, तो पता चला कि उन मोटर-बसोंमें बैठे थे हमारे भाई, संबंधी।

जुलूसोंके आगे छात्रोंके नेता चिल्लाते 'हमारी मांगें' और हम भोंपूकी तरह चिल्ला उठते 'पूरी हों'। आखिर कौनसी न्यायसंगत मांगें हैं जो पूरी हों? क्या वे मांगें न्याय या कर्तव्यके दायरेमें आती हैं?

अलकाजीके शब्दों—'कब किस राजनैतिक पार्टीने, किस स्वार्थके अंधे नेताने...' को पढ़कर कहीं देखा हुआ एक कार्टून याद आ जाता है जिसमें 'सी-सॉ खेलके रूपमें चिंताग्रस्त अभिभावक धुरी बना बैठा है, जिसके सिरपर एक बोझिल पटरा पड़ा है। एक ओर बैठा है एक सिरफिरा तथा दूसरी ओर एक स्वार्थी, अंधा राज-नैतिक नेता मंद मंद मुस्कराता हुआ।

अंतमें अपने विद्यार्थी भाइयोंसे प्रार्थना है कि वह व्यर्थमें अपने अभिभावकोंका पैसा, अपने जीवनका अमूल्य समय तथा राष्ट्रका भविष्य कलंकित न करें।

—सरजप्रकाश नन्दा 'बुलबुल', इलाहाबाद।

गलत शिक्षा-प्रणाली

आधुनिक विद्यार्थीको ज्ञानसे कोई सरोकार नहीं, उसे तो बस मोटी-मोटी खर्चीली किताबोंमेंसे ३५ नंबर ढूंढने हैं। आधुनिक शिक्षा-प्रणालीमें एक विद्यार्थीको इतने विषय पढ़ने पड़ते हैं कि वह सिर्फ उत्तीर्ण होने लायक नंबर प्राप्त करनेके सिवाय कुछ सीखनेकी बात तो सोच ही नहीं सकता। आधुनिक शिक्षा विद्यार्थीकी आकांक्षा-को कोई महत्त्व नहीं देती। उदाहरणार्थ यदि कोई विद्यार्थी डाक्टर बनना चाहता है, तो आधुनिक शिक्षा उसे इंजी-नियर बननेपर मजबूर कर देती है और यदि कोई इंजी-नियर बनना चाहता है, तो उसे डाक्टर बननेपर मजबूर किया जाता है।... आखिर उनकी अस-फलताके मुख्य जिम्मेवार कौन हैं — विद्यार्थी या आधुनिक शिक्षा-प्रणाली? यही प्रणाली यदि विद्यार्थीके स्वाभाविक असंतोषको उसकी चरम सीमापर पहुंचा देती है, तो उसका दमन करनेके लिए हम अपने ही देशके नवयुवकोंपर गोलियां चलाते हैं, उन्हें उद्दंड एवं पागल विद्यार्थी होनेका खिताब देते हैं। आखिर मैं पूछता हूं छात्रोंके आंदोलनपर एक लंबा-चौड़ा विद्वत्ता-पूर्ण भाषण देने वालोंने कितनी बार छात्रोंसे मिलकर उनकी समस्याका समाधान करनेका प्रयत्न किया है?

यह तो निर्विवाद सत्य है कि आजकी खर्चीली शिक्षा एक क्लर्कके लड़केके लिए सुलभ नहीं है और जो दाने दानेको मोहताज रहकर कुछ शिक्षा पा भी जाते हैं वे १०० रु. तक की नौकरी पानेके लिए निराशाके दरवाजोंपर दर दरकी ठोकरें खाते हैं। आखिर इसे हम प्रजातंत्रकी किस श्रेणीमें रखें, जहांके नागरिकोंको सस्ती शिक्षा तक सुलभ नहीं? तब ऐसी शिक्षा केवल बेकारीकी समस्या बढ़ाकर देशकी चहुंमुखी उन्नति एवं शक्तिपूर्ण वातावरणमें कहां तक सहायक हो सकती है?

अतः यदि हमें छात्र-आंदोलनके तथ्योंको सही मानेमें समझना है तथा उसे शांत करना है, तो गोलियोंकी बौछारसे नहीं, बल्कि विद्यार्थियोंसे सहृदयतापूर्ण व्यवहार तथा आधुनिक शिक्षा प्रणालीमें उचित सुधारसे ही ऐसा किया जा सकता है।

—सुरेशकुमार एस. अग्रवाल, बम्बई।

असामाजिक तत्व

इन सबके लिए विद्यार्थियोंको दोष देना न्याय संगत नहीं है। 'गुरुदेव' के अनुसार—'विद्यार्थी एक ऐसा छोटा-सा पौधा है जिसे जिधर चाहे मोड़ा जा सकता है।' इसलिए यदि उन्हें कोई असामाजिक तत्व

फुसलाकर अपने हथियारोंके रूपमें प्रयोगमें लाए, तो वह असामाजिक तत्व ही अपराधी है, विद्यार्थी नहीं।

—प्रमोदकुमार रेखी, लखनऊ।

व्यक्तिगत समस्याएं

मैं स्वयं एक छात्र हूं। मेरा एक निकट मित्र पढ़नेमें अच्छा भला है, किसी प्रकारकी विशेष आर्थिक कठिनाई भी नहीं उसे। फिर भी पिछले दिनोंके छात्र-आंदोलनमें उसने डटकर पत्थरबाजी की। मैंने कारण पूछा, तो मुसकराकर उसने कहा, "मजा आता है!" वह छात्र निश्चय ही 'सिरफिरा' नहीं है— दूसरे छात्रों जैसा ही है। असलमें अध्यापक आदि अगर विद्यार्थीके व्यक्तिगत जीवनमें रुचि लें और उसे समय समयपर उसकी व्यक्तिगत समस्याओंपर उचित सलाह दें, तो संभवतः छात्र किसी प्रकारका रचनात्मक कार्य कर सकें; अन्यथा यह 'सिरफिरे' बढ़ेंगे ही। छात्रोंके विचारों, उनकी अभिरुचियोंपर स्कूल और कालेजके जीवनका व्यापक प्रभाव पड़ता है। उनमें कुण्ठाएं तभी जन्मती हैं जब अध्यापक उनकी भावनाओंको उपेक्षित दृष्टिसे देखते हैं।

—विनोदकुमार भारद्वाज, लखनऊ।

रचनात्मक कार्योंका अभाव

छात्रोंपर अनुशासनहीनताके दोषारोपणमें आंशिक सत्य भले ही हो, पूर्ण सत्य नहीं है।

एक ओर हमारी दूषित शिक्षा-प्रणाली है, तो दूसरी ओर असंतुष्ट अध्यापकोंकी उत्तरदायित्वहीनता है; तीसरी ओर समाज तथा सरकारकी उदासीनता है, तो चौथी ओर आदर्श एवं विचारवान अध्यापकोंका सर्वथा अभाव है; पांचवीं ओर अभिभावकोंकी अपने बच्चोंके प्रति ही नहीं बल्कि समाज तथा शिक्षाके प्रति विरक्ति है। फलतः छात्रोंको अपना भावी जीवन अंधकारमय दिखाई पड़ता है और वे निराशा तथा क्रोधकी तीव्रतामें विध्वंसात्मक कार्य कर बैठते हैं। आज हमारा समाज, हमारी सरकार, हमारे नेता, हमारे पालक, हमारी संसद व हमारी विधान सभाएं छात्रोंपर अनुशासनहीनताका दोषारोपण करती हैं। लेकिन उनको पहले अपनी ओर एक दृष्टि डाल लेनी चाहिए, जिससे उनको मालूम हो जाए कि वह स्वयं कितने पानीमें हैं।

मैं दावेके साथ कह सकता हूं कि यदि छात्रोंको अत्यल्प छुट्टियां दी जाएं और उनके लिए रचनात्मक कार्य करनेका व्यापक क्षेत्र प्रस्तुत कर दिया जाए, तो उनकी विनाशात्मक शक्तियां सृजनके उत्तमसे उत्तम कार्य करने और देशके हितमें बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। कहां हैं छात्रोंके मनोरंजनके स्थान? कहां हैं छात्रोंके लिए उत्तमोत्तम पुस्तकालय? कहां हैं उनके लिए खेलने-कूदनेके पर्याप्त मैदान? कहां हैं उनके सांस्कृतिक, रचनात्मक, औद्योगिक और वैज्ञानिक विकासके लिए प्रचुर साधन सामग्रियां?

यह कैसी हास्यास्पद बात है कि हम बोल तो लोकतांत्रिक शिक्षा-प्रणालीका पीटें और सामन्तवादी शिक्षा प्रणालीका अनुकरण करें।

—चांद राय, पटियाला।

बेकारीका भूत

'सिरफिरोंका मनोविज्ञान' में लेखिकाने, सिरफिरेपनको जिस तरह केवल युवकोंपर ही थोपना चाहा है और उसका संबंध उनके असंतोष और विद्रोहसे जोड़ना चाहा है, वह अत्यंत अटपटा लगता है। पिछले दिनों देश भरमें विद्यार्थियोंके जो हिंसात्मक आंदोलन हुए, उसके तात्कालिक कारण जो भी रहे हों, वस्तुतः उसके मूलमें दो मुख्य कारण ही नजर आते हैं—एक तो वर्तमान शिक्षा-प्रणालीमें व्यावहारिकताकी कमी और पाठ्यक्रमका परिमाणमें अत्यधिक होना और दूसरे डिग्री पानेके पश्चात् भी विद्यार्थीका भविष्य अंधकारमय ही रहना।

प्रत्येक स्कूल व कालेजमें विद्यार्थियोंका एक प्रतिनिधि संगठन होता है, लेकिन विद्यार्थियोंके संबंधमें कोई नया नियम अथवा निश्चय करनेसे पूर्व उनसे बात भी नहीं की जाती। और जब विद्यार्थियोंका प्रतिनिधिमंडल उस निश्चयपर पुनर्विचारके लिए प्रार्थना-पत्र भेजता है तो उसे रद्दीकी टोकरीमें डाल दिया जाता है।

—देवेन्द्र राज 'अंकुर', नई दिल्ली।

दूषित शिक्षण-प्रणाली

'जीनेकी कला' के अंतर्गत काफी बढ़िया एवं उपयोगी सामग्री आप प्रकाशित करते हैं। इसके लिए बधाई स्वीकार करें।

आज छात्रोंमें आक्रोशकी तीव्र भावना आनेका एक मात्र कारण शिक्षा प्रणालीमें दोष है। आज छात्रोंके ऊपर इतना कार्यभार है कि वह घरका काम, स्कूलका काम, टर्म वर्क, सेशनल वर्क, छोटे छोटे टेस्ट और परीक्षाके बोझसे इतना दबा हुआ है कि वह चाहता है कब यह बोझ हटे और कब वह नीरसतासे दूर हो।

छात्रोंके पीछे इन उपद्रवी राजनैतिक लोगों एवं गुंडोंको न देखकर लोग छात्रोंको ही दोषी बताते हैं। उन्हें तो सिर्फ विद्यार्थी हड़ताल करता हुआ, आग लगाता हुआ तथा तोड़फोड़ करता दिखाई देता है।

—अनुपम सक्सेना, रतलाम।

पुलिसकी ज्यादती

मैं विद्यार्थी होनेके नाते यह सहन नहीं कर सकता कि लेखिका अलकारानी विद्यार्थीकी तुलना सिरफिरोंसे करें। हाल हीमें हुए उज्जैन माधव कालेजके विद्यार्थी-पुलिस संघर्षमें पुलिसने विद्यार्थियोंको क्लासोंमें बंद करके मारपीट की थी। इसमें ९५ प्रतिशत दोष पुलिसका था। इसपर वहांके प्राचार्यने विद्यार्थियोंका पक्ष लिया था। क्या लेखिका उनकी तुलना भी 'सिरफिरों' से करेंगी?

—वली मुहम्मद सुलेमान, रतलाम।

महा??? सम्मेलन (पृष्ठ ३४ से आगे)

भोलाकी बातका नौरंगीलाल खंडन भी नहीं करने पाए थे कि चंदू उनके पास जा धमका, "लालाजी, इतने लोगोंके सामने अपनी भद्द मत कराओ। सब कंजूस समझेंगे। झटपट पच्चीस रुपये निकालो, होलीका मामला है।"

अब नौरंगीलाल बुरे फंसे। उस समय एक रुपया नहीं दिया, अब भोलाने चालाकीसे पच्चीस रुपयेकी बात कह दी। इतने लोगोंके सामने अगर कुछ कहें, तो जग-हंसाईका डर। चुपचाप रुपये दे दिए।

भोला एक बार फिर बोला, "सभापतिजीको मुझे भी मिठाई देनी चाहिए, क्योंकि मैंने जिस चालाकीसे उन्हें सबके सामने मूर्ख बनाया है वह अच्छी तरह जानते हैं!"

●

सभापतिजी झेंपे-से उठे, बोले, "हां, भोला भी मिठाईका हकदार है। आजके पुरस्कार विजेता चम्पकलाल, छेदा, भोला, चंदू और हरभजन कल ग्यारह बजे आकर अपनी मिठाई खानेको निमंत्रित हैं।"

सम्मेलन समाप्त हुआ। सभापतिजीने चैन-की सांस ली, जान बची। वह चलनेको हुए, लेकिन भोलाने उन्हें रोक लिया। बोला, "नौरंगीलालजी, हम बालकोंने मुख्य मुख्य लोगोंके लिए हल्की-फुल्की पार्टीका इंतजाम किया है; आइए।"

उन्हें जहां ले जाया गया, वहां एक मेजकी चारों ओर आठ कुर्सियां लगी थीं। उन कुर्सियों-पर चम्पकलाल, मुहल्लेके नेता गोपीचंद, छेदा, वगैरा मौजूद थे। लाला भी बैठ गए। चंदू और भोलाने प्लेटें सजाना शुरू कर दीं। एक प्लेट समोसेकी थी, एकमें लड्डू थे और एकमें रबड़ी। भोलाने प्लेटें लगानेके बाद कहा, "यह सब लाला-जीसे मिले रुपयोंका प्रसाद है। उनमेंसे एक रुपया लक्कड़ लानेको अलग रख दिया गया है।"

चम्पकलाल वगैराके साथ लालाजीने भी पूराका पूरा समोसा मुंहमें गपसे रख लिया और दो-तीन बार मुंह चलाया, चेहरेपर पसीना आ गया। मिर्चोंके मारे सिसकारी भरते हुए पानी-की तलाश की। पानी नहीं था। इंतजार भी नहीं किया झटसे एक लड्डू उठाकर मुंहमें रख लिया। तब थोड़ी शांति मली। अब उन्होंने दूसरोंको देखा —चंदू और भोलाको छोड़कर सबका यही हाल था। अलबत्ता चम्पकलाल लड्डू भी थू-थू करते नजर आ रहे थे। खैर, मिर्चकी तेजी अच्छी तरह दबानेको लालाने रबड़ीकी प्लेट उठाई। अब उन्हें भी 'थू-थू' करना पड़ा। रबड़ीकी निचली पर्तमें खड़िया बिछी थी। गुस्सा तो उनका आसमानपर जा पहुंचा, लेकिन बोले नहीं। उन्हें यह संतोष भी था कि दूसरोंका भी यही हाल है। उन्होंने दूसरे लड्डूको तोड़कर देखा, उसमें कंकड़ भरे थे। मन ही मन सोचा, पहली बार यह लड्डू हाथ नहीं पड़ा यही गनीमत है। बाहरसे खिलखिलाकर हंसते हुए बोले, "मान गए, बच्चो, तुम्हारी शैतानीको। तबीयत खुश कर दी। हां, तो कल तुम लोग आ रहे हो न?"

चंदू बोला, "नहीं, लाला, अब आप गिन गिन कर बदला लेंगे; हम नहीं आनेके।"

लालाजीने आश्वासन दिया: "वादा करता हूं जो मिठाईमें कोई शिकायत निकल आए। एकदम बढ़िया मिठाई मिलेगी। सच तो यह है कि तुम लोगोंने मुझमें होलीके लिए जोश पैदा कर दिया। अभी तक मैं होलीके नामसे ही चिढ़ता था।"

●

दूसरे दिन सभी आमंत्रित लालाजीके घर पहुंचे। सचमुच लालाजीने उनके आगे बढ़िया मिठाइयां रखीं। मजा यह, सब लोग डरते डरते हर अददपर हाथ लगा रहे थे। उन्हें हर चीजमें कोई न कोई गड़बड़ी होनेका शक हो रहा था। लेकिन उनकी शंका बेकार निकली, मिठाइयां सब ठीक थीं और बहुत अच्छी थीं। सबने छककर खाईं।

चलने लगे, तो लालाजीने इलायचियां पेश कीं। चूंकि मिठाइयां खब खाईं थीं इसलिए करीब करीब सभीने दो दो इलायचियां लेकर मुंहमें डालीं। यहीं बात बिगड़ गई। इलायचियां बहुत कारीगरीसे बनाई हुई मिट्टीकी थीं। मिट्टी-ने मुंहमें किर-किर पैदा की। सबको झुरझुरी पैदा हुई और सब कोरसमें एक साथ 'थू-थू' करने लगे। नौरंगीलाल विजयी भावसे मुसकरा रहे थे और पानीका लोटा कुल्ला करनेको बढ़ा रहे थे। ●

(इस स्तंभमें बच्चोंके लिए नव प्रकाशित पुस्तकोंका परिचय दिया जाता है, जिससे बच्चे उन्हें पढ़ें और अपनी ज्ञानकी प्यास बुझाएं। परिचयके लिए पुस्तकोंकी दो दो प्रतियां भेजी जानी चाहिएं। —संपादक)

● जलका चमत्कार (पृष्ठ संख्या ३२) ● बिजलीका चमत्कार (पृष्ठ संख्या ४०) ● हवाका चमत्कार (पृष्ठ संख्या ४०) ● चुम्बकका चमत्कार (पृष्ठ संख्या ३२) ● चर्मप्रदायक जन्तु (पृष्ठ संख्या २८) ● सागरकी कहानी (पृष्ठ संख्या ४८) ● बाल भौतिकी (पृष्ठ संख्या ३६); प्रत्येकका मूल्य : एक रुपया पचास पैसे; प्रकाशक : भारतीय भाषा यूनिट, कौंसिल ऑफ साइंटिफिक एण्ड इण्डस्ट्रियल रिसर्च, नई दिल्ली–१२।

पहली पांच पुस्तकें 'विज्ञान विनोद पुस्तकमाला' के अंतर्गत चारसे आठ वर्षके बच्चोंके लिए लिखी गई हैं।

'जलका चमत्कार' में—जल कहांसे मिलता है, वह किस किस काम आता है, वर्षा कैसे होती है—जैसे अनेक प्रश्नोंका उत्तर दिया गया है। 'बिजलीका चमत्कार' में—बिजली क्या है, कैसे पैदा होती है, किस किस काम आती है—आदि बातोंपर प्रकाश डाला गया है। 'हवाका चमत्कार' में बताया गया है कि हवा क्या है, वह हमारे किस काम आती है, स्वच्छ वायु और दूषित वायुमें क्या अंतर होता है। 'चुम्बकका चमत्कार' चुम्बकके संबंधमें प्रारंभिक जानकारी देनेके उद्देश्यसे लिखी गई है। 'चर्मप्रदायक जन्तु' में ऐसे चौबीस जन्तुओंका परिचय दिया गया है जिनकी खालसे हम अपने रोजानाके इस्तेमालकी सैकड़ों चीजें बनाते हैं।

इन पांचों पुस्तकोंमेंसे पहली चार पद्यमें हैं और मोटे टाइपमें छपी हैं। पांचवीं गद्यमें है। सभी पुस्तकें आर्ट पेपरपर छपी हैं और उनमें रंग-बिरंगे चित्र काफी बड़ी संख्यामें दिए गए हैं। चारसे आठ वर्ष तकके बच्चोंके लिए उपयुक्त सरल, सुबोध और मुहावरेदार भाषाका प्रयोग किया गया है।

आगेकी दो पुस्तकें 'किशोर विज्ञान पुस्तकमाला' के अंतर्गत आठसे बारह वर्ष तकके बच्चोंके लिए प्रकाशित की गई हैं।

'सागरकी कहानी' में जल, खाद्य पदार्थ, कच्चे माल, शक्ति और जीवोंके अगाध भंडार सागरके बारेमें संक्षिप्त किंतु आधुनिकतम जानकारी दी गई है। 'बाल भौतिकी' में भौतिक शास्त्रके बारेमें प्रारंभिक जानकारी दी गई है।

दोनों पुस्तकें यथा स्थान सादे और रंगीन चित्रोंसे सुसज्जित हैं।

भाषा यूनिट द्वारा प्रकाशित इन सभी पुस्तकोंकी छपाई-सफाई और साज-सज्जा संतोषजनक है।

● जर्मन परी-कथाएं—भाग १ (पृष्ठ संख्या ५४); लेखक : ग्रिम बन्धु; मूल्य : तीन रुपये; प्रकाशक : हंस पब्लिशर्स, निकल रोड, बम्बई–१।

ग्रिम बन्धु अपनी परी-कथाओंके लिए बाल-जगतमें बड़े लोकप्रिय रहे हैं। इन्हीं बन्धुओंकी आठ परी-कथाओंका हिन्दी अनुवाद इस पुस्तकमें दिया गया है। प्रकाशकके अनुसार अनुवाद सीधे मूल जर्मन भाषासे कराया गया है। अनुवादकी भाषा साफ-सुथरी, सरल-सुबोध और मुहावरेदार है। हर कहानीके साथ एक एक रंगीन चित्र दिया गया है। पुस्तक बड़े आकारमें मोटे कागजपर बड़े टाइपमें छपी है। छपाई-सफाई और साज-सज्जा अच्छी है। पुस्तक छोटे बच्चोंके लिए उपयोगी है।

● चिकित्साके महान् आविष्कारोंकी कहानी (पृष्ठ संख्या १४७); लेखक : डेविड डायट्ज; अनुवादक : धर्मपाल शास्त्री ● अंतरिक्षमें उड़ानकी कहानी (पृष्ठ संख्या १३५); लेखक : हेरल्ड एल. गुडविन; अनुवादक : अजयकुमार; मूल्य प्रत्येकका : दो रुपये पचास पैसे; प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली।

पहली पुस्तक डेविड डायट्जकी प्रसिद्ध पुस्तक 'आल एबाउट मैडिकल डिस्कवरीज' का हिन्दी अनुवाद है। पुस्तकमें मानव शरीर, हृदयका रहस्य, हत्यारे जीवाणु, चेचक और टीका, कण्ठरोधक झिल्ली, पीला बुखार, बेधनशील एक्स किरणें, विटामिन, मिट्टीसे प्राप्त जीवाणुनाशक, पोलियोंके विरुद्ध लड़ाई जैसे अनेक चिकित्साके विषयोंकी कहानी कही गई है।

दूसरी पुस्तक 'अन्तरिक्षमें उड़ान' हैरल्ड एल. गुडविनकी 'आल एबाउट रोकेट्स एण्ड स्पेस फ्लाइट' का हिन्दी अनुवाद है। इसमें अन्तरिक्षमें उड़नेके मानव प्रयत्नोंकी कहानी विस्तारसे कही गई है।

दोनों पुस्तकोंके अनुवाद संतोषजनक हैं। दोनोंमें विषयको समझानेके लिए यथा स्थान चित्रोंका सहारा लिया गया है। ये पुस्तकें स्कूलके बड़े बच्चों, कालेजके विद्यार्थियों और इन विषयोंमें दिलचस्पी रखने वाले व्यक्तियोंके लिए उपयोगी हैं।

छपाई-सफाई अच्छी है।

● भाप इंजनकी सच्ची कहानी (पृष्ठ संख्या १४९), लेखक : फ्रेडरिक ई. डीन; अनुवादिका : कुमारी शांतादेवी, मूल्य : तीन रुपये; प्रकाशक : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 'चन्द्रलोक', जवाहरनगर, दिल्ली–७।

'भाप इंजनकी सच्ची कहानी' फ्रेडरिक ई. डीनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'दी बुक एबाउट स्टीम एंजिन' का हिन्दी अनुवाद है। इसमें भापकी शक्तिकी खोज, उसके उपयोग, प्राचीनतम व्यावहारिक भाप-इंजन, जहाजोंमें भापका प्रयोग, सड़क और रेल-परिवहनमें भापका इस्तेमाल—आदिके बारेमें विस्तारसे बताया गया है। पुस्तक स्कूलके बड़े बच्चों और कालेजके विद्यार्थियोंके लिए उपयोगी है। अनुवाद अच्छा हुआ है। छपाई-सफाई और साज-सज्जा अच्छी है।

—लक्ष्मीचंद्र गुप्त

ऐतिहासिक अद्भुत कथा

बोलनेवाला शुक

www.kissekahani.com

एक बार गुजरातके नहरवाला नगरपर राय जयसिंहका शासन स्थापित हुआ। राजा जयसिंह बड़ा न्यायप्रिय, प्रजावत्सल तथा बुद्धिमान शासक था। नहरवालाके ऊपर वह पहला ही शासक था, जिसने 'राय' की बड़ी पदवी धारण की थी।

धीरे धीरे उसकी प्रसिद्धि चारों दिशाओंमें फैल चली। फैलते फैलते वह द्रविड़ देशके सम्राटकी राजसभामें भी पहुंची। उसकी पदवी भी 'राय' के नामसे ही जानी जाती थी। द्रविड़ देशके राजाको इसपर बहुत क्रोध आया। उसने तुरंत अपने कुछ राजदूत राजा जयसिंहके पास भेजे। उनके हाथों उसने यह संदेश भी भेजा :

"नहरवालापर आज तक कोई राय नहीं हुआ। यह केवल चोरों ओर लुटेरोंकी भूमि रही है। इसलिए डींग मारते मारते जो तुम 'राय' बन बैठे हो, तो तुम्हें सूचित किया जाता है कि यह खेल बड़ा खतरनाक है। अगर हमारा संदेश पाते ही तुमने 'राय' की इस महत्वपूर्ण पदवीको अपने अपवित्र तनसे अलग न किया, तो हमारे इतने अश्वारोही गुजरातके ऊपर चढ़ दौड़ेंगे कि उनके अश्वोंकी तरनालोंसे गुजरातकी पृथ्वी ही उलट जाएगी।"

राय जयसिंहने द्रविड़ सम्राटके रागदूतोंकी बड़ी आवभगत की। उनको उत्तम उत्तम भोजन कराए और उन्हें राजकीय अतिथिशालामें ठहराया। उनसे कहा गया कि आप लोग अभी कुछ दिन आराम करें, क्योंकि इतनी दूरकी यात्रा

करके अवश्य ही आप थक गए होंगे। एक सप्ताहके भीतर राय जयसिंह आपके संदेशका उत्तर देंगे।

दो-तीन दिन उन राजदूतोंकी ऐसी सेवा हुई कि वे अपने आपको राजदूत न समझकर छोटे-मोटे राजा ही समझने लगे। तीन दिन बाद उन्हें राय जयसिंहकी राजसभामें उपस्थित रहनेका निमंत्रण मिला। समय काटे न कट रहा था, इसलिए वे सहर्ष राय जयसिंहकी राजसभामें जा पहुंचे।

कुछ देर राय जयसिंह सामान्य कामकाज निबटाते रहे। इसके बाद फरियादीके रूपमें एक नर्त्तकीको राजसभामें प्रस्तुत किया गया।

नर्त्तकीका आरोप था कि पिछली रातको उसके घर एक रईसजादा आया था। उसने उसका नृत्य देखा, गाना सुना और रातभर उसके घर अतिथि बनकर रहनेकी प्रार्थना की। जब उसको अनुमति मिल गई और उसे सोनेको जगह दे दी गई, तो नर्त्तकी भी विश्राम करने चली गई। फिर न जाने रातमें किस समय उसने उठकर घरका सारा कीमती सामान समेटा और कूच कर गया। नर्त्तकीका आरोप था कि इसके लिए शहर कोतवाल उत्तरदायी है और स्वयं उसे उसका चुराया हुआ धन वापस किया जाए . . . तुरंत!

राय जयसिंहने शहर कोतवालको हाजिर होनेका हुक्म दिया। जब उसके सामने राय जयसिंहने नर्त्तकीका आरोप रखा और उसे आज्ञा दी कि वह नर्त्तकीके नुकसानकी भरपाई स्वयं अपने

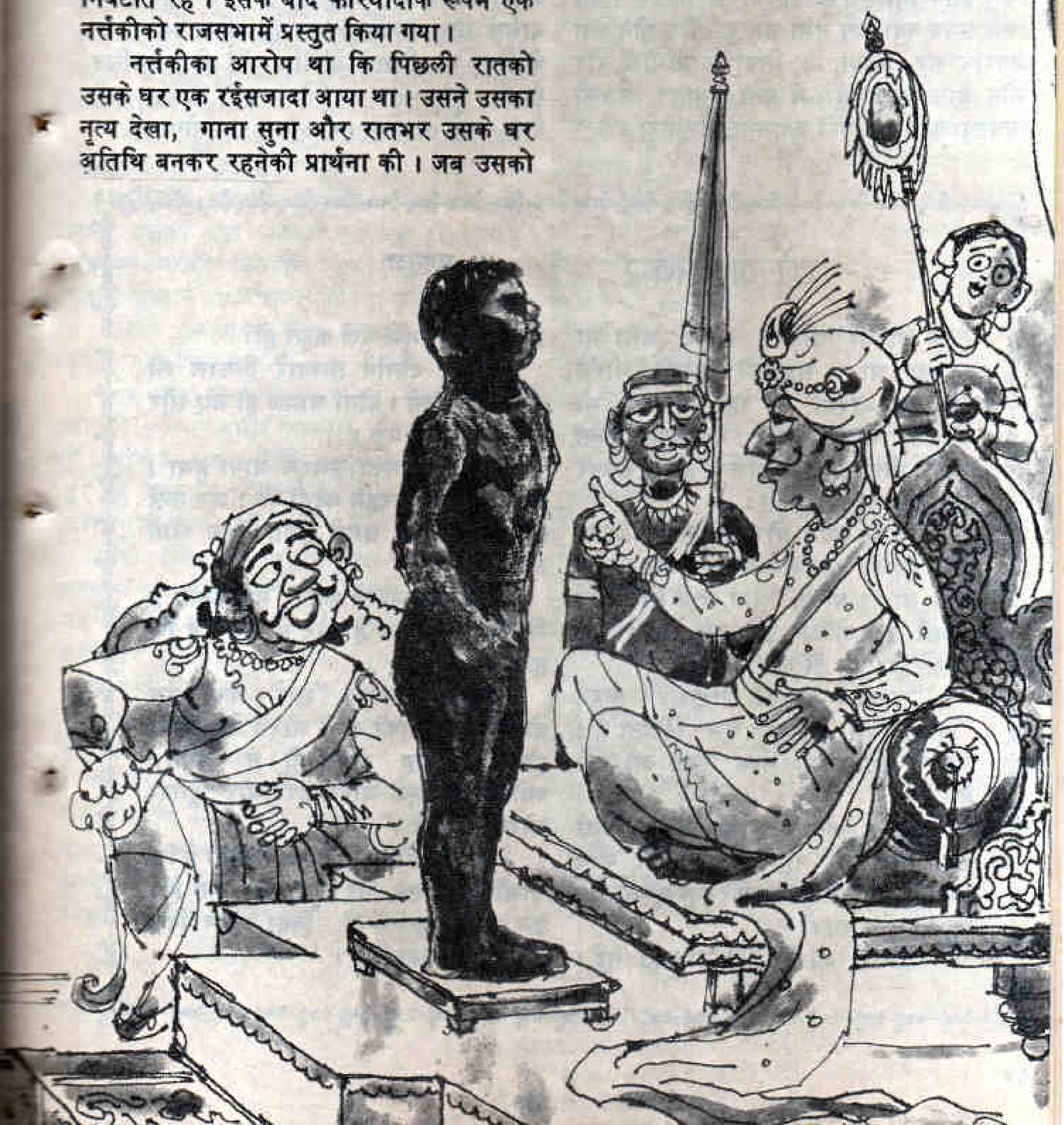

धनसे करे, तो वह चकराया। सिर झुकाकर बोला, "राय जयसिंहकी जय हो। यह सही है कि शहरमें यदि कोई चोरी-डकैती हो, तो उसका पता लगानेकी जिम्मेदारी इस दासकी है। पता न लगनेपर नुकसानकी भरपाई भी मैं करनेको तैयार हूं। इसके लिए मुझे एक सप्ताहका अवसर दिया जाए।"

राजाने कहा, "किंतु यह नर्त्तकी अपने नुकसानकी भरपाई तुरंत चाहती है। इसलिए तुम्हें भरपाई करनी होगी।"

"महाराज," कोतवाल बोला, "आपकी जो आज्ञा होगी, सेवक उसका पालन अवश्य करेगा। किंतु इतने विशाल गुजरात देशमें किसके मनमें किस समय क्या पाप समा जाएगा और कौन क्या अपराध कर बैठेगा, यह सिवा अंतर्यामीके और कौन जान सकता है? मैं पता लगाकर दंडकी व्यवस्था करूं, यही मेरी कुशलता और मेरा उत्तरदायित्व है। इसके लिए एक सप्ताहका समय कमसे कम है। इसके बाद पता न लगा, तो दास रायजूकी आज्ञाका पालन करेगा।"

"नहीं," राज जयसिंहने द्रविड़राजके राजदूतोंकी ओर कनखियोंसे देखते हुए कहा। राजदूत भी चकित थे। देखती आंखों कोतवालका तर्क एकदम उचित और संगत था। उन्होंने आश्चर्यसे रायकी ओर देखा। राय कोतवालसे कह रहा था, "अपराधको रोकना, और अपराध हो जानेपर उसका पता लगाना, ये दोनों ही काम कोतवालके हैं। प्रजामेंसे किसीके मनमें किसी भी समय अपराधकी भावना आए यह न केवल शहर कोतवालके लिए लज्जाकी बात है, बल्कि उस राज्यके लिए भी, जिसमें अपराध हुआ हो। इसलिए या तो तुरंत पता लगाओ— इसी समय, इसी दम—नहीं तो स्वयं हमें कष्ट करना होगा।"

दो शहसवार

—प्रकाश

एक आदमी घोड़ेपर सवार चला आ रहा था। सड़ककी दूसरी ओरसे भी एक आदमी आ रहा था, वह भी घोड़ेपर सवार था। संयोगवश जिस वृक्षके नीचे उनका मिलना हुआ, उसपर एक ढाल लटक रही थी।

"कैसी सुंदर और हरे रंगकी ढाल है!" पहला शहसवार बोला। जब दूसरेने सुना, तो वह बोला, "भैया, ढाल तो अवश्य अच्छी है, लेकिन इसे हरे रंगकी क्यों बताते हो? यह तो लाल रंगकी है!"

"लाल?" पहलेने चिढ़कर कहा, "प्रतीत होता है तुम्हें कम दिखता है। यह तो हरे रंगकी साफ नजर आ रही है।"

दूसरेने क्रोधमें आकर कहा, "मुझे कम नजर आ रहा है या तुम्हें? कौन मूर्ख है, जो इसे हरे रंगकी कह सकता है? यह तो लाल रंगकी है।"

पहलेकी आंखें क्रोधसे लाल हो गईं। उसने कहा, "मुझे मूर्ख कहते हो?"

इसपर दोनोंने तलवारें निकाल लीं और लड़ने लगे। दोनों घायल हो गए और जमीनपर गिर पड़े।

एक किसानका उधरसे आना हुआ। उसने दोनोंकी मरहम पट्टी की। जब उन्हें होश आया, तो उसने पूछा, "तुम लोग लड़ क्यों पड़े?"

एक शहसवारने कहा, "यह कहता है कि यह ढाल लाल है और मैं कहता हूं कि हरी है।"

किसानने कहा, "भाई, अगर तुम दोनोंने इस ढालको दोनों ओरसे देख लिया होता, तो यह नौबत ही न आती; क्योंकि ढाल एक ओरसे हरी और दूसरी ओरसे लाल है।"

इस कहानीसे हमें शिक्षा मिलती है कि चीजोंके कई रूप और कई पहलू होते हैं। उन सभी पहलुओंपर बिना ध्यान दिए लड़ पड़ना नादानी है।

यह सुनते ही कोतवाल मानो आसमानसे गिरा और उसके साथ साथ औंधे मुंह द्रविड़ राजदूत भी। नर्त्तकी और सारी राजसभा आंखें फाड़कर राय जयसिंहकी ओर देखने लगीं। जिस अपराधका पता अपने हजारों सिपाहियोंकी शक्तिसे, सैकड़ों धुरंधर गुप्तचरोंके प्रयत्नसे भी कोतवाल 'तुरंत' नहीं लगा सकता था, उसका पता राय जयसिंह राजसिंहासनपर बैठे बैठे कैसे लगा सकते थे?

राय जयसिंहने कहा, "इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं। इसका पता हम अपने हब्शीके पुतलेसे लगा सकते हैं। उसे राजसभामें हमारे सामने लाया जाए।"

तुरंत रायके पीछे खड़े उनके विशेष सेवक दौड़े और एक काला आदमकद पुतला अपने कंधोंपर उठाकर लाते नजर आए। वह काले संगमरमरका बना हुआ था। उसे उन्होंने राय जयसिंहके ठीक सामने रखा।

रायने पुतलेसे पूछा, "क्यों रे पुतले, इस नर्त्तकीका धन कहां है?"

कुछ देर तक वह पुतलेकी ओर देखते रहे, मानो उसकी बात ध्यानसे सुन रहे हों। फिर संतोषसे गरदन हिलाकर उन्होंने द्रविड़ राजदूतोंसे पूछा, "आपने सुना पुतलेने क्या कहा?"

उन्होंने इनकारमें सिर हिलाया, "हमें तो कुछ सुनाई दिया नहीं।"

"तब आप लोगोंको सुनाई नहीं देगा, क्योंकि आपकी भावना हमारे राज्यके प्रति पवित्र नहीं है। पुतलेका कहना है कि हनुमान मंदिरसे सौ पग दूर जो अकेला अमरूदका पेड़ है, उसीकी जड़में सारा माल दबा हुआ है।"

सारी राजसभामें सन्नाटा छा गया। कोतवालका इशारा पाते ही तुरंत उसके सैनिक दौड़ गए और एक घड़ी बीतते न बीतते उन्होंने आकर समाचार दिया कि पुतलेका कहना सही था। सारा माल मिल गया है। इस बीच राय जयसिंह राजसभाका अन्य कामकाज निबटाते रहे और पुतला वहीं खड़ा रहा।

नर्त्तकीने राय जयसिंहको लाख धन्यवाद दिया, प्रणाम किया और उनकी आज्ञासे अपना माल लेकर चली गई। रायने कोतवालकी ओर हंसकर देखा। वह लज्जित होता हुआ बोला, "महाराज, यह तो चमत्कार हो गया! इतना

(शेष पृष्ठ ६९ पर)

मनोरंजक प्रश्नोत्तर

प्रश्न : स्त्रियां बाजारसे हर समय कुछ न कुछ क्यों खरीदती रहती हैं?

उत्तर : क्यों कि मुफ्तमें कोई नहीं देता!

प्रश्न : वह क्या वस्तु है जिसका न तला है और न सिरा, फिर भी उसमें मांस और हड्डी रह सकते हैं?

उत्तर : अंगूठी!

प्रश्न : 'मोटरकार'में पांच आ जाते हैं जब कि 'गाड़ी'में केवल दो। बताइए हम कौन हैं?

उत्तर : अक्षर।

प्रश्न : वह क्या है जो पंखसे भी हलका है, पर जिसे तुम एक मिनिटसे अधिक तक नहीं रोक सकते?

उत्तर : सांस!

प्रश्न : वह क्या है जो तुम्हारा है, पर तुमसे अधिक दूसरे लोग उसे उपयोग करते हैं?

उत्तर : तुम्हारा नाम!

प्रश्न : वह क्या है जो दिनमें हजारों बार अलग होती है, पर साथ नहीं छोड़ पाती?

उत्तर : आंखोंकी पलकें!

प्रश्न : कौनसी चीज दिखती नहीं, पर सदैव बदलती रहती है?

उत्तर : हमारा मन!

प्रश्न : वह कौन है जो जहां भी जाता है, अपना घर अपने साथ घसीटता हुआ ले जाता है?

उत्तर : कछुआ!

प्रश्न : वह क्या है जो गोल है, उसके आंखें भी हैं पर देखता नहीं?

उत्तर : बटन!

प्रश्न : कौन-सी चीज है जो मकानसे ऊंची है, पर चूहेसे छोटी?

उत्तर : चांद!

प्रश्न : कौन-सी चीज कई आंखें होते हुए भी कभी रोती नहीं?

उत्तर : आलू!

प्रश्न : सोमवार मंगलवारके बाद कहां आता है?

उत्तर : कोषमें!

—शरत्

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627395
mshahid.shahid786@gmail.com

बेपैसे का फोटो-कैमरा: चुटकियों में बनाओ फोटो खींचो

— अरुणकुमार

www.kissekahani.com

बच्चो, यह तुम्हारे 'पराग' का विशेषांक है न—सो तुम्हारे संपादक दादाने हमसे कहा कि इस बार खिलौनोंके डिब्बेमें बच्चोंको कोई ऐसा उपहार दिया जाए, जिससे वे हमेशा अपने 'पराग' की याद ताजा रखें। इसलिए हमने खूब ढूंढ-खोज करके एक ऐसा फोटो-कैमरा बनानेकी विधि प्राप्त कर ली जिसे बनानेमें तुम्हारा कुछ भी खर्च न हो। इसे बनाओ और झटसे अपने भाई-बहनों और मित्रोंके फोटो खींचो। ताज्जुब तो यह है कि फोटो धोनेका प्रबंध भी इसीके भीतर है।

अपने घरमें ही एक ऐसा गोल डिब्बा प्राप्त करो, जिसमें लगभग एक पौंड काफी या चाय आ जाती हो। ढक्कन लगानेका तरीका सामनेके पृष्ठके चित्रके अनुसार होना चाहिए—यानी डिब्बेके अंदर बाढ़ निकली नहीं होनी चाहिए।

डिब्बेकी तलीमें लगभग आधा इंचकी एक नली चित्रमें दिखाए अनुसार फिट करो। अगर कोई चूड़ियां कटी हुई नलीका टुकड़ा मिल जाए, तो उतना ही चौड़ा गोल छेद करके उसकी दोनों तरफ नट कस दो। नहीं तो किसी भी टिनसाज-से साधारण नलीका एक टुकड़ा डिब्बेके नीचे, तलीसे लगता हुआ फिट करा लो। वह जस्तेका टांका लगाकर उसके जोड़को वाटरप्रूफ कर देगा।

अब एक आठ इंच लंबी रबड़की ट्यूब (नली) काले रंगकी लो। उसे डिब्बेकी नली-पर फिट कर दो। दूसरे सिरेपर एक फनल लगा दो। सामनेके पृष्ठका चित्र देखो।

डिब्बेके ढक्कनके बीचोंबीच सीनेकी मशीन-की किसी पुरानी टूटी हुई सुईसे एक छेद बना लो। छेदके ऊपर कपड़े टांगनेके हैंगरके तारका बनाया हुआ एक चौखटा इस तरह लगाओ कि उसका कुछ भाग ढक्कनके ऊपर वर्गाकार निकला रहे। उसके अंदर काले अपारदर्शी कागजका एक आयताकार टुकड़ा इस तरह लगाओ कि ऊपरका हिस्सा तारके फ्रेमको, ढक्कनसे ऊपर निकलकर, चौकोर बना दे। काले कागजका नीचेका हिस्सा इतना बड़ा हो कि छेदको ढांक सके और रोशनी अंदर न जाने दे। कागज और फ्रेमको सामनेके पृष्ठके चित्रमें दिखाए अनुसार टेपके दो टुकड़ोंसे ढक्कनके साथ चिपका दो।

डिब्बेके पीछे भी ऐसे ही एक काले कागजका चौकोर टुकड़ा तारके फ्रेमकी सीधमें लगाओ। इस कागजके टुकड़ेके बीचोंबीच झांकनेके लिए

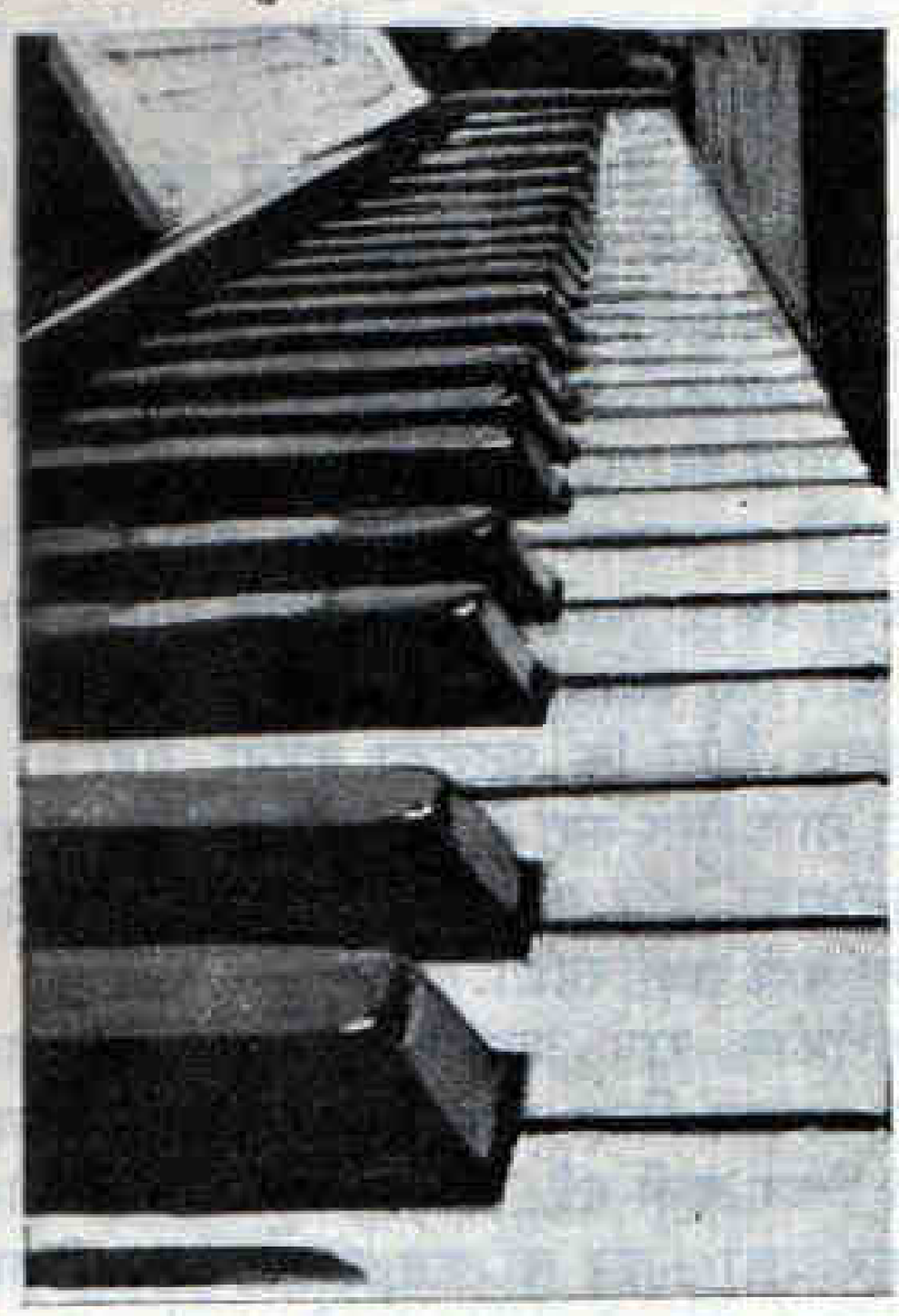

घरमें तैयार किए गए ऐसे ही फोटो-कैमरेसे लिया गया पियानोका चित्र

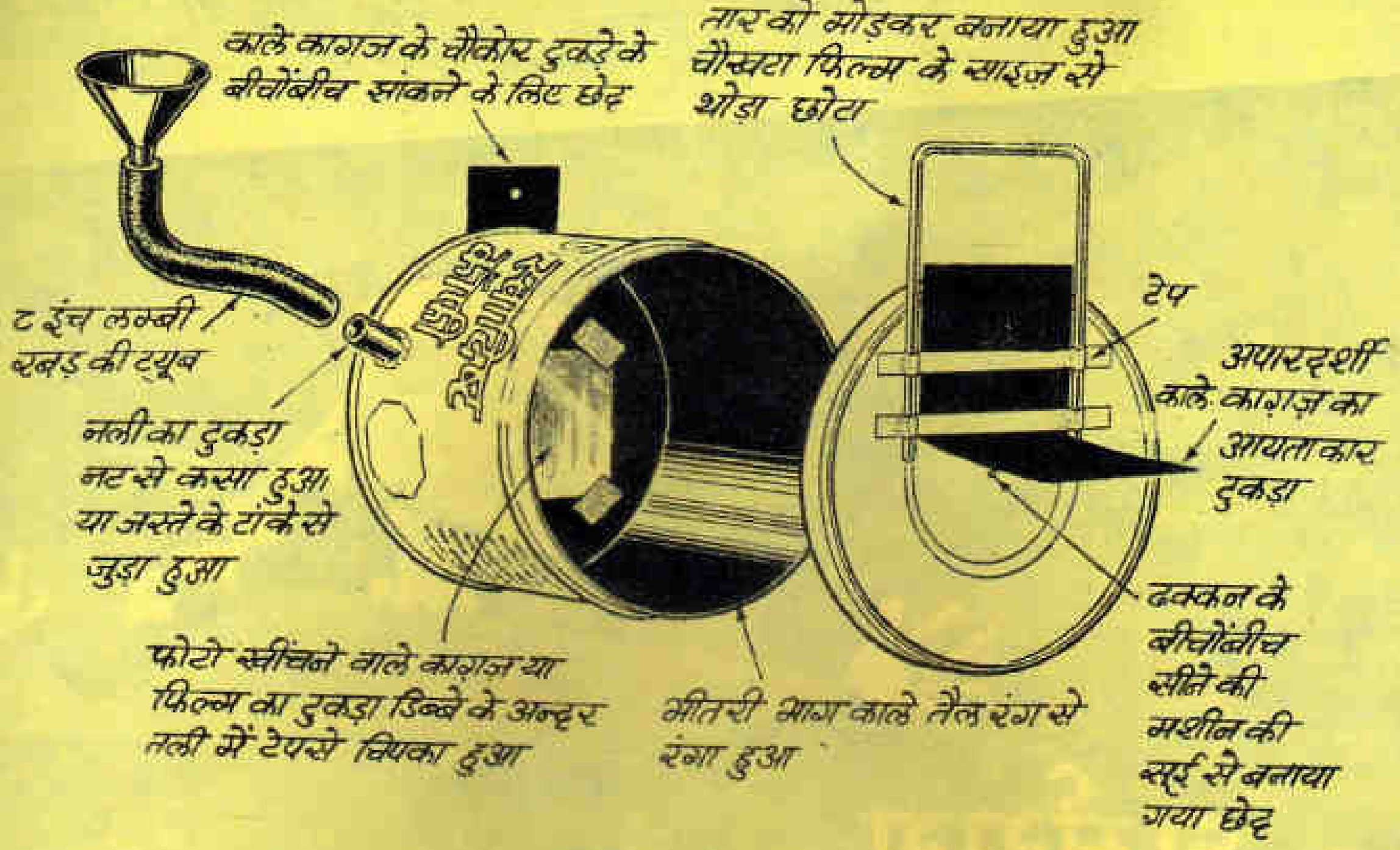

एक छेद भी बना लो।

डिब्बे तथा ढक्कनके भीतरी भागोंको काले तैल-रंगसे भली प्रकार रंग लो।

अब तुम्हारा कैमरा तैयार हो गया। इसे प्रयोग करनेके लिए तुम फोटो खींचने वाले कागज या फिल्मका एक सवा दो × सवा तीन इंचका टुकड़ा डिब्बेके अंदर तलीमें लगाओ। चारों कोनोंको चिपकनी टेपसे डिब्बेके साथ चिपका दो। यह काम अंधेरे कमरेमें—एकदम अंधेरेमें—करनेका अभ्यास करना चाहिए। फिल्म लगाओगे, तो एक-दो सैकिंड ही आगेवाले काले कागजको ऊपर करके कागजसे फिर छेदको ढांक दो। फिल्मके स्थानपर यदि फोटो खींचनेका कागज लगाओ, तो एक-दो मिनिट फोटो लेनेमें लगेंगे। किसी स्थिर वस्तुका फोटो ही कागजपर लेना ठीक रहेगा। उतनी देर कैमरा भी एक स्थान-पर स्थिर रखा रहना चाहिए। दोनोंमेंसे कोई भी चीज हिली कि फोटो खराब हुआ।

अपने मित्र या भाई-बहनका फोटो फिल्म लगाकर लो।

जब फोटो ले चुको, तो उसे धोनेके लिए 'डेवलपर' फनलसे भीतर डालो। फिर फनल ऊपर हाथसे पकड़कर 'डेवलपर' को अच्छी तरह हिलाओ। तरल 'डेवलपर' फोटोकी दुकान-पर बना बनाया भी मिलता है। वही फोटोग्राफर तुम्हें यह भी बता देगा कि कागज या फिल्म कितनी देर 'डेवलपर' से घुलनी चाहिए।

अब 'डेवलपर' को नली नीची करके निकाल दो। फिर पानी फनलके रास्ते डालकर अच्छी तरह फोटोको धोओ। फिर पानी निकालकर 'फिक्सर' ('हाइपो')से फोटोको धोओ। इसका भी समय निश्चित होता है। फिर फोटो पानीसे धोना होता है।

कैमरा बन जानेके बाद यदि तुम आगेका काम किसी खुश-मिजाज फोटोग्राफरसे सीख लो, तो अपने इस विचित्र और बिना पैसेके कैमरेसे इतने अच्छे फोटो खींचने लगोगे कि फोटोग्राफर भी चकित रह जाएंगे।

अगले मास हम और भी बढ़िया खिलौना बनानेकी विधि तुम्हें बताएंगे। ●

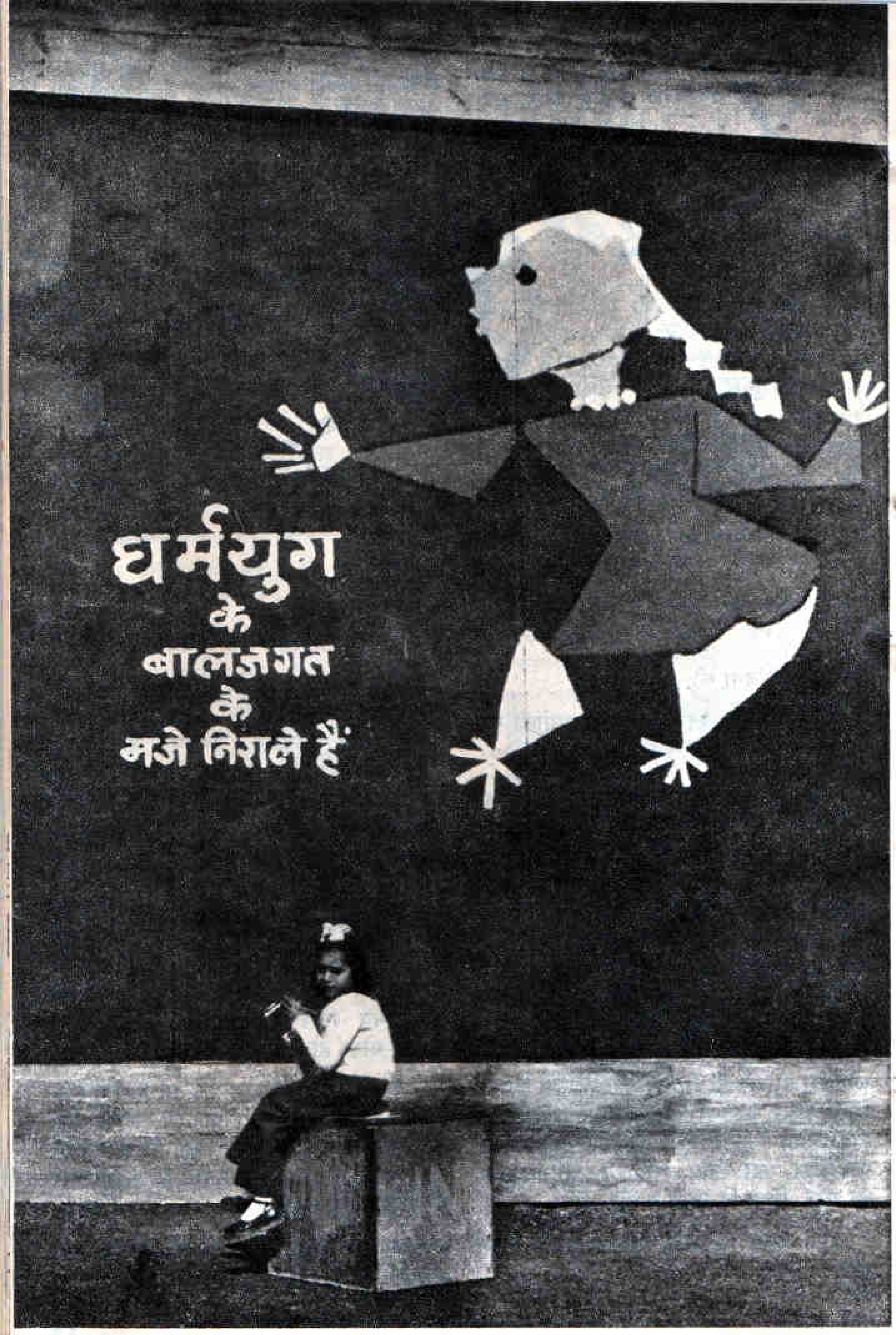
धर्मयुग
के
बालजगत
के
मजे निराले हैं

बोलने वाला बुत

(पृष्ठ ६५ से आगे)

और बता दीजिए कि वह चोर कौन है?"

राय जयसिंहने कहा, "इसके लिए हमारे पुतलेको कष्ट क्यों देते हो? यह तुम्हारा कर्त्तव्य है और तुम इसका पता बड़ी आसानीसे लगा सकते हो।"

"लगा तो सकता हूं, महाराज, मगर अपने कर्त्तव्यपालनमें मुझे सबसे पहले उस व्यक्तिको पकड़ना होता है, जो मालकी सूचना देता है। इसलिए अगर महाराज इस पुतलेको गिरफ्तार करनेकी आज्ञा दें, तो मैं स्वयं पता लगा लूंगा।"

राय जयसिंह हंसकर बोले, "अरे मूर्ख, हम इतने मामूलीसे कामके लिए इस पुतलेको कभी कष्ट नहीं देते। वह तो कहो, हम अपने इन अतिथियोंका मनोरंजन करना चाहते थे, इसलिए इस छोटी-सी बातका पता लगानेके लिए हमने अपने पुतलेको सोतेसे जगाया। इस पुतलेके द्वारा हम बड़ी बड़ी जटिल राजकीय समस्याओंको सरल बनाते हैं। हम अभी पूछकर बताते हैं कि वह कम्बख्त चोर कौन है—" और यह कहकर रायने फिर पुतलेकी बात सुननेका यत्न किया। राजसभा स्तब्ध होकर देखती रही।

राजा बोला, "कोतवाल, इस नर्त्तकीके घरसे साठ पगकी दूरीपर एक जुलाहा रहता है। वही चोर है। किंतु पुतलेने हमें कहा है कि विधाताकी इच्छा है कि उस जुलाहेको इसका कोई दंड न दिया जाए, क्योंकि उसने अपने दुष्कर्मोंका पश्चात्ताप मन ही मन बहुत भारी किया है। वह कुछ देर पहले उस मालको स्वयं नर्त्तकीको लौटानेका निश्चय कर चुका था।"

घड़ीभरमें जुलाहा पकड़ मंगाया गया। कोतवालने उसे डराया-धमकाया। बेचारा घिघिया गया और बोला कि वह माल स्वयं लौटा देगा। उसने मालको जमीनमें गाड़नेके स्थानका पता भी बताया। कोतवालने उसे छोड़ दिया।

इसके बाद राजसभामें पहलेकी ही भांति दैनिक कामकाज चलता रहा। पुतला वहांसे हटा दिया गया। राजसभाके अंदर पुतलेसे बने बैठे राजदूतोंको अंतमें राय जयसिंहने अपने पास बुलाया और उनसे बोला :

"राजदूतो, हम अतिथियोंका स्वागत करते हैं। आशा करते हैं कि जब हम आपके देश आएंगे, या हमारी प्रजामेंसे कोई आएगा, तो उसको भी वहां अतिथियोंकी तरह आदर-मान मिलेगा। मिलेगा न?"

"अवश्य, राय जयसिंह," राजदूतोंने समवेत स्वरमें कहा।

"तो अब प्रत्युत्तरमें हमारा संदेश अपने रायसे कहना—कि हम चाहते तो अपनी प्रजाको अपार कष्ट देकर उनकी 'रायकी पदवी' छीननेके लिए आजसे बहुत पहले कूच कर चुके होते। किंतु हमारे पुतलेसे हमें सलाह मिली कि इतनी दूर आक्रमण करने जाकर हमारी प्रजा त्राहि त्राहि कर उठेगी। हम विजय अवश्य प्राप्त करेंगे, किंतु हमारी आधी सेना कट-मरेगी! हमने अपना इरादा बदल दिया। लेकिन यही सलाह आज हम तुम्हारे रायको पहुंचाना चाहते हैं—यदि उन्हें शांतिसे रहना नहीं आता, तो अशांतिका मजा चखनेके लिए गुजरातकी ओर प्रस्थान करें। हम अपने पुतलेकी सहायतासे तीन दिनोंके भीतर भीतर उनकी सारी सेनाका विध्वंस कर देंगे।"

राजदूतोंने सिर हिलाया, मानो अपने रायकी ओरसे राय जयसिंहको आश्वासन दे रहे हों कि ऐसा न होगा। और वास्तवमें ऐसा नहीं हुआ।

उनके गुजरातसे कूच करते ही, एकांतमें, कोतवाल शहर राय जयसिंहकी सेवामें उपस्थित हुआ और हाथ जोड़कर नीची नजरें करता हुआ बोला, "देव, सेवक सेवासे अवकाश ग्रहण करना चाहता है।"

"क्यों?" आश्चर्यसे राय जयसिंहने पूछा।

"इसलिए, महाराज, कि आपका यह तुच्छ सेवक यदि बेजान पुतलोंमें विश्वास किया करता, तो कोतवालके पद तक न पहुंच पाता। वास्तवमें जुलाहा दोषी नहीं है! उसके पास आज ही कुछ राजकीय मुद्राएं मिली हैं—और नर्तकीने अपराधीके रूपमें जिस व्यक्तिको पहचाना है, उसे बंदी बनाना मेरी हैसियतसे कहीं ऊपरकी बात है।"

राय जयसिंह हंस पड़े और उसकी पीठ थपथपाते हुए बोले, "जाओ, हम तुम्हारा वेतन बढ़ाते हैं और पदवृद्धि करते हैं। अपने राजाको तो बख्शो!"

(रेखा मिश्र द्वारा प्रस्तुत)

रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५६ का परिणाम

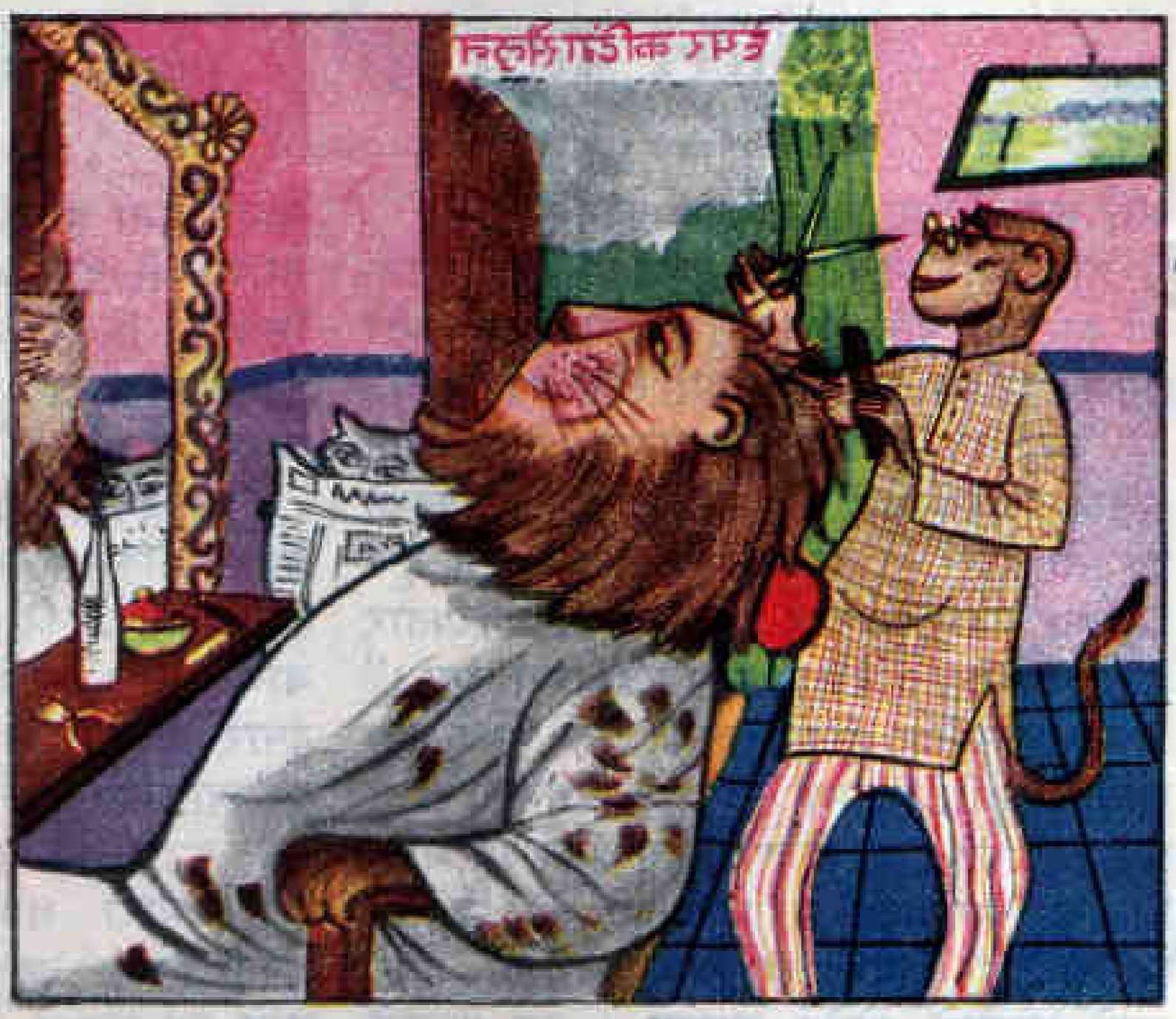

'पराग' की रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५६ में जिन तीन चित्रोंको पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमेंसे दोको यहां प्रकाशित किया जा रहा है। पुरस्कार-विजेताओंके नाम और पते इस प्रकार हैं :

- **रामगोपाल गुप्त, द्वारा गुरुप्रसाद गुप्त, गोल दरवाजा, चौक सर्राफा, लखनऊ (उ. प्र.)।**
- **सत्येन्द्रनाथ गुप्त, द्वारा श्री एस. एन. गुप्त, सहायक बन्दोबस्त अधिकारी, पो. पीरो, जिला शाहाबाद (बिहार)।**
- **सुबीरकुमार मुकर्जी, द्वारा श्री पी. सी. मुकर्जी, बर्न एण्ड कंपनी, जबलपुर (म. प्र.)।**

पहला चित्र है रामगोपाल गुप्तका। इन्होंने रंग भरनेमें जहां विशेष सफ़ाई और बारीकीका ध्यान रखा है, वहां रंगोंके चुनावमें भी विशेष सावधानी बरती है। साथ ही मूल चित्रमें अपनी कल्पनासे वह सब कुछ जोड़ा है, जो एक आधुनिक हज्जामकी दूकानके लिए जरूरी है।

दूसरे चित्रमें सत्येन्द्रनाथ गुप्तने मूल चित्रकी पृष्ठभूमिको साकार करनेके लिए अपनी कल्पनासे नई चीजें इस प्रकार शामिल की हैं कि चित्रमें अपेक्षित गहराई उभर आई है। यों उनका रंगोंका चुनाव बहुत अच्छा नहीं हुआ।

प्रयास करने वाले दूसरे बच्चोंमेंसे इन लोगोंके प्रयास संतोषजनक रहे : श्रीकांत गंगाधरराव आपटे, भोपाल; सुभाषचंद गुप्ता, लखा वठी; कुमारी रेखा गुप्ता, मेरठ; अरविन्द सरोज वाल, बरेली; कुमारी सुधा जैन, कुम्भराज (गुना); शत्रुघ्नलाल स्वर्णकार, दुर्ग; रवीन्द्र सावला, जबलपुर; रामगोपाल, मुण्डेट कलां; प्रह्लादप्रसाद हलवाई, मुहम्मदाबाद गोहना; महम्मद रफतुल्लाह शरिफ, हैदराबाद; कुमारी नीरजारानी, मेरठ; कुमारी अमिता अस्थाना, देवबन्द; कुसुमकुमारी श्रीवास्तव, बस्ती; गुरुमुखसिंह राजपूत, नागपुर; कुमारी नूपुर सिनहा, कानपुर; प्रदीपकुमार धवन, देहरादून तथा प्रदीप्तकुमार महान्ति, पुरी।

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-५९

बच्चो, नीचेका चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० मार्च तक भेज दो। हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्रकी पृष्ठभूमिको तुम अपनी कल्पनासे और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करनेकी तुम्हें स्वतंत्रता है। सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियोंको एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमेंसे दोके चित्रोंको छापा भी जाएगा। लेकिन रंग भरने वालोंकी उम्र १६ सालसे अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोगमें लाने चाहिएं। चित्रके नीचेवाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है। पूर्तियां भेजनेका पता : **संपादक 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५९), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१।**

यहां से काटो

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन
'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-५९

नाम और उम्र ----------

पूरा पता ----------

यहां से काटो

साहस !
मनोरंजन !
ज्ञान !

'इंद्रजाल कॉमिक्स' में महाबली बेताल के विस्मयजनक साहसपूर्ण कारनामों . . . . खूंख्वार जंगल-निवासियों के लोमहर्षक हथकंडों . . . . जादू-टोने की आश्चर्यजनक घटनाओं के अलावा हर अंक में ज्ञान-विज्ञान, व्यंग्य-विनोद, बोध-कथाओं का भी भरपूर खजाना रहता है।

'इंद्रजाल कॉमिक्स' का हर अंक पठनीय और संग्रहणीय है।

अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लीजिए।

इंद्रजाल कॉमिक्स

सभी न्यूज-एजेन्टों एवं पुस्तक-विक्रेताओं से हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, तमिल और बंगाली में प्राप्य।

टाइम्स आफ इंडिया प्रकाशन

मूल्य: ६० पैसे

हिरण्यकश्यप मर्डर केस

(पृष्ठ १७ से आगे)

चपरासी (पुकारकर) : मिस खप्परभरनी हाजिर हैं? (स्वतः) बाप रे!

(एक विकराल औरत गवाहके कटघरेमें आकर खड़ी हो जाती है।)

जज : आपका इस मुकदमेसे क्या संबंध है?

मिस खप्परभरनी : जी, मैं बेबी प्रह्लादकी आया हूं।

नारद : आया कि आयी?

(सब हंसते हैं)

जज (मेज पर हथौड़ी मारकर) : आर्डर! आर्डर! (नारदसे) गवाहको बोलने दें, उसे डिस्टर्ब न करें। हां तो, मिस खप्परभरनी, आप (विष्णुकी ओर इशारा करके) मुलजिमके बारेमें क्या जानती हैं?

मिस खप्परभरनी : हुजूर, यह अक्सर घंटों बेबी प्रह्लादसे अकेलेमें मिला करता था और पता नहीं उसे क्या क्या उल्टे-सीधे पाठ पढ़ाता था। इसने बेबीको इस कदर अपने बसमें कर लिया था कि बेबी रातको नींदमें अक्सर इसका नाम लेकर चौंक पड़ता था और ऊल-जलूल बड़बड़ाया करता था। इसकी संगतके कारण बेबी हाथसे बिल्कुल निकल गया था; यहां तक कि अपने डैडीका भी कहा बिल्कुल नहीं सुनता था, उल्टे बात बातमें उन्हें जवाब देता था और उनसे उलझता था।

सरकारी वकील : अदालत नोट करे कि इसने एक नाबालिग बच्चेको गुमराह किया और अपने डैडीके विरुद्ध विद्रोह करनेके लिए उकसाया। माई लार्ड, यह एक बहुत ही संगीन जुर्म है।

नारद : भगवद्-भक्तिको आप जुर्म कहते हैं! नारायण, नारायण!

सरकारी वकील : माई लार्ड, दूसरे गवाहके रूपमें मैं अब मास्टर कोड़ारामको हुजूरके सामने पेश करता हूं।

(मास्टर कोड़ाराम आते हैं। हाथमें स्कूल-मास्टरोंकी तरह एक मोटा-सा रूल है। आंखोंपर ऐनक चढ़ी है।)

जज : आप इस मुकदमेके बारेमें क्या जानते हैं?

कोड़ाराम : हुजूर, बहुत-कुछ। मैं दावेके साथ कहता हूं कि बेबी प्रह्लादके डैडीका मर्डर (विष्णुकी ओर संकेतकर) इसने ही किया है।

जज : क्या तुमने मुलजिमको मर्डर करते अपनी आंखोंसे देखा है?

कोड़ाराम : नहीं हुजूर।

जज : फिर तुम यह कैसे कह सकते हो?

कोड़ाराम : इसलिए कि बेबी प्रह्लाद मेरे ही 'सेक्शन' में पढ़ता था। हुजूर, यह अक्सर अपने सहपाठियोंको उकसाकर उनसे 'पेन-डाउन स्ट्राइक' करा देता। उनका नेतृत्वकर उनसे (विष्णु की ओर संकेतकर) इसके नामके नारे लगवाता। उन्हें मुलजिमके मुजरिमाना कारनामे सुनाता। हुजूर, इन्हीं बातोंसे मुझे पूरा यकीन है कि इसीने मर्डर किया होगा।

सरकारी वकील : माई लार्ड, मैं मुलजिमपर स्टूडेण्ट्समें 'पैनिक' फैलाने, उन्हें शासनके विरुद्ध बरगलाने, स्ट्राइक कराने, मीटिंगों और नारेबाजीमें टाइम गंवानेके लिए उकसानेका आरोप लगाता हूं।

नारद : प्रभुके कीर्तन और स्तुतिको आप नारेबाजी कहते हैं! नारायण, नारायण!

सरकारी वकील : इतना ही नहीं, माई लार्ड, इस शैतानकी आंतने साइंसके मामूली करिश्मे दिखाकर लोगोंकी भावनाओंके साथ खिलवाड़ किया।

नारद : यह झूठ है, माई लार्ड! मेरे अजीज दोस्त अपने इस आरोपके पक्षमें क्या कोई सबूत दे सकते हैं? मैं कहता हूं वह तो भगवानकी लीला थी।

सरकारी वकील : हां हां, क्यों नहीं? बिल्लीके बच्चोंके कुम्हारके जलते आंवेमेंसे जिंदा निकलनेवाली घटनाको ही ले लें। 'फायर प्रूफ सोल्यूशन' लगाकर बिल्लीके बच्चोंको इन जनाबने पहलेसे ही कुम्हारके आंवेमें छिपा छोड़ा था। फिर आगमेंसे उनका जिंदा निकल आना तो 'नेचुरल' ही था। इसमें 'लीला' कहांसे आ घुसी?

नारद : नारायण, नारायण! फिर तो आप प्रह्लादके आगमेंसे सही-सलामत निकल आने, लेकिन उसकी आंटी 'होलिका' के जल जाने वाली घटनाको भी शायद 'विज्ञानकी करामात' ही कहेंगे?

सरकारी वकील : 'एक्जैक्टली'। दोनों 'सिमिलर' केस हैं। सिर्फ इतना फर्क है कि बिल्लीवाले केसमें तो 'फायर-प्रूफ सोल्यूशन' 'यूज' किया गया था, लेकिन प्रह्लादके केसमें 'फायर-प्रूफ' कपड़े।

नारद : नारायण, नारायण! प्रभु, आज तो हम घोर नास्तिकोंमें आ फंसे।

सरकारी वकील : माई लार्ड, अब मैं किंग हिरण्यकश्यपके चीफ महावत मि. हस्तीदमनको गवाहके रूपमें पेश करूंगा।

(एक लंबा-चौड़ा आदमी, हाथ भरका अंकुश लिये, आकर गवाहके कटघरेमें खड़ा हो जाता है।)

जज : मि. हस्तीदमन, तुम मुलजिमको जानते हो?

हस्तीदमन : हुजूर, आप जाननेकी बात कहते हैं, मैं इसका सताया हुआ हूं।

जज : पहेलियां न बुझाओ, पूरा किस्सा बयान करो।

हस्तीदमन : हुजूर, जब राजकुमार प्रह्लाद राज्यके खिलाफ खुल्लमखुल्ला विद्रोहपर उतर आया और महाराजके लाख समझाने-बुझाने और तरह तरहकी धमकियां देनेके बावजूद भी उसपर कोई असर नहीं हुआ, तो महाराजने सोचा कि ऐसी कुलकलंकी और देशद्रोही

औलादसे तो बेऔलाद होना बेहतर। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। सो, उन्होंने मुझे बुलाकर हुक्म दिया कि सुबह होते ही मैं उस गद्दारको खूनी हाथीके आगे डाल दूं।

जज : बेरी इंटेरेस्टिंग केस! फिर क्या हुआ, मि. एच. डी.?

हस्तीदमन : हुजूर, मैं तो ड्यूटी निपटाकर रातमें घर चला गया। पता नहीं (**विष्णुकी ओर इशारा करके**), इसने मेरे पीछे रातोंरात क्या गुल खिलाया और पहरेदारोंको क्या सुंघा दिया कि जब मैं 'मार्निंग' में सरकारी हुक्मकी तामील करनेके लिए ड्यूटी पर पहुंचा, तो पाया कि पहरेदार सब बेहोश हैं और खूनी हाथीका रंगढंग भी बदला हुआ है।

जज : तुम्हारा मतलब है इसने खूनी हाथी गायब करके उसकी जगह पालतू हाथी ला खड़ा किया?

हस्तीदमन : नहीं, हुजूर, हाथी तो वही था, लेकिन न जाने इसने उसे क्या सिखा दिया था कि जो हाथी एक रात पहले तक आदमीकी गंध पाते ही खूंखार हो उठता था और काबूसे बिल्कुल बाहर हो जाता था, वह एक ही रातमें इतना बदल गया था कि जब मैंने बेबी प्रह्लादको उसके आगे डाला, तो उसने उसे पैरोंके नीचे न कुचलकर, सूंडसे उठाकर अपने मस्तकपर बैठा लिया। हुजूर, स्वर्गीय महाराजने समझा कि मैं मुजरिमके साथ मिला हुआ हूं। बस, उन्होंने मुझे उसी समय 'नोटिस' दे दिया। हुजूर, मैं तो बेमौत मारा गया। 'गवर्नमेण्ट सर्विस' हाथसे गई सो गई, तीन महीनेकी जेल अलग काटनी पड़ी। और यह सब आफत आई (**विष्णुकी ओर इशारा करके**) इसके कारण!

सरकारी वकील : माई लार्ड, अब मैं अपने अगले गवाह, किंग हिरण्यकश्यपके हैड जल्लाद चरमसुखको पेश करता हूं।

(**चरमसुख उपस्थित होता है**)

जज : तुम इस मुकदमेपर क्या रोशनी डाल सकते हो?

चरमसुख : हुजूर, जब इसकी साजिशसे प्रह्लाद खूनी हाथीसे भी बच गया, तो मरहूम बादशाहने मुझे तलब किया और हुक्म दिया कि उस आफतके परकाला प्रह्लादको मैं पहाड़से गिराकर मार डालूं।

जज : तो तुमने राजकीय आदेशका पालन किया?

चरमसुख : क्यों न करता, सरकार? जिसका नमक खाता हूं, उसका हुक्म भी बजाता हूं। लेकिन, हुजूर, मैं तो ताज्जुबमें रह गया कि मैंने इतने ऊंचेसे उस संपोलेको गिराया, फिर भी उसके बदनपर कहीं खरोंच तक नहीं आई!

जज (आश्चर्यसे) : ऐसा कैसे हो सकता है! नामुमकिन! जरूर इसमें तुम्हारा भी हाथ रहा होगा, मि. चरमसुख?

चरमसुख : नहीं, हुजूर, मैं तो बेकसूर हूं। सब शरारत (**विष्णुकी ओर इशारा करके**) इसीकी है। इसने जासूसोंके जरिए पूरी टोह पा ली और पहलेसे ही अपने एजेंटोंकी मददसे पहाड़के नीचे 'डनलपिलो' के गद्दे बिछवा दिए।

सरकारी वकील : माई लार्ड, मुलजिमके अपराधोंकी सूचीमें यह एक जुर्म और बढ़ा। और, हुजूर, मुझे पता चला है कि जिस 'डीलर' से इसने 'डनलपिलो' के गद्दे किरायेपर मंगाए थे, वह भी अपने भुगतानके लिए इसपर नालिश करने वाला है।

नारद : नारायण, नारायण!

जज (सरकारी वकीलसे) : हमने इन सभी गवाहोंके बयान सुने। इन बयानोंसे यह तो साबित हो गया कि मुलजिम पक्का षड्यंत्रकारी और गिरोहबंद है। लेकिन इसके सबसे संगीन जुर्म यानी हिरण्यकश्यपके मर्डरका चश्मदीद कोई गवाह अभी तक पेश नहीं हुआ।

सरकारी वकील : माई लार्ड, अब मैं आखिरी गवाह साक्ष्यजीवीको पेश करूंगा। वह इस मर्डरका चश्मदीद गवाह है।

जज : साक्ष्यजीवीको हाजिर किया जाए।

चपरासी (आवाज देकर) : छाछजीवी हाजिर है?

(**साक्ष्यजीवी आता है**)

जज (साक्ष्यजीवीसे) : तुमने मुलजिमको मर्डर करते अपनी आंखोंसे देखा है?

साक्ष्यजीवी : हां, हुजूर, अभी तक वह भयानक दृश्य जैसे मेरी आंखोंके आगे घूम रहा है।

जज : पूरा किस्सा सही सही बयान करो।

साक्ष्यजीवी : हुजूर, मैंने देखा कि बेबी प्रह्लाद खंभेसे बंधा हुआ था और महाराज नंगी तलवार हाथमें लिये

प्रति मास दो नये पुरस्कार

बच्चो, इस अंककी कहानियां ध्यानसे पढ़ो और हमें १५ मार्च तक लिखो कि अपनी पसंदके विचारसे कौन कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरोंपर रखोगे। तुम्हें इस प्रकार सभी कहानियोंपर अपनी पसंद बतानी है। इसमें एकांकी और धारावाही उपन्यास शामिल नहीं होंगे, केवल वे ही कहानियां शामिल होंगी, जिनका उल्लेख 'अतापता' में 'मजेदार कहानियां' के अंतर्गत आया है। जिन बच्चोंकी पसंदका क्रम बहुमतसे मिलेगा, 'पराग' में उन सबके नाम छापे जाएंगे और यदि वे दोसे अधिक हुए, तो लाटरी द्वारा चुनकर दो बच्चोंको हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कारमें भेजेंगे। अपनी पसंद एकदम अलग कार्डपर लिखो — 'अटपटे चटपटे' आदिके कार्डोंपर नहीं। अपनी उम्र भी अवश्य लिखो। पता यह लिखो—**संपादक, 'पराग' (हमारी पसंद), पो. आ. बाक्स नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१।**

उनसे कह रहे थे कि 'आज तू मेरे हाथसे नहीं बच सकेगा। बुला ले अपने हिमायतीको!'

जज : लेकिन तुम उस समय राजमहलमें क्या करने गए थे?

साक्ष्यजीवी : हुजूर, मैं नगर-कमेटीके बिजली-विभागमें काम करता हूं। किसके महल-सेक्रेटरीने रिपोर्ट की थी कि राजमहलकी बिजली फेल हो गई है, मैं वहां उसी सिलसिलेमें गया था।

जज : दिनके समय गए कि रातके?

साक्ष्यजीवी : हुजूर, उस समय न दिन था न रात।

जज : यह क्या मजाक है!

सरकारी वकील : माई लार्ड, गवाह ठीक ही कहता है। पुलिसकी भी रिपोर्ट है कि जिस समय मर्डर हुआ, वह झुटपुटेका टाइम था।

जज : हूं... (**साक्ष्यजीवीसे**) आगे बयान करो।

साक्ष्यजीवी : हुजूर, महाराजका इतना कहना ही था कि बड़े जोरका धमाका हुआ। ऐसा लगा जैसे खंभा फट गया हो और चारों ओर धुआं ही धुआं भर गया। मानो पुलिसने अश्रुगैस छोड़ दी हो। मेरी तो आंखें बंद हो गईं, हुजूर। जब धुआं कुछ हल्का हुआ, तो मैंने देखा...

जज : क्या देखा तुमने?

साक्ष्यजीवी : मैंने देखा, हुजूर, कि मुलजिम महलकी देहरीपर बैठा हिरण्यकश्यपको अपनी जांघोंपर रखे उसका पेट चाक कर रहा था।

जज : उसके हाथमें क्या हथियार था?

साक्ष्यजीवी : हुजूर, जिस तरह शिवाजीने बघनखेसे अफजल खांकी आंतें खींच ली थीं, उसी तरहकी कोई चीज इसके पंजोंमें थी।

सरकारी वकील : माई लार्ड, साक्ष्यजीवीके बयानसे साफ जाहिर है कि मुलजिमने ही हिरण्यकश्यपका मर्डर किया है। मैं अदालतसे अपील करता हूं कि 'इंडियन पैनल कोड' की दफा ३०२ के अधीन मुलजिमको फांसीकी सजा दी जाए।

नारद : नारायण, नारायण! प्रभु, इस पापीको तो घोर नरकमें डालना।

जज (मेजपर हथौड़ी मारकर) : आर्डर! आर्डर! (**विष्णुसे**) तुम्हें अपनी सफाईमें कुछ कहना है?

नारद : नारायण, नारायण! कहना बहुत कुछ है: सरकारी गवाहोंके बयानसे यह साफ जाहिर है कि मर्डर न दिनमें हुआ न रातको; न महलके अंदर हुआ न बाहर; न आदमीने किया न जानवरने। फिर, आखिरी गवाहका नाम ही यह जाहिर करता है कि इसकी जीविका ही झूठी गवाहियां देना है। इसके अलावा, माई लार्ड, जिस हथियारसे मार्डर हुआ बताया जाता है वह भी पुलिसने बरामद नहीं किया। और सबसे आखिरी बात यह है कि जिस हस्तीके खिलाफ यह इलजाम लगाया गया है वह इंसानी इंसाफसे परे है। बस, मुझे यही कहना है।

जज (सरकारी वकीलसे) : आपको कुछ कहना है?

सरकारी वकील (उछलकर) : माई लार्ड, बचाव पक्षके वकीलने अपनी बहससे यह साफ कर दिया है कि मर्डर करनेके लिए मुलजिमने जो ऐहतियातें बरती थीं वे कितनी पोच थीं। मर्डर किसी भी वेशमें किया गया हो, मुलजिमने ही किया है यह बात गवाहोंने साफ कर दी है। रही मेरे आखिरी गवाहके नामकी बात, सो कूड़ामल धनपति होते हैं, धनीराम कंगाल होते हैं, ज्ञानप्रकाश कोरे बुद्धू होते हैं, आदि आदि। जहां तक मुलजिमकी ऊंची हस्तीका सवाल है—यह सिर्फ बहाना है। बस, मुझे यही कहना है।

जज : फैसला हो गया—गलेमें रस्सीका फंदा डालकर लटकाए रखा जाए कि जब तक दम न निकल जाए!

नारदजी : नारायण, नारायण!

(**भगवान विष्णु खटाकसे शेरका सिर अपने कंधोंसे उतारकर फेंक देते हैं। एक लड़का उनकी जगह लाल आंखें किए खड़ा दिखाई देता है।**)

लड़का (रोनी-सी आवाजमें) : पर मेरा दम तो अभी निकला जा रहा है। मुझसे तो कहा गया था कि बस पांच मिनिट खड़े रहना है। यह तो अदालतकी काररवाई क्या हो गई, थर्ड वर्ल्ड वार हो गई। जाओ, मैं नहीं बनता भगवान-वगवान!

(**कटघरेसे निकलकर भाग लेता है। सब खड़े होकर चिल्लाते हैं: 'अरे पकड़ो पकड़ो।' नारदजीकी 'नारायण, नारायण' भी सुनाई पड़ती है।**)

(**परदा गिरता है।**) ●

पूजा का मौसम—

"... लगता है बिल्लूकी परीक्षाएं शुरू होने वाली हैं!"

सब 'पराग' पर लपके

नाच रहे थे हाथी राजा,
गदहा गाता राग;
टिकू बंदर तभी कहीं से,
लाया छीन 'पराग'!

लोमड़ काका ले काकी को,
तभी वहां आ टपके;
काम छोड़कर अपना अपना
सब 'पराग'पर लपके!

—उषा गुप्ता

पिछले कई वर्षों से 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है। क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है जितना समझा जाता है, इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

नन्हे-मुन्नों के लिए
नए शिशु गीत

www.kissekahani.com

गुणी झनकूमल

झनकूमलजी गुणी बड़े हैं,
नक्शे इनके देखो;
लिखें छटंकी, पढ़ें सवैया,
बंदर जैसी खो-खो!

हवा साल भर गलियों, सड़कों,
चौराहों की खाते;
और परीक्षा की कापी में,
गाने हैं लिख आते!

—रवीन्द्र शलभ

चित्त गिरे चौखाने

गधा कहीं से ले आए थे,
एक दिन चाचा मेरे;
बिस्कुट के संग चाय पिलाते,
उसको सांझ-सवेरे!

कपड़े औ' जूते पहनाकर,
उस को खूब सजाया;
मोटी मोटी आंखों पर भी,
चश्मा एक लगाया!

पर जब पुस्तक दे हाथों में,
उसको लगे पढ़ाने;
मारी एक दुलत्ती, चाचा
चित्त गिरे चौखाने!

—पंकज गोस्वामी

www.kissekahani.com

मूंछों को झुका लो

लंगड़ लड़ा लो,
आधी नाक कटा लो!

काती अपने हाथ से,
मैं ने रेशम डोरी,
लाए पर्वत बांधकर
ऐसी गांठ मरोड़ी!

झट से पटखी खाएगा
जो भी टांग फंसाएगा!

मूंछों को झुका लो,
अपनी हार संभालो!
लंगड़ लड़ा लो,
आधी नाक कटा लो!

—धीरेंद्र काश्यप

चतुर कुतुर और पंजासिंह

(पृष्ठ २१ से आगे)

में तुम भी साथ रहते मगर शायद पंजासिंह कुछ ज्यादा घबड़ा गए हैं। नहीं...नहीं...बिगड़नेकी कोई बात नहीं है। अपने ही आदमी हैं। तुम चलो, मैं घंटे भरमें तुम्हारे बंगले पहुंच जाऊंगा। हां, अगर देर-सवेर हो तो इधरका एक चक्कर लगा लेना। कुछ भी हो, एक खतरनाक मेजबानका मेहमान तो हूं ही इस समय...।" और उसने टेप-रिकार्डर बंद करके बिल्लेको पुकारा—"भाई पंजासिंहजी! कहां गायब हो गए आप?"

कुत्तेका भौंकना बंद पाकर पंजासिंह डरता डरता वापस आया और चतुर कुतुरकी कुर्सीके पास जमीनपर बैठकर हाथ जोड़ता हुआ बोला, "आप मेरे बारेमें ऐसा क्यों सोचते हैं? यह आपका ही घर है और मैं आपका सेवक हूं। अगर भूलसे कोई तकलीफ हो गई हो, तो मुझे माफ करिए। और देखिए, आज होली है, मैंने दूध गरम होनेके लिए चढ़ा दिया है और गेहूंकी बालियां भून दी हैं, सो आप खाकर जाएं।"

चतुर कुतुर मुंह बनाकर बोला, "मित्र, ज्यादा तो कुछ ले नहीं सकूंगा। शेरेके साथ छककर जलपान करके चला था। वैसे तुम कहोगे, तो थोड़ा-सा दूध ले लूंगा।"

पंजासिंहने खुशामदके भावसे खिसियाई हंसी हंसकर कहा, "आप तो बड़े मजाकियां हैं, जी! मैंने आपकी बहुत तारीफ सुन रखी थी। बहुत दिनोंसे मिलना चाह रहा था,आज सौभाग्यसे भेंट हो पाई।"

इस तरह होलीका सारा दिन चतुर कुतुरने पंजासिंहके साथ आरामसे बिताया। पंजासिंह हर तरहसे दौड़ दौड़कर उसकी आवभगत करता रहा, यहां तक कि चलते समय अपनी पीठपर लादकर एक बोरा गेहूंकी बालें भी चतुरकुतुरके बिलके पास तक पहुंचा गया। ●

समाचार पंजीयन (केन्द्रीय) नियम १९५६ के ८ वें नियम (संशोधित) से संबंधित प्रेस और पुस्तक पंजीयन अधिनियम की धारा १९—डी की उपधारा (बी) के अन्तर्गत अपेक्षित बम्बई के 'पराग' नामक समाचारपत्र के स्वामित्व तथा अन्य बातों का ब्योरा :

प्रपत्र चतुर्थ (देखो नियम ८)

१—प्रकाशनका स्थान :	दि टाइम्स आफ इण्डिया प्रेस, दि टाइम्स आफ इण्डिया बिल्डिंग, डा. दादाभाई नौरोजी रोड, बम्बई—१।
२—प्रकाशनकी आवर्तिता :	मासिक।
३—मुद्रकका नाम :	श्री प्यारेलाल साहू, स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कं. लिमिटेड के लिए।
राष्ट्रीयता :	भारतीय।
पता :	रहमत मंजिल, दूसरा महला, फ्लैट नं. ८, ७५ वीर नरीमान रोड, बम्बई—१।
४—प्रकाशकका नाम :	श्री प्यारेलाल साहू, स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कं. लिमिटेड के लिए।
राष्ट्रीयता :	भारतीय।
पता :	रहमत मंजिल, दूसरा महला, फ्लैट नं. ८, ७५ वीर नरीमान रोड, बम्बई—१।
५—संपादकका नाम :	श्री आनंदप्रकाश जैन।
राष्ट्रीयता :	भारतीय।
पता :	फ्लैट नं. १०, न ल्ला बिल्डिंग, कंवारी कालोनी, २१ वीं रोड, चेम्बूर, बम्बई—७१।

शेयर होल्डर्स

६—उन व्यक्तियोंके नाम और पते जो समाचारपत्रके स्वामी और भागीदार हैं या कुल पूंजीके एक प्रतिशतसे अधिकके शेयरहोल्डर हैं :	१—भारत निधि लिमिटेड, ११, क्लाइव रो, कलकत्ता—१। २—मेसर्स साहू जैन लिमिटेड, ११, क्लाइव रो, कलकत्ता—१। ३—दि जयपुर उद्योग लिमिटेड, सवाई माधोपुर (राजस्थान)। ४—मेसर्स सोन वैली पोर्टलैण्ड सीमेंट कम्पनी लिमिटेड, ११, क्लाइव रो, कलकत्ता—१। ५—इलाहाबाद बैंक नामिनीज लिमिटेड, १४, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता—१। ६—श्री अशोक कुमार जैन, ११, क्लाइव रो, कलकत्ता—१। ७—अशोक विनियोग लिमिटेड, १ बी, ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

मैं, प्यारेलाल साहू, घोषित करता हूं कि मेरी जानकारीके अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

प्यारेलाल साहू
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

तारीख : १ मार्च १९६७

समाचारों और विचारों के सार के लिये – राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधि से साक्षातकार के लिये

दिनमान

सर्वोत्तम हिन्दी समाचार साप्ताहिक

हिन्दी का एकमात्र ऐसा साप्ताहिक जिसमें देश - विदेश की राजनैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक हलचल की पूरी जानकारी मिलती है। समाचारों और विचारों का सटीक सार जाने - माने लेखकों और पत्रकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

दिनमान साप्ताहिक हर रुचि के व्यक्ति के लिए, परिवार के हर सदस्य के लिए।

मूल्य ५० पैसे

टाइम्स आफ इन्डिया प्रकाशन
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग,
नयी दिल्ली

JWTBC-4084 (1)

बनेट कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, न्यासधारी के लिए प्यारेलाल साहू द्वारा टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रेस बम्बई में मुद्रित और प्रकाशित एवं अनंतकुमार जैन द्वारा संपादित; पो. आ. बाक्स २०७, दिल्ली ऑफिस ७, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली–१: कलकत्ता ऑफिस : १३ / १ और १३ / २, गवर्नमेण्ट प्लेस ईस्ट कलकत्ता ऑफिस: ३, अलिपुर स्ट्रीट, डब्ल्यू १

REGD. No. MH 468

www.kissekahani.com

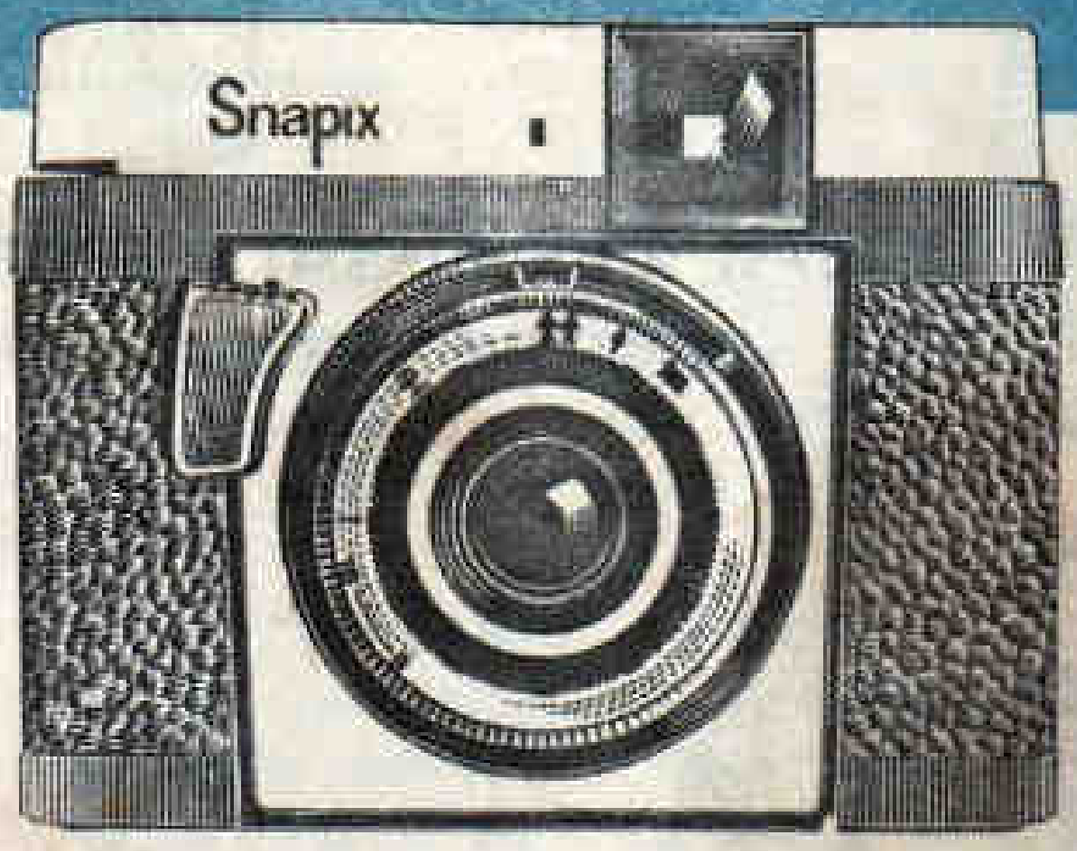

किसी भी समय कहीं भी फोटोग्राफी एक अच्छा मनोरंजन है, विशेष कर अच्छा व्यवसायी कैमरा पास होने पर।

अच्छी फोटोग्राफी के लिए **स्नैपिक्स** एक श्रेष्ठ कैमरा है। एक ही फिल्म-रोल से आप रंगीन या सादे बारह सुन्दर और कलात्मक चित्र प्राप्त कर सकते हैं।

समुद्रतट, स्कूल, घर या पार्टी में **स्नैपिक्स** आपका एक आदर्श साथी है।

यह प्राप्य है आपके निकट के फोटो-डीलर से या सीधे:

पटेल इंडिया *प्रायवेट लिमिटेड*, बम्बई • कलकत्ता • नई दिल्ली • मद्रास

कि सोटेसे एक एककी खबर ले लें, लेकिन फिर सोचा बाल मंडलीके साथ रोजका मनोरंजन जाता रहेगा।

मुन्नाने भंगेड़ी चाचाके पास सरककर कहा, "लेकिन, चाचा, आप भंग पीते ही क्यों हैं?"

"पीते ही क्यों हैं, अबे वाह बछियाके ताऊ! हम भंग पीते हैं या शंकर भोलेका प्रसाद लेते हैं। अरे बेटा—जिसने न पी हो कभी छानकर भंग, उसे क्या पता, कैसी होती है भंगकी तरंग?"

"लेकिन, भंगेड़ी चाचा, शंकर भगवान आपकी तरह कहां यह इतना सारा तामझाम फैलाते हैं?" मुन्नाने फिर मटककर कहा।

"अरे वाह रे मुन्ना! तेरे पेटमें तो दाढ़ी लगती है। डेढ़ बिलांदका छोकरा और बड़े-बूढ़ों जैसी बातें!" भंगेड़ी चाचाने तमककर कहा। "अरे चुन्ना, वह डब्बूका बच्चा अभी तक दूध लाया या नहीं?"

"आया, चाचा,"—कहकर डब्बूने दूरसे आवाज लगाई और दूधका लोटा चाचाके सामने रखकर कहा, "चाचा, असली दूध महंगा मिल रहा था, मैं मिलावट वाला ले आया!"

"लेकिन क्यों?" भंगेड़ी चाचा बमके।

"आपको भंगमें दूधकी रंगत ही तो लानी है। असलीमें भी मिलावट थी। सोचा फिर मिलावटवाला ही ले चलूं।"

"बचतके बच्चे, असली दूध न डालनेसे खुश्की होगी, तो क्या तेरा बाप मुझे मलाई चटाएगा?"

मुन्ना फिर भी न माना—"चाचा, जब भंगसे खुश्की होती है, तो फिर पीते ही क्यों हो? कितना समय बरबाद होता है, पैसा बिगड़ता है और..."

"और कुछ बकेगा, तो मुंहपर झापड़ लगा दूंगा..." कहते हुए चाचा बिगड़ खड़े हुए। "अबे बंदर, भंगकी तरंगमें मैं कितना काम करता हूं, तुझे क्या पता?"

भंगेड़ी चाचा मुन्नाके सोटा कसने ही वाले थे कि उसने शक्करका डिब्बा उनके सामने सरका दिया, जो खाली था। उसे देखकर चाचा चिल्ला पड़े—"अरे तुम्हारा सत्यानाश हो, तुम सबने आज मेरे रंगमें भंग कर दिया।"

"नहीं, चाचा," मुन्नाने हंसीको दबाकर कहा, "भंगमें रंग कर दिया। आजकल शक्कर पूजा तकके लिए मिलती नहीं और आप काले बाजारके भाव शक्कर खरीदकर भंग घोटते हैं। नाजके लाले पड़े हैं, और आप भंग पीकर चौगुना खाकर खर्राटे भरते हैं। आखिर किसलिए? जब आप बिना दूध, बादाम, शक्करके गोला भी जमा लेते हैं, फिर यह चक्कर क्यों? इतना समय किसी और काममें लगाते, तो सूनी कोठरियामें अपने आप चपाती क्यों थोपते? चाचीको गांवमें बनवास दे रखा है और आप यहां भंग छानते हैं। आपकी मर्जी, चाचा।"

"नहीं, बेटा मुन्ना, तुमने मेरी आंखें खोल दीं। मेरा नशा उतर गया। वाकई मैंने जीवनके अनमोल बरस बरबाद कर दिए। लेकिन अब न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। मैं इस कुंडी और सोटेको ही नष्ट किए देता हूं।"

मुन्नाने भंगेड़ी चाचाके हाथोंको पकड़ते हुए कहा, "नहीं, चाचा, कुंडी-सोटा नष्ट नहीं होते। उनमें अब भंगके बदले चटनी पिसा करेगी।" ●

'हमारी पसंद' प्रतियोगिताका परिणाम

'हमारी पसंद प्रतियोगिता' के अंतर्गत 'पराग' के जनवरी अंकमें प्रकाशित कहानियोंके बारेमें हमने जानना चाहा था कि अपनी पसंदके विचारसे कौन कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरोंपर रखोगे। हमें खुशी है कि इस प्रतियोगितामें लगभग १२५० बच्चोंने भाग लिया। जिन बच्चोंकी पसंदका क्रम श्रेष्ठ कहानीके बहुमतसे मेल खाता हुआ निकला उनकी संख्या १२ है। इसलिए पुरस्कारके अधिकारी दो बच्चोंका चुनाव लाटरी द्वारा किया गया, जिनके नाम और पते इस प्रकार हैं:

- **कमलकुमार जैन, द्वारा डॉ. आर. के. जैन, एम. काम., पी.एच. डी., ७६, शंकरनगर, नागपुर।**
- **विजयकुमार गुप्ता, स्टूडेन्ट्स टाईपराइटिंग इंस्टीट्यूट, पीर गेट, नीम रोड, भोपाल (म. प्र.)।**

बाकी जिनके हल सही निकले उनके नाम हैं: अमरचन्द्र अग्रवाल, विजयनगर; कु. हेमांगी घोलकीआ, अहमदाबाद; वीरेन्द्र नाथ श्रीवास्तव, दुर्गापुर-४; परमेश्वरकुमार महतो, भिलाई; अनिलकुमार, मैनपुरी; यशवंतकुमार सचदेव, मुजफ्फरपुर; गुरदीप सिंह, भगवानीपुर खुर्द; रोहित जैन 'मयंक', दिल्ली; विभा, कटनी; अंशु सूद, नई दिल्ली-१४।

सही हल वाली कहानियोंका क्रम इस प्रकार है:

१- नकली साला, २- चुन्नूकी डाक टिकट, ३- बुढ़ियाकी होशियारी, ४- कंजूसका गरम दान, ५- अनोखी दुनिया।

—संपादक